



अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 7 ■ 1-15 फरवरी, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

□ सदस्यता शुल्क :

- ◆ एक प्रति : बारह रु.
- ◆ वार्षिक : 300 रु.
- ◆ त्रैवार्षिक : 700 रु.
- ◆ दस वर्षीय : 2000 रु.

□ विज्ञापन सहयोग :

- ◆ द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

□ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति

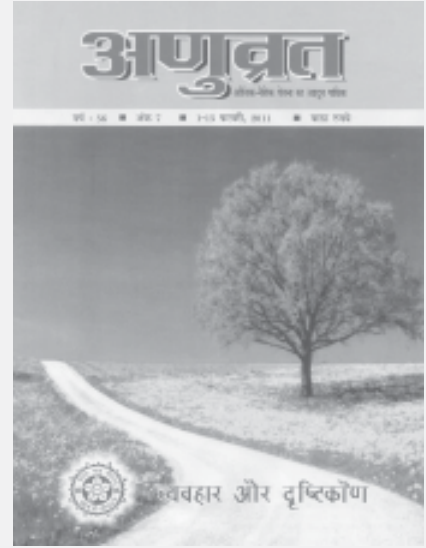
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली-110002

दूरभाष : (011) 23233345

फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

Website : anuvratinfo.org



◆ व्यवहार और दृष्टिकोण	आचार्य महाप्रज्ञ	3
◆ बुढ़ापे को कैसे जीएं?	आचार्य महाश्रमण	5
◆ नैतिक पर्यावरण का संरक्षण	डॉ. वीरबाला छाजेड़	7
◆ आखिरकार कहां हैं लोकप्रिय नेता	आशीष वशिष्ठ	8
◆ हृदय-परिवर्तन से ही भ्रष्टाचार उन्मूलन	मर्यादा कुमार कोठारी	10
◆ महिलाओं की नशाविरोधी जंग	डॉ. रामसिंह यादव	13
◆ पीढ़ी का अन्तर	शिवचरण मंत्री	15
◆ पिछड़ेपन को पछाड़ चमके खिलाड़ी	नरेन्द्र देवांगन	16
◆ बहुत काम की चीज है हिन्दी	जसविंदर शर्मा	18
◆ गण की उपेक्षा क्यों?	प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा	20
◆ सात्विक भोजन है शाकाहार	डॉ. कुसुम लूणिया	22
◆ मधुमेह और प्रेक्षा चिकित्सा :1:	मुनि किशनलाल	24
◆ अनैतिकता की धूप - अणुव्रत की छतरी	प्रमोद घोड़ावत	27
◆ महिलाएं : विवेक चेतना को जागृत करें	कनक बरमेचा	29
◆ देशभक्ति के संस्कार :2:	कैलाश वर्मा	30

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	12
◆ सुखियां	14
◆ लघुकथा / बालकथा	17, 26
◆ कविता	28
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की	32
◆ अणुव्रत आंदोलन	33-39
◆ कृति	40

अधिकारी बनें जनता के सेवक

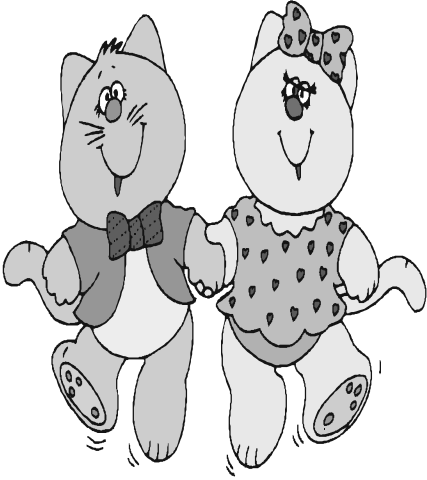
भारतीय प्रशासकीय सेवा (आईएएस) के अधिकारियों की प्रशासनिक कार्यशैली के इतिहास में यह दुर्लभ प्रसंग है जब एक जिला कलक्टर के स्थानांतरण हो जाने पर जनता तबादला निरस्त करवाने के लिए सड़क पर उतर आई और जिला मुख्यालय में अघोषित बंद रहा। **राजस्थान के नागौर के जिला कलक्टर डॉ. समित शर्मा के साथ ऐसा ही हुआ। मात्र पन्द्रह माह के कार्यकाल में डॉ. समित शर्मा ने नागौर जिले में जो कल्याणकारी कार्य किए वह न सिर्फ उदाहरण वरन् चमत्कार है जिसके फलस्वरूप उनके तबादले की खबर सुन जनता सड़क पर उतर आई। डॉ. शर्मा के साथ जनता का ऐसा स्नेह दूसरी बार देखने को मिला है। इसके पहले चित्तौड़गढ़ से उनका तबादला हुआ तब भी चित्तौड़गढ़ में ऐसा ही परिदृश्य बना और जनता उनके तबादले को रद्द करवाने के लिए सड़कों पर उतर आई।**

डॉ. समित शर्मा का कार्यालय-घर सभी के लिए खुला रहता है। वे निरंतर काम में लगे रहते हैं। कार्यालयों, विद्यालयों, चिकित्सालयों का अचानक निरीक्षण करने पहुंच जाते हैं और जनता का दुःख दर्द सुन तत्काल निराकरण करते हैं। दोनों जिलों में मिलावट के विरुद्ध अभियान, चल प्रयोगशाला का प्रयोग, जैनेरिक दवाईयों की दूकानें, पर्यावरण जागरुकता अभियान और जन सुनवाई के माध्यम से डॉ. समित शर्मा जन-जन के चहेते हो चले। उनकी साफ-सुथरी कार्य प्रणाली और काम के प्रति समर्पण, देश के अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए आदर्श उदाहरण है लेकिन विडम्बना यह है कि सभी अधिकारी-कर्मचारी स्वयं को शासक समझते हैं और उसी तरह का राजसी व्यवहार करते हैं जो उन्हें जनता से दूर ले जाती है। डॉ. शर्मा इससे अलग हैं। वे स्वयं को जनता का सेवक समझ सेवाभावना से कार्य करते हैं जो उन्हें जनता के निकट लाती है।

चित्तौड़गढ़ से स्थानांतरण होने पर आयोजित विदाई समारोह में उन्होंने कहा- स्थानांतरण एक सामान्य प्रक्रिया है। आपका स्नेह मेरी थाती है। यदि आप लोग मेरे से स्नेह करते हैं तो एक-एक पौधा लेकर जायें, उसे पाल-पोस कर बड़ा करें और जब वह पेड़ बन जाये तो मुझे बतायें, मैं आपसे मिलने आपके घर आऊंगा। डॉ. शर्मा के इस आह्वान को सुन हजारों लोगों ने अपने घरों में पौधारोपण किया और उसकी सेवा-सुरक्षा में आज भी रत है।

जिला कलक्टर व अन्य प्रशासनिक अधिकारी आत्मविश्वास, पारदर्शिता एवं सेवाभावना से कार्य करें तो क्षेत्र का कायापलट हो सकता है। लेकिन लगता है, आज की राजनीति उन्हें ऐसा नहीं करने देती। फिर भी कुछ व्यक्तित्व होते हैं जो लीक से हट कर चलते हैं और नया इतिहास बना देते हैं। युवा चिकित्सक आईएएस अधिकारी डॉ. समित शर्मा भी उन्हीं दुर्लभ व्यक्तियों में से एक हैं, जो अनचिह्ने मार्ग पर चलते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के इस सपने को साकार करने को दृढ़ प्रतिज्ञ हैं **‘भरे सपने का स्वराज्य तो गरीबों का स्वराज्य होगा। जीवन की जिन आवश्यकताओं का उपभोग राजा और अमीर लोग करते हैं, वही गरीबों को भी सुलभ होनी चाहिए, इसमें फर्क के लिए स्थान नहीं हो सकता। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हमारे पास उनके जैसे महल होने चाहिए। सुखी जीवन के लिए महलों की कोई आवश्यकता नहीं। हमें महलों में रख दिया जाय तो हम घबरा जायें। लेकिन जीवन की वे सामान्य सुविधाएं गरीबों को भी अवश्य मिलनी चाहिए, जिनका उपभोग अमीर आदमी करता है। मुझे इस बात में बिलकुल भी सन्देह नहीं है कि हमारा स्वराज्य तब तक पूर्ण स्वराज्य नहीं होगा, जब तक वह गरीबों को ये सारी सुविधाएँ देने की पूरी व्यवस्था नहीं कर देता।’** डॉ. समित शर्मा राष्ट्रपिता के विचारों के अनुरूप जनता के सेवक बन जनता को जीवन की सामान्य सुविधाएँ उपलब्ध करवा स्वराज्य के अर्थ को सार्थक बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट



“जब समानता का सिद्धांत हमने स्वीकार किया तब न अतिरिक्त की बात पैदा होती है और न हीनता की अनुभूति होती है। केवल इतना अंतर है कि एक व्यक्ति को अपनी क्षमता को व्यक्त करने का, प्रकट करने का साधन मिल गया, हेतु मिल गया, एक को नहीं मिला। दूसरे व्यक्ति का काम यह होना चाहिए कि यह मेरे जैसा ही है, मेरा साथ है और इसको नहीं मिला तो मैं कैसे उपलब्ध कराऊँ? कैसे मैं सहयोग करूँ? समानता के आधार पर सहयोग की भावना पैदा होती है। हम समानता के सिद्धांत को स्वीकार करें। दूसरे के उत्थान में सहयोगी बनें। इससे संबंधों का नया आयाम विकसित होगा।”

व्यवहार और दृष्टिकोण

आचार्य महाप्रज्ञ

दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक कोटि के वे लोग हैं, जिनका दृष्टिकोण बहुत संकुचित होता है। दूसरी कोटि के वे लोग हैं, जिनका दृष्टिकोण उदार होता है। जो संकुचित दृष्टिकोण वाले हैं वे बहुत थोड़ा देख पाते हैं, किसी भी वस्तु और किसी भी व्यक्ति को समग्रता से नहीं देखते। एक बात को लेकर धारणा बना लेते हैं और उसके आधार पर यह आदमी अच्छा है वह बुरा है, अपना निर्णय घोषित कर देते हैं। उदार दृष्टिकोण वाले होते हैं, वे वस्तु या व्यक्ति का समग्रता से निरीक्षण करते हैं।

एक व्यक्ति को बोलने की ज्यादा आदत होती है उस व्यक्ति को क्या माना जाए? बोलता रहता है, मतलब हो तो भी बोलता है, बिना मतलब भी बोलता है। पूछने पर भी बोलता है, बिना पूछने पर भी बोलता है। अब एक आदमी का गुण हो गया कि वह वाचाल है। उसके वाचाल स्वभाव को लेकर निर्णय करें। अगर संकुचित दृष्टिकोण वाला है तो वह कहेगा निकम्मा आदमी है काम का नहीं

है। बिना मतलब बोलता है। उदार दृष्टिकोण वाला सोचता है व्यक्ति का एक गुण है वाणी। उसके विचार की पटुता है अच्छा सोचता है। वह कर्मठ भी है। अनेक विशिष्टताएं हैं। एक कमी भी है। जो संकीर्ण दृष्टिकोण वाले हैं वे एक कमी को लेकर उस व्यक्ति का अवमूल्यन कर देते हैं कि अच्छा नहीं है काम का नहीं है। शेष विशेषताओं को उपेक्षित कर देते हैं गौण कर देते हैं। इससे एक प्रतिक्रियात्मक व्यवहार पैदा होता है। उदार दृष्टिवाला कमी को भी देखेगा पर साथ-साथ विशेषताओं को भी देखेगा और विशेषताओं के आधार पर उस व्यक्ति की उपयोगिता प्रमाणित करेगा कि व्यक्ति कितना उपयोगी है। ऐसा कोई शायद मिले जिसमें कोई कमी न हो। ऐसा भी शायद न मिले, जिसमें कोई भी विशेषता न हो।

संकुचित दृष्टिकोण वाला कमी को सामने लाकर विशेषताओं पर पर्दा डाल देता है। उदार दृष्टिकोण वाला कमी को एक तरफ रखकर एक बार विशेषताओं

को उजागर करता है। एक आदमी ने अच्छा काम किया। अच्छा लेख लिखा। अच्छा चित्र बनाया, अच्छा कोई और कार्य किया। संकुचित दृष्टिकोण वाले में प्रमोद भावना नहीं होती। संकुचित दृष्टिकोण का एक लक्षण यह चिंतन है कि यह मुझ से आगे न चला जाए। एक प्रवचनकार है, व्याख्यान देता है और दूसरा भी कोई साथी है व्याख्यान देता है। एक व्याख्यानदाता कोई कथा कहता है। दूसरे ने पहले कह दी। इतने में विग्रह शुरू हो गया कि मैं कहता हूँ वह बात तुमने क्यों कही। मैं जिस ग्रंथ का वाचन करता हूँ तुमने उसका क्यों किया? कोई अच्छा बोलने वाला है। लोग आकर प्रशंसा करते हैं कि बहुत अच्छा किया। तुम क्या जानते हो अच्छा क्या होता है। ये सारी क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं संकुचित दृष्टिकोण की देन हैं। वह दूसरे की विशेषता को भी सहन नहीं करता, दूसरे को आगे बढ़ता हुआ देखना नहीं चाहता और केवल अपना ही अहं पोषित करता है।

दिशा बोध

संकुचित दृष्टिकोण अपने अहं की प्रबलता के कारण बनता है। इतना अहं प्रबल है कि अपना ही स्थान है, उस जगह दूसरे का कोई स्थान नहीं है। दृष्टिकोण सीमित हो जाता है, संकड़ा हो जाता है। उदार दृष्टि व्यक्ति में प्रमोद भावना होती है। व्यवहार का बड़ा सूत्र है प्रमोद भावना। चार भावनाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। महर्षि पतंजलि ने योग सूत्र में उनका उल्लेख किया है मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थ भावना। बौद्ध साहित्य में भी और जैन साहित्य में भी इनका विशद उल्लेख है। अगर हम व्यवहार कौशल की खोज करें, उनके सूत्र खोजें और चार भावनाओं के मर्म को समझ लें तो हमारा व्यवहार काफी अच्छा हो सकता है। चारों भावनाएं बहुत पर्याप्त हैं व्यवहार परिष्कार के लिए।

प्रमोद भावना का तात्पर्य है दूसरे की विशेषता देखकर राजी होना, दूसरे की विशेषता को प्रोत्साहन देना और दूसरे की विशेषता को पवन बनकर जनता तक पहुँचाना। जैसे हवा फूलों की सुगंध को दूर तक पहुँचाती है वैसे दूर तक पहुँचाना, यह एक उदार दृष्टिकोण का कार्य है।

संबंधों की जटिलता में यह संकुचित दृष्टिकोण का बहुत बड़ा हेतु बनता है। एक व्यक्ति में आगे बढ़ने की भावना है कुछ करना चाहता है किंतु संकुचित दृष्टिकोण वाला बड़ा होता है तो उसको वहीं रोक देता है। भारतीय क्षेत्र में विद्याओं के हास होने का भी यह एक कारण बना। जो शिक्षक या गुरु थे उनका विचार रहा यह विद्या मेरे पास है, दूसरे के पास न जाए। दूसरे के पास जाएगी तो मेरा मूल्य कम हो जाएगा। इस अर्थ में देखें तो आज का जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण है वह काफी उदार है। कोई भी नई खोज होती है वह पेटी में बंद नहीं रहती, सारे विश्व तक पहुँच

प्रमोद भावना का तात्पर्य है दूसरे की विशेषता देखकर राजी होना, दूसरे की विशेषता को प्रोत्साहन देना और दूसरे की विशेषता को पवन बनकर जनता तक पहुँचाना। जैसे हवा फूलों की सुगंध को दूर तक पहुँचाती है वैसे दूर तक पहुँचाना, यह एक उदार दृष्टिकोण का कार्य है।

जाती है। एक यह दृष्टिकोण रहा कि मैं प्रथम नंबर का वक्ता बनूँ, कोई दूसरा वैया न हो। मैं प्रथम नंबर का अध्येता बनूँ, कोई दूसरा ऐसा न हो और व्यवहार के जगत में देखते हैं तो मैं प्रथम नंबर का धनी बनूँ, दूसरा वैया कोई न बने। कुछ घटनाएं व्यवसायिक जगत की सुनने को मिलती हैं। विश्वास भी नहीं किया जाता और अविश्वास करना भी कठिन होता है। एक व्यक्ति बढ़ रहा है उसको कैसे नीचे गिराएं? कुछ लोग इस चेष्टा में रहते हैं कि मेरा काम जो प्रथम नंबर का है दूसरा कोई आए नहीं, बीच में आता है तो हत्या तक पहुँच जाते हैं, केस तक भी हो जाता है। एक युवक बहुत उन्नति कर

रहा है व्यापारिक क्षेत्र में, दूसरे दुकानदार उसको सहन नहीं कर सके। परिणाम यह हुआ कि किसी बहाने उसकी हत्या हो गई।

यह संकुचित दृष्टिकोण विकास में बाधक है, पारस्परिक संबंधों में भी बहुत बाधा पैदा करता है और व्यवहार को भी जटिल बनाता है।

हमारा दृष्टिकोण उदार बने। हमारे पास उदार बनने का एक सैद्धांतिक हेतु भी है। एक धार्मिक व्यक्ति, एक आध्यात्मिक व्यक्ति इस सचाई को स्वीकार करता है कि सब आत्माएं समान हैं। कोई हीन नहीं है कोई अतिरिक्त नहीं है। जब समानता का सिद्धांत हमने स्वीकार किया तब न अतिरिक्त की बात पैदा होती है और न हीनता की अनुभूति होती है। केवल इतना अंतर है कि एक व्यक्ति को अपनी क्षमता को व्यक्त करने का, प्रकट करने का साधन मिल गया, हेतु मिल गया, एक को नहीं मिला। दूसरे व्यक्ति का काम यह होना चाहिए कि यह मेरे जैसा ही है, मेरा साथ है और इसको नहीं मिला तो मैं कैसे उपलब्ध कराऊँ? कैसे मैं सहयोग करूँ? समानता के आधार पर सहयोग की भावना पैदा होती है। हम समानता के सिद्धांत को स्वीकार करें। दूसरे के उत्थान में सहयोगी बनें। इससे संबंधों का नया आयाम विकसित होगा।

अनैतिकता का कारण केवल भूख या दरिद्रता ही नहीं है, अनियंत्रित कामवासना, भोगवाद, सुविधावाद और लोभवृत्ति भी है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

बुढ़ापे को कैसे जीएं ?

आचार्य महाश्रमण

वृद्धावस्था में सेवा लेनी आवश्यक होती है, किन्तु चिंतन यह रहे कि मैं कम से कम सेवा लूं। जो काम व्यक्ति स्वयं कर सकता है वह काम दूसरों से क्यों कराए? कुछ काम ऐसे होते हैं जिन्हें वृद्ध व्यक्ति नहीं कर सकते, किन्तु कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिन्हें अवस्था-प्राप्त व्यक्ति भी कर सकते हैं और वैसा करके वे परिवार व समाज के लिए बहुत उपयोगी बन सकते हैं।



जीवन की तीन अवस्थाएं होती हैं बचपन, यौवन और बुढ़ापा। बच्चे मनमौजी होते हैं। वे तनाव, कुण्ठा आदि से मुक्त रहते हैं और मस्ती व आनन्द का जीवन जीते हैं।

यौवन जीवन का मध्य बिन्दु होता है। यह शक्ति, सामर्थ्य और पुरुषार्थ का प्रतीक होता है। इस समय व्यक्ति स्वतंत्रचेता होता है और अपने भाग्य का रेखाचित्र खींचने में तत्पर रहता है। इस अवस्था में व्यक्ति अपने जीवन को विकास की दिशा में मोड़ने का हर-संभव प्रयोग करता है।

वृद्धावस्था जीवन की अंतिम अवस्था है। इस अवस्था तक आते-आते व्यक्ति की शक्तियां क्षीण होने लगती हैं, इन्द्रियों की ग्रहणशीलता कम हो जाती है, ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने-आपको असहाय एवं भारभूत अनुभव करने लगता है। परिवार के लोगों की अपेक्षापूर्ति करने में

वह समर्थ नहीं रहता, इसलिए वह उनकी उपेक्षा का भी शिकार बन जाता है। कुछ व्यक्ति तो वृद्धावस्था में इतने निराश/हताश हो जाते हैं कि वे जिन्दगी के अवशेष पलों को अंगुलियों पर गिनते हुए काटते हैं। इसके विपरीत कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो वृद्धावस्था को बड़ी शान-शौकत और मान-सम्मान के साथ जीते हैं।

वृद्धों की जीवनशैली कैसी हो? यह वर्तमान का एक यक्षप्रश्न है इस संदर्भ में विचार करने से पूर्व हमें यह जानना होगा कि वृद्ध व्यक्ति किस अवस्था में है? सामान्यतः वृद्धों को मैं दो भागों में बांटता हूं। एक प्रकार के वृद्ध व्यक्ति वे होते हैं जो अवस्था से वृद्ध हो गए हैं, जिनकी चलने-फिरने की शक्ति कम हो गई है, पर पांचों इन्द्रियों सक्षम हैं। बुद्धि का अच्छा विकास है। अनुभवों का विशाल खजाना अपने में समेटे हुए हैं, ऐसे व्यक्ति योजनाबद्ध तरीके से काम करते हैं। वे अध्ययन-अध्यापन के द्वारा, अपने अनुभवों के द्वारा और संस्कार-निर्माण के द्वारा

अपनी उपयोगिता बनाए रखते हैं। दूसरे प्रकार के वृद्ध व्यक्ति वे होते हैं, जो शरीर से शिथिल हो जाते हैं, मन से टूट जाते हैं और जिनमें चलने-फिरने की क्षमता नहीं रहती, ऐसे व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था को कार्यकारी व उपयोगी बना सकें और समाधि व शान्ति से जी सकें, इस संदर्भ में चार उपाय अत्यन्त कारगर सिद्ध हो सकते हैं जप, तप, उपशम और श्रम।

जप का प्रयोग

जप का अर्थ है किसी मंत्र-स्मरण में अपने मन को नियोजित करना। किस मंत्र का जप किया जाए? यह अपनी-अपनी आस्था और विश्वास पर निर्भर करता है। जैसे जैनधर्म का एक विशिष्ट मंत्र है नमस्कार महामंत्र। मानसिक एकाग्रता व चैतसिक शुद्धि के साथ इस मंत्र का जप किया जाए तो वह पाप का उपशमन करने में बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। वृद्धावस्था में मंत्र-जाप कैसे करना चाहिए? इसके लिए कोई निश्चित प्रक्रिया नहीं हो सकती। क्योंकि शारीरिक स्थिति के अनुसार ही अनुष्ठान किया जा सकता है। बैठकर जप करने का सामर्थ्य हो तो बैठकर करना चाहिए अन्यथा सोए-सोए भी जप किया जा सकता है। जप के प्रयोग से मन को शान्ति मिलती है, एकाग्रता बढ़ती है, अकेलेपन से होने वाली अकुलाहट कम होती है और दूसरों के मन में भी उनके प्रति स्नेहभाव जागता है। जप करने से व्यक्ति भार लगने वाली जिन्दगी को उपहार में बदल लेता है।

एक व्यक्ति पक्षाघात से ग्रस्त हो गया। दिनभर लेटे रहने के सिवाय कोई चारा नहीं रहा। व्यक्ति जब सक्षम होता है तो उसके पास अनेक व्यक्तियों का

युगबोध

आना-जाना बना रहता है। परन्तु अक्षम व्यक्ति के पास बैठने की फुरसत किसे मिलती है? महाकवि तुलसीदासजी ने ठीक कहा है

तुलसीदास गरीब की कोई न पूछे बात।
एक बिचारो श्वास है आत जात दिन रात।।

उन वृद्ध महोदय के पास भी कोई नहीं आता। एक नौकर पर सारी जिम्मेदारी थी जो उनकी हर अपेक्षा पूरी करता था। उनके लिए दिन पहाड़ जितने लम्बे हो गए। एक दिन संत दर्शन देने गए। संतों के दर्शन करते ही उनकी आंखों में मानो सावन-भादों की झड़ी लग गई। वे अवरुद्ध कण्ठ से बोलने लगे महाराज! मैं स्वस्थ था, तब कितने लोग मेरे पास आते थे, मेरा सम्मान करते थे, मेरी सलाह लेते थे। आज मैं पक्षाघात से पीड़ित हो गया हूं तो कोई मुझे पूछने तक नहीं आता। दिनभर खाट पर पड़ा रहता हूं। सोचता हूं कि जल्दी मौत आ जाए तो अच्छा है। सन्त ने कहा सेठजी! बीत गई सो बात गई, अब चिंतनधारा को बदलो। अपने मन को 'ॐ भिक्षु' के जप में लगा दो। इस जप को अपना अभिन्न साथी बना लो। इससे आपको मानसिक समाधि मिलेगी। फिर आपके पास कोई आए, न आए, यह चिन्ता नहीं सताएगी। सेठजी ने वैसा ही किया। उनकी निराशा आशा में बदल गई। मन का कायाकल्प हो गया। अब जीने में आनन्द आने लग गया।

तप का प्रयोग

जो व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त करना चाहता है, उसके लिए तप परम औषधि है। वृद्धावस्था में प्रायः पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है। उस समय यदि खाद्य-संयम, उपवास या सामर्थ्यानुसार तपस्या का अवलम्बन लिया जाता है तो व्यक्ति स्वस्थ जीवन जी सकता है। तपस्या यदि शरीर के अनुकूल पड़ जाए तो बाह्य और आंतरिक, दोनों दृष्टियों से हितकर होती है। तप की उपयोगिता निर्विवाद होने के

जो व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त करना चाहता है, उसके लिए तप परम औषधि है। वृद्धावस्था में प्रायः पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है। उस समय यदि खाद्य-संयम, उपवास या सामर्थ्यानुसार तपस्या का अवलम्बन लिया जाता है तो व्यक्ति स्वस्थ जीवन जी सकता है।

बावजूद भी हर व्यक्ति इसका आलम्बन नहीं ले सकता। तप के लिए खाद्य पदार्थों की अनासक्ति तो अनिवार्य है ही, साथ में वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम भी आवश्यक है। वैसे तो खाद्य-संयम हर व्यक्ति के लिए जरूरी है, किन्तु वृद्ध व्यक्ति के लिए तो उसकी और अधिक अनिवार्यता है। खान-पान का संयम न होने से अनेक प्रकार की शारीरिक बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं। फिर उन्हें दूसरों की सेवा व श्रम लेने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इसलिए अवस्था-प्राप्त व्यक्तियों को ऊनोदरी, द्रव्यों की सीमा, कई घंटों का प्रत्याख्यान आदि अनेक प्रयोगों के द्वारा खाद्य-संयम का अभ्यास करना चाहिए। ताकि व्यक्ति अवशेष जीवन को शान्ति के साथ जी सके।

उपशम-भाव का विकास

हर व्यक्ति शान्ति से जीना चाहता है। क्रोध शान्ति का बाधक तत्व है। कुछ व्यक्ति वृद्धावस्था में चिड़चिड़े स्वभाव वाले हो जाते हैं। उन्हें बात-बात में गुस्सा आ जाता है। सक्षम व्यक्ति का गुस्सा तो फिर भी बर्दाश्त कर लिया जाता है, किन्तु जो व्यक्ति अक्षम हो गए अथवा सर्वथा दूसरों पर निर्भर हो गए, वे यदि अधिक बोलें, गुस्सा करें, बार-बार टोकें तो वे अपने ही लोगों के बीच अप्रिय बन जाते

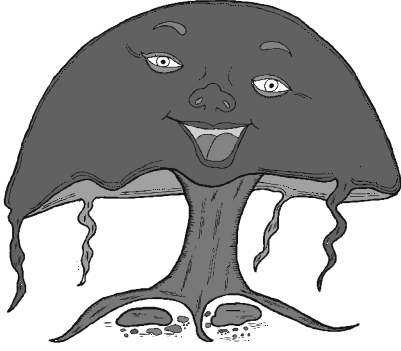
हैं, उपेक्षा के पात्र बन जाते हैं। इससे वे स्वयं भी अशान्त रहने लगते हैं तथा दूसरों की शान्ति को भंग करने में भी निमित्त बनते हैं। संभव है उनकी बात कोई ध्यान से न सुने, सेवा भी जागरूकतापूर्वक न करे, फिर भी ऐसे प्रसंगों में व्यक्ति अपनी प्रसन्नता को बनाए रखे। यदि वृद्धावस्था प्राप्त व्यक्ति उपशम-भाव का विकास करे और समता से जीवन जीए तो वह स्वयं प्रसन्न रह सकता है तथा औरों को भी आनन्दित कर सकता है।

श्रम-चेतना का विकास

वृद्धावस्था में सेवा लेनी आवश्यक होती है, किन्तु चिंतन यह रहे कि मैं कम से कम सेवा लूं। जो काम व्यक्ति स्वयं कर सकता है वह काम दूसरों से क्यों कराए? कुछ काम ऐसे होते हैं जिन्हें वृद्ध व्यक्ति नहीं कर सकते, किन्तु कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिन्हें अवस्था-प्राप्त व्यक्ति भी कर सकते हैं और वैसा करके वे परिवार व समाज के लिए बहुत उपयोगी बन सकते हैं।

गुरुदेव तुलसी अवस्था से नौवें दशक में प्रवेश कर चुके थे, किन्तु उनके मन पर बुढ़ापा कभी हावी नहीं हुआ। वे उस अवस्था में भी एक युवक की तरह प्रतिदिन अठारह घंटे तक श्रम करते थे। प्रायः चार बजे उठना और देर रात बाद सोना उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग-सा बना हुआ था। वे श्रम को ही जीवन मानते थे। उनका मानना था कि बुढ़ापा आदमी के मन में नहीं उतरना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के नौवें दशक में भी इतनी सक्रियता, इतनी श्रमशीलता और जागरूकता रही के वे सभी के लिए अनुकरणीय बने रहे।

जप, तप, उपशम व श्रम इन उपायों का सहारा लेने वाला व्यक्ति अपने बुढ़ापे को बहुत अच्छे ढंग से जी सकता है। इससे जीवन में अध्यात्म का अवतरण हो सकता है, आदमी सुख और शान्तिपूर्ण जीवन जी सकता है।



नैतिक पर्यावरण का संरक्षण

डॉ. वीरबाला छाजेड़

नैतिकता का प्रश्न बहुत उलझा हुआ है। सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना का प्रश्न इतना जटिल नहीं है। नैतिकता के साथ अनेक संदर्भ राजनीति से जुड़े हुए हैं, जैसे कानून एवं पारस्परिक व्यवहार। **आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में “नैतिक चेतना वह है जो व्यक्ति को उठाने वाली हो, गिराने वाली नहीं हो।”** आचार्य महाप्रज्ञ नैतिक साधना एवं चेतना प्रधान साधना में भेदरेखा खींचते हुए कहते हैं “जो समाजाभिमुखी धर्म की साधना है, वह धर्म का आचार व नैतिकता बन जाती है। जो चैतन्यानुभूति प्रधान साधना है, वह है अध्यात्म। उसमें आंतरिक चैतन्य पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है, बाहर के नियम, उपनियम गौण होते हैं।” इस प्रकार कहा जा सकता है कि आचार स्वनिष्ठ होता है। उसका संबंध किसी दूसरे से नहीं होता, जबकि दूसरों के प्रति जो हमारा सम्यक् आचरण है, उसे ‘नैतिकता’ कहा जाता है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है इसलिए आचार में पहले व्यवहार की बात आती है। दूसरे के प्रति हमारा व्यवहार बहुत महत्वपूर्ण है। उसमें परिष्कार आवश्यक है। नैतिक पर्यावरण के हास के प्रमुख दो कारण हैं। प्रथम बाह्य व द्वितीय आंतरिक। बाह्य कारणों में आर्थिक विषमता, विभिन्न टी.वी. चैनलों के माध्यम से बढ़ता हुआ सांस्कृतिक प्रदूषण, राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियाँ आदि। आंतरिक कारणों में अर्थ आदि के प्रति बढ़ती लोलुपता, तृष्णा, अहंकार, क्रोध भय आदि।

अणुव्रत आंदोलन आचार शुद्धि व व्यवहार शुद्धि का आंदोलन है। दूसरे के प्रति हमारा व्यवहार-क्रूरता से मुक्त हो, तो अनेक समस्याएँ अपने आप समाहित हो जाती हैं, फिर उनके समाधान खोजने की आवश्यकता नहीं होती। भारतीय संत परम्परा में आचार्य तुलसी का नाम विशिष्ट उज्ज्वलता के साथ देदीप्यमान है। आज्ञादी के पश्चात जब नैतिक मूल्यों के पुनरुत्थान की आवश्यकता महसूस होने लगी तब तेरापंथ धर्मसंघ के 9 वें आचार्य श्री तुलसी ने सन् 1949 में अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। जिसका प्रमुख उद्देश्य मनुष्य में नैतिक व मानवीय मूल्यों को पुनर्प्रतिष्ठापित करना था। आचार्य तुलसी का कथन है **“पहली समस्या तो यह है कि लोगों की नैतिकता के प्रति श्रद्धा ही हिल गई। निश्चय ही यह एक खतरनाक बात है। अनैतिक आचरण अवश्य ही बुरा है, पर नैतिकता के प्रति श्रद्धा डोल जाना उनसे भी बुरा है।”** वास्तव में जब मनुष्य बड़े-बड़े लोगों को अनैतिक आचरण करते हुए देखता है उन्हें फलता-फूलता देखता है तो उसका विश्वास खंडित हो जाता है। अतः आवश्यक है कि समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो।

आचार्य तुलसी राष्ट्र में अणुव्रत के माध्यम से नैतिक क्रांति घटित करना चाहते थे। उनके शब्दों में “फटे टाट में रेशमी पैबंद लगाना” जितना हास्यास्पद है, उससे भी अधिक हास्यास्पद है नैतिकताविहीन जीवन में धार्मिक होने का दावा। अणुव्रत इस प्रकार के दावों को निरस्त करने वाली चेतना है। इस चेतना का मूल आधार है व्यक्ति। व्यक्ति समूह को प्रभावित करता है व सामूहिक चेतना से वातावरण में बदलाव आता है।

अणुव्रत एक ऐसा आंदोलन है, जो जाति, संप्रदाय, प्रांत, वर्ग, वर्ण, लिंग, रंग भाषा आदि सभी भेदरेखाओं से ऊपर उठकर मानवीय दृष्टि से काम कर रहा है।

इस कार्य के लिए आचार्य श्री को इंदिरा गांधी एकता पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। अणुव्रत की भावना को प्रदान करने हेतु अणुव्रत के एक सहयोगी संस्थान ‘जय तुलसी फाउंडेशन’ की ओर से प्रति वर्ष एक ऐसे व्यक्ति को सम्मानित व पुरस्कृत किया जाता है जिसकी चरित्र के क्षेत्र में विशेष सेवाएं रहती हैं। इस पुरस्कार की अर्थ राशि एक लाख रुपये है। अब तक लाखों लोग अणुव्रत के नियमों को स्वीकार करके अणुव्रती बन चुके हैं।

अणुव्रत मानव मूल्यों की आचार संहिता है। यह मानव धर्म का प्रतीक है। यह असांप्रदायिक है। प्रत्येक व्यक्ति न्यूनतम मर्यादाओं को स्वीकार कर अणुव्रती बन सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ नैतिकता के हास का कारण मनुष्य के दृष्टिकोण को मानते थे। आज मनुष्य परिधि में व अर्थकेन्द्र में है। उनके शब्दों में **“आर्थिक भ्रष्टाचार व अपराध को तब तक नहीं रोका जा सकेगा, जब तक मनुष्य परिधि में रहेगा व अर्थ केन्द्र में रहेगा।** उनका मानना था कि चरित्र विकास हेतु मनुष्य के दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। प्रेक्षाध्यान के माध्यम से भावधारा में परिवर्तन लाया जा सकता है।

यदि व्यक्ति में परिवर्तन हो तो नैतिक पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है। व्यक्ति हृदय से परिवर्तित हो, नैतिक हो। व्यक्ति कानून का पालन भयवश करता है परंतु व्रत का पालन स्वेच्छा से करता है। व्यक्ति के हृदय से नैतिकता की प्रेरणा फूटे तभी नैतिकता पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है।

**प्राध्यापक : दर्शन शास्त्र अध्ययन शाला
विक्रम वि.वि., उज्जैन (म.प्र.)**

आखिरकार कहाँ हैं लोकप्रिय नेता

आशीष वशिष्ठ

आखिरकार कहाँ हैं लोकप्रिय नेता। ये वो प्रासंगिक सवाल है जिसका जवाब शायद ढूँढे भी न मिले। यूँ तो हर छोटा बड़ा नेता लोकप्रिय होने का दावा करता है, लेकिन सच्चाई यह है कि वर्तमान में लोकप्रिय नेता का भारी टोटा हमारे देश में है। अपवाद स्वरूप अगर कोई है भी तो मुख्यधारा से बाहर ही है। ये वो कड़वी हकीकत है जिसे नेता नगरी आसानी से पी और पचा नहीं पाएगी। भीड़ इकट्ठी करने को अगर लोकप्रियता का मापदण्ड मान लिया जाए तो आज धनबल के सहारे चाहे जितनी उतनी भीड़ इकट्ठी की जा सकती है। नेताओं ने लोकतंत्र को भीड़तंत्र में तब्दील कर दिया है। चांदी के जूते की चमक के बल पर अनपढ़, अशिक्षित, भोले-भाले गांव-देहात वालों को शहर घुमाने, या फिर कोई अन्य छोटा-मोटा लालच या लोभ देकर बसों गाड़ियों में बैठाकर लाखों की भीड़ इकट्ठी की जाती है। और फिर उन्हें पार्टी का कार्यकर्ता बताकर जनाधार की दुहाई दी जाती है। लोकतंत्र का रिवाज व रिवायत भीड़ ही हो गई है। जो नेता जितनी ज्यादा भीड़ जुटा लेगा उसका पक्ष उतना भारी होगा। भीड़ से नेता खुश होते हैं और विपक्ष वालों की परेशानी उतनी ही अधिक बढ़ जाती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय जब प्रथम मंत्रीमण्डल का गठन हुआ, तब हमारे नेताओं में देश भक्ति का गजब का जज्बा था। नेता समाज सेवा व राष्ट्रहित के कार्यों में व्यस्त रहते थे। जनता में नेताओं

नेता व जनता का पुराना संबंध है। लोकतंत्र में जनता ही राजा होती है। और वोट के अधिकार का प्रयोग कर वो अपना प्रतिनिधि चुनती है। ऐसे में नेताओं की गिरती लोकप्रियता व किराए पर भीड़ जुटाने की कवायद

ये दर्शाती है कि देश में आम आदमी व उसके प्रतिनिधियों के मध्य कितनी बड़ी खाई पैदा हो चुकी है। वहीं देश में गिरता वोटिंग स्तर व आम आदमी की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में कम होती सहभागिता कोई शुभ संकेत नहीं है। नेताओं को अपने आचरण को सुधारना चाहिए ताकि आम आदमी सम्मान की दृष्टि से नेताओं को देखे। नेताओं को धनबल का नहीं जनबल का सहारा लेना चाहिए तभी सच्चे अर्थों में लोकतंत्र की जीत होगी।

की छवि विकास पुरुष, हितेषी, बड़े भाई, साथी, मार्गदर्शक, सलाहकार की थी। लोग भी नेताओं को बड़े आदर के भाव से देखते थे, सही मायनों में नेताओं को देवी-देवताओं के समान पूजा जाता था। नेताओं को देखने, सुनने व मिलने के लिए अच्छी-खासी भीड़ अपने आप जुट जाया करती थी। रैली, प्रदर्शन या फिर किसी अन्य कार्यक्रम में भीड़ जुटाने के लिए किराए के श्रोता व श्रद्धालु इकट्ठे नहीं किये जाते थे। लेकिन तब और अब में जमीन आसमान का अंतर आ चुका है। जैसे-जैसे देश विकास के रास्ते पर चला और हमारा लोकतंत्र बूढ़ा होता गया इसमें कई त्रुटियाँ व दोष भी दिखाई देने लगे। अब कोई नेता देश व जन सेवा के भाव से राजनीति में नहीं आता है। अन्य व्यवसायों की भांति राजनीति भी प्रोफेशन बन चुकी है। कुछ स्वार्थी, अपराधी व दागदार छवि

वाले व्यक्तियों के राजनीति में प्रवेश करने से राजनीति का तालाब गंदा हो चुका है। आज विधानसभा से लेकर देश की संसद तक में अपराधी छवि वाले माननीयों की अच्छी खासी पैठ व रसूख है। पिछले तीन दशकों में हमारे जनप्रतिनिधियों व नेताओं ने ऐसे कारनामों किए हैं जिससे सारे देश की गर्दन शर्म से झुक जाए। नेताओं के भ्रष्ट आचरण, स्वार्थी स्वभाव, भाई-भतीजावाद, जात-पात की राजनीति, गुण्डई, व अन्य काले कारनामों में संलिप्तता के चलते आज आम नेता की छवि जनता की नजरों में गिर चुकी है। इस भीड़ में अपवाद स्वरूप ऐसे प्रतिनिधि व नेता भी हैं जिन पर जनता विश्वास करती है और जिन्हें पूर्ण आदर सम्मान व लोकप्रियता प्राप्त है लेकिन ऐसे नेताओं की संख्या उंगुलियों पर गिनी जा सकती है। जनता नेताओं से दूर भागती है। पिछले दो

दशकों में सरकारी व गैर सरकारी प्रयासों के बावजूद भी देश में वोटिंग प्रतिशत निरंतर गिरता जा रहा है। गिरता वोटिंग प्रतिशत ये दर्शाता है कि देश के आम नागरिक को लोकतांत्रिक व्यवस्था व प्रणाली में विश्वास नहीं है। आज आम भारतीय के मन में नेताओं की क्या छवि है ये बताने की कोई जरूरत नहीं है। आज अगर कोई सबसे बदनाम है तो वो नेता ही हैं और ऐसी छवि के लिए जिम्मेदार नेता खुद ही हैं।

जब जनता नेताओं पर यकीन नहीं करती है और उन्हें पसंद नहीं करती है तो लोकप्रिय होने का सवाल ही पैदा नहीं होता है। देश में वोटिंग का औसत 55 प्रतिशत मान लिया जाए तो। जीतने वाले उम्मीदवार को 15 से 20 प्रतिशत वोट ही प्राप्त हुए होंगे। ऐसे में जनता तो उन्हें चाहती नहीं है कि वो हमारे प्रतिनिधि निर्वाचित हो लेकिन जितनी वोटिंग हुई उसी आधार पर न चाहते हुए भी वो हमारे प्रतिनिधि तो हैं ही। ऐसे हालात में नेता धनबल का सहारा लेकर भाड़े की भारी भीड़ जुटाते हैं। हकीकत यह है कि हमारे नेताओं के मनोमस्तिष्क में यह अवधारणा घर कर चुकी है कि जब तक भीड़ इकट्ठी नहीं होगी उनकी दुकानदारी चलेगी कैसे? ये सच्चाई भी है बिना भीड़ के नेता का क्या वजूद। बस फर्क इतना है कि अब भीड़ खुद चलकर नेताओं के दरवाजों पर नहीं आती है बल्कि नेताओं को इसके लिए धन बल का सहारा लेना पड़ता है। दो-चार लोगों या चम्मचों के अलावा कोई भी नेताओं के पास जाना नहीं चाहता है। जनता ये बात भली भाँति जानती है कि बिना लिए दिये कोई काम तो होना नहीं है, तो फिर फालतू में नेताजी की चरण वन्दना क्यों की जाए। दाम चुकाओं काम कराओ का फार्मूला या सिद्धांत नेताओं व जनता दोनों को ठीक लगने लगता है। जनता के बीच नेताओं की जो छवि बन चुकी है उसके निर्माता भी खुद नेता ही

हैं। चुनाव के समय हाथ जोड़कर खड़े रहने वाले नेता जीतने के बाद ऐसे गायब होते हैं जैसे गधे के सिर से सींग।

जनता को रोजमर्रा की जिंदगी में अनेक छोटी-बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है ऐसे में वो अपनी फरियाद लेकर किस के पास जाए। सरकारी तंत्र तो बिना खाए-पिए एक कदम भी नहीं चलता है। ऐसे में नेताओं को जनता के लिए उपलब्ध न होना, या नेता व मंत्री के किसी सहयोगी, पीए या स्टाफ द्वारा छोटे-मोटे काम के लिए चक्कर लगवाने के बाद भी जब काम नहीं हो पाता तो व्यक्ति थक हार कर यही सोचता है कि अरे भाई दे दिलाकर छुट्टी करो कब तक नेता नगरी के चक्कर काटते रहोगे। नेताजी के फोन या अनुशंसा पत्र को भी सरकारी तंत्र गंभीरता नहीं लेता है उन्हें पता है ये तो रूटीन लेटर है। नेता जी हर दूसरे फरियादी के लिए ऐसे पत्र लिख ही देंगे। असलियत यह है कि नेता व सरकारी तंत्र में वो गहरा गठजोड़ है जिसे भोली जनता समझ नहीं पाती है। नेता जी तो रटी रटाई भाषा में पत्र लिखते ही रहते हैं और जिसका काम करवाना होता है वहाँ पत्र की भाषाशैली बदल जाती है। जनता के सामने सरकारी तंत्र को कोसना, अफसरों को खरी खोटी सुनाना या खबर लेने की धमकी देना तो बस ड्रामा है। जनता अब इस ड्रामे की हकीकत समझने लगी है इसलिए नेताओं की लोकप्रियता कम हुई है। वैसे भी अधिकतर नेता जीतने के बाद अपने क्षेत्र में झांकने का कष्ट भी नहीं करते हैं। पाँच साल के बाद ही उन्हें आम जनता की याद आती है। विकास के बड़े-बड़े दावे व वायदे करने वाले नेता एक हैंडपंप लगवा पाने की हैसियत नहीं रखते हैं।

जनता को भी नेता नगरी की हकीकत धीरे-धीरे समझ आने लगी है। चुनाव रैली, धरना प्रदर्शन या किसी अन्य कार्यक्रमों में भाड़े की भीड़ जुटाई जाती है। शहरों,

कस्बों में जनता पढ़ी-लिखी, जागरूक व समझदार है। वैसे भी काम-धंधे में जुटे आम आदमी को इतना समय नहीं होता है कि वो नेताओं के कार्यक्रमों में हिस्सा लें। उसे दो जून की रोटी कमाने की चिंता सताती है। वहीं शहरों में लोग भली-भाँति जानते-समझते हैं कि नेता एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं और राजनीति के हमाम में सभी नंगे हैं। ऐसे में किसी के पक्ष में खड़ा होना या उसकी विचारधारा का समर्थन करना समय व्यर्थ करने के अलावा कुछ और नहीं है। और ऐसा भी नहीं है कि नेता इस हकीकत को न जानते हों। वो इस असलियत से बखूबी वाकिफ हैं इसलिए उनका ध्यान गरीब, अशिक्षित, अनपढ़, गांव-देहात की ओर अधिक रहता है। यहीं से भीड़ को किराए पर बुलाकर लोकप्रिय होने का दावा ठेंका जाता है। लाखों की भीड़ जुटाने वाले दलों की पोल चुनाव के समय खुल कर सामने आ जाती है। जिस पार्टी की रैली में दसियों लाख लोग जुटते हैं चुनाव के समय उसकी ज्यादातर सीटों पर जमानत जब्त हो जाती है।

नेता व जनता का पुराना संबंध है। लोकतंत्र में जनता ही राजा होती है। और वोट के अधिकार का प्रयोग कर वो अपना प्रतिनिधि चुनती है। ऐसे में नेताओं की गिरती लोकप्रियता व किराए पर भीड़ जुटाने की कवायद ये दर्शाती है कि देश में आम आदमी व उसके प्रतिनिधियों के मध्य कितनी बड़ी खाई पैदा हो चुकी है। वहीं देश में गिरता वोटिंग स्तर व आम आदमी की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में कम होती सहभागिता कोई शुभ संकेत नहीं है। नेताओं को अपने आचरण को सुधारना चाहिए ताकि आम आदमी सम्मान की दृष्टि से नेताओं को देखे। नेताओं को धनबल का नहीं जनबल का सहारा लेना चाहिए तभी सच्चे अर्थों में लोकतंत्र की जीत होगी।

स्वतंत्र पत्रकार, बी-96,
इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 (उ.प्र.)

हृदय-परिवर्तन से ही भ्रष्टाचार उन्मूलन

मर्यादा कुमार कोठारी

आज समूचा देश भ्रष्टाचार में आंकड़ डूबा हुआ है। शासन तंत्र को संचालित करने वाले सत्ताधीश, राजनेता कार्यकारी योजनाओं को क्रियान्वित करने वाले सशक्त राज्याधिकारी एवं अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने वाले विपुल अर्थ स्वामी तीनों शक्तियों ने चक्रव्यूह रचकर ऐसा वातावरण निर्मित कर दिया है जिससे आम जनता के गाढे पसीने की कमाई का खुला व नंगा शोषण होकर मात्र चंद स्वार्थी लोगों के हाथों में समूचा धन वैभव केन्द्रित हो गया है। यह वातावरण ही अर्थ से इति तक मद्याचार की गाथा है।

आज राष्ट्र के सारे क्षेत्र राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, न्यायिक, खेल, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि भ्रष्टाचार से विषाक्त हो चुके हैं। चारों ओर से आम जनता त्राहि-त्राहि मचा रही है, और यही कारण है कि आज सभी चिंतनशील प्रबुद्ध व्यक्ति इस युग की भयंकर त्रासदी भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के उपायों पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में लगे हैं।

मेरे पिताजी सन् 1949-50 में विधि स्नातक परीक्षा हेतु अध्ययन करते थे। विधि की कक्षाएँ सायंकाल चलने के कारण उन्होंने दिन में व्यस्त रहने व अर्जन की सुविधा का उपयोग करने हेतु महालेखाकार राजस्थान मुख्यालय जोधपुर में ऑडिटर के पद पर राज्यसेवा में प्रवेश कर लिया। उस समय का संस्मरण सुनाते-एक बार मेरे पिताजी ने मुझे बताया कि देश को स्वतंत्र हुए मात्र दो तीन वर्ष हुए थे, स्वतंत्रता पूर्व के लगभग सभी व्यक्ति उस समय विद्यमान थे। वे जिस शाखा में काम करते थे, उसमें उनके साथ करीब 15-20 ऑडिटर थे। शाखा के अधीक्षक गोविंदलाल माथुर पचास बावन वर्ष के नेक नामी व सज्जन व्यक्ति थे। वे लगभग तीस वर्ष से अधिक समय से राज्य सेवा में थे और उनका अधिकांश

अणुव्रत आंदोलन के कार्यकर्ता भ्रष्टाचार, मिलावट, जमाखोरी, नशाबंदी आदि बुराईयों के विरुद्ध बलिदान की भावना लेकर देश के कोने-कोने में फैल जाए व अणुव्रत के संकल्प पूरे करने में लग जायें। तो मेरा निश्चित विश्वास है कि वे लोक जागृति व सामुदायिक शिक्षा से जन-जन के हृदय में परिवर्तन कर भ्रष्टाचार के प्रति दुर्गच्छा उत्पन्न कर सही व परिष्कृत जन जीवन का मार्ग प्रशस्त होगा। अगर ऐसा प्रभावी व पुरजोर आंदोलन नहीं किया गया तो भ्रष्टाचार का नासूर जो जन-जन के जीवन के कण-कण में घुस गया है उसे खोखला कर देश को ले डूबेगा। मैं निःसंकोच कह सकता हूँ कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन हृदय परिवर्तन से ही होगा पर ऐसा हृदय परिवर्तन जो लोक शक्ति में जागृत हो तभी यह संभव होगा।

समय जोधपुर राज्य की सेवा में बीता था। राजस्थान राज्य बनने के बाद महालेखाकार का कार्यालय केन्द्रीय सरकार के अधीन आ जाने से वे केन्द्रीय सरकार के अधिकारी बने गये। गोविंदलाल माथुर बड़े मेहनती व अपनी पुरानी परंपरा के अनुसार पूरे राजभक्त थे। वे प्रातः दस बजे कार्यालय में आते तो शाखा के सभी कर्मचारियों को रजिस्टर में उपस्थिति की प्रविष्टि करते समय नित्य एक दो बातें अवश्य कहते थे। वे कहा करते-राज्य कोष में धनराशि एकत्रित होती है वो राज्य के बड़े से बड़े व्यक्ति से लगाकर दलित व निम्न वर्ग तक के लोगों से प्राप्त की जाती है। जमीन से जो लगान मिलता है उसमें दीन-हीन गरीब, बीमार, उपेक्षित दलित वर्ग के किसान व मजदूर भी लगान भरते हैं। इसी तरह वस्तुओं पर एक्ससाईज ड्यूटी, कस्टम आदि अपरोक्ष करों से भी ऐसे लोगों का योगदान निःसंदेह प्राप्त होता है। अतः हर राज्य कर्मचारी का कर्तव्य होता है कि ऐसे पैसे से राज्य कोष से मिलने वाले वेतन के एवज में पूरा श्रम करें। जितना वेतन लें उससे अधिक कार्य करें तो ऐसा वेतन लाभदायक होगा और जीवन को सुखी रखेगा। काम चोरी की आय व कार्य करने में लोगों को परेशान किया प्रलोभनवश रिश्वत आदि ली तो ऐसा धन कभी जीवन को सुखी नहीं बना सकता।

गोविंदलाल माथुर स्वयं योग्यतानुसार पूरी मेहनत करके सम्पूर्ण कार्य करते और यदि कार्यालय में कार्य नहीं हो पाता तो घर पर जाकर करते थे। उनका जीवन बहुत सरल व सादा था। उनका भरापूरा परिवार था। जो विनयी व संस्कारित था और वे अपने को परम सुखी मानते थे। मेरे पिताजी ने बताया कि उनका कार्य के सिलसिले में अनेक बार उनके घर भी जाना हुआ। वे अधिक संपन्न नहीं होते हुए भी उदार थे व अपने को सुखी बताते हुए सदा इसे भगवान की कृपा मानकर उनके प्रति विनम्र कृतज्ञ भाव प्रकट करते थे।

मैंने अपने पिताजी से आज के परिवेश में उनका उपरोक्त संस्मरण अनेक बार सुना और उनकी बात पर अविश्वास करने का तो कोई कारण नहीं पर लगता है कि एक वरिष्ठ राज्याधिकारी की भावना जैसी उन्होंने बताई वैसी मात्र छः दशक पूर्व होने की ही बात होने पर आश्चर्य अवश्य होता है। आज तो कुछ नगण्य कर्मचारियों को छोड़ कर सारे कर्मचारी मात्र उपस्थिति देने हेतु ही कार्यालय आते हैं और उनके वेतन का कार्य से कोई संबंध नहीं है। कोई कार्य कराना चाहे तो उनकी जेब या मुट्ठी गर्म करके ही कुछ करा सकते हैं, अन्यथा नहीं। आज छोटे से छोटा कर्मचारी भी अपने पास स्कूटर,

टी.वी., फ्रिज, कूलर, एसी, कार के स्वप्न देखता है। जिसमें काफी राशि लगती है, और उसका यह स्वप्न तभी पूरा हो सकता है जब कि वह हर कार्य करने के लिये उसके औचित्य का विचार किये बिना दोनों हाथों से पैसे बटोरने के कार्य में रत हो। राज्य को उसके सभी अधिकारी, कर्मचारी, राजनेता या काम कराने वाले एक शून्य इकाई मानते हैं, और उसके हित की किसी को कोई चिंता नहीं है। किंचित व्यक्तिगत लाभ के लिये राज्य को कितना भी नुकसान हो जाये तो कोई अंगुली नहीं उठाता, यही कारण है कि देश के सर्वोच्च शासनाध्यक्ष प्रधानमंत्री, केन्द्रीय या राज्य के मंत्री पर भी भ्रष्टाचार के संगीन आरोप लगते रहे हैं। यही नहीं उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों पर संसद में भ्रष्टाचार की खुली चर्चा होती है और वे बचाव नहीं कर पाते। आज देश में हजारों वर्तमान या भूतपूर्व मंत्री होंगे पर उनमें एकदम स्वच्छ छवि वाले मंत्री की संख्या पृथी जाय तो शायद हाथ की अंगुलियों पर भी गिनने लायक नहीं होगी, ऐसी स्थिति में यथा राजा-तथा प्रजा की कहावत के अनुसार शासन तंत्र या न्यायपालिका के नीचे के स्तर पर कार्य करने वाले अगर खुले आम भ्रष्टाचार की राग में “लूट सके तो लूट” वाली स्थिति है। जहां कोई पक्का सिद्धांतवादी या मूर्ख ही अपने घर भरने से बचा हुआ है, वर्ना जिसको जितना मौका मिलता है उतनी लूट में वह बड़े विश्वास के साथ जुटा हुआ है। ऐसी स्थिति में छः दशक पूर्व के श्री गोविन्दलालजी माथुर की भावना कपोल कल्पित ही कही जायेगी।

भ्रष्टाचार की प्रतिदिन उजागर होने वाली घटनाओं से संकलन किया जाय तो अनेक ग्रंथों की रचना हो सकती है, इसलिये मैं ऊपर केवल विभिषिका का चित्रण करके ही संतोष कर लेता हूँ। अब प्रश्न है कि जो भ्रष्टाचार जन-जन में इतनी गहरी जड़े जमा गया है उसका उन्मूलन कैसे हो? उनके दो ही तरीके हो सकते हैं

1. हृदय परिवर्तन 2. बल प्रयोग।

पहला रास्ता सही है, पर लंबा व

श्रमशील है और दूसरा रास्ता शीघ्र फल देने वाला है पर उसे स्थायी नहीं कहा जा सकता, लगभग छः दशक से भ्रष्टाचार उन्मूलन अधिनियम इस देश में लागू है। मेरे पिताजी वर्षों तक उच्च न्यायिक सेवा में न्यायाधीश रह चुके हैं। उनका अनुभव था कि इस अधिनियम के अंतर्गत कभी-कभी छोटे कर्मचारियों को जरूर पकड़ा जाता है पर आज तक कभी किसी मंत्री या भारतीय प्रशासनिक सेवा या अन्य उच्च सेवा के किसी व्यक्ति को न तो पकड़ा गया न उस पर मुकदमा चला, न दोषी पाया गया, न सजा हुई, ऐसी स्थिति में इस अधिनियम से भ्रष्टाचार उन्मूलन करने में खास सफलता नहीं मिली। देश के किसी भाग में चले जायें, लगभग हर राजनेता, हर वरिष्ठ अधिकारी व हर उद्योगपति के पास अपनी घोषित आय से बहुत अधिक संपत्ति का अंबार लगा हुआ है। जो स्पष्ट दिख रहा है, पर उन पर कोई कार्यवाही नहीं, कार्यवाही होती भी कैसे जबकि जाँच अधिकारी स्वयं ही भ्रष्टाचार से ग्रसित है व भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग भी घोर भ्रष्टाचार में लिप्त हो। इस अधिनियम के अलावा समय-समय पर और कठोर अधिनियम भी बनाये गये पर उनकी क्रियान्विति भी निष्प्रभावी रही। जो पहरेदार चोरी करना प्रारंभ कर दे या चोर की सहायता करे तो चोरी की रोक थाम होनी असंभव है यही स्थिति आज भ्रष्टाचार की हैं। भूतपूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने इमरजेन्सी लागू कर स्वतंत्रता पर रोक लगा दी तो एक बार तो ऐसा लगा कि शायद लोग अनुशासित हो जाये व उनकी कठोरता से भ्रष्टाचार अपनी अंतिम घड़ियाँ गिनने लगा था, पर ऐसी इमरजेन्सी अधिक नहीं चल सकी क्योंकि इमरजेन्सी का उद्देश्य भ्रष्टाचार उन्मूलन नहीं था बल्कि अपनी निरंकुश सत्ता स्थापित करना था। जिसके आवरण में शीर्ष लोगों ने खुलकर भ्रष्टाचार किया। यही हाल सात दशक तक शक्तिशाली रहे सोवियत गणराज्य का हुआ। सत्ता के जोर से लोगों की स्वतंत्रता छीन कर सर्वोच्च अधिकारियों ने सत्ता व अर्थ का

संगठित व अभेद्य साम्राज्य बनाना चाहा जिसका परिणाम यह हुआ कि भूखों मरी जनता के हाहाकार से साम्राज्य खोखला होकर लड़खड़ा गया और आज उसके अवशेष भी नहीं रह पाये। बल प्रयोग से कभी-कभी लोग भयातुर हो जाते हैं व अपराध वृत्ति पर रोक लग जाती है पर यह कोई स्थायी समाधान नहीं हो सकता। जब इतने व्यापक तौर से भ्रष्टाचार प्रभावी बन गया है, तब कौन किस पर बल प्रयोग करे या सब पर बल प्रयोग कैसे हो? यह प्रश्न भी बड़ा विकट है, और इस प्रश्न का समाधान स्वयं में एक जटिल समस्या है।

ऐसी स्थिति में हमारा ध्यान दूसरे तरीके पर जाता है, हृदय परिवर्तन किसी भी अपराध का अचूक इलाज है पर हृदय परिवर्तन का मार्ग भी सुगम नहीं है। लाखों करोड़ों लोगों की भावना में परिवर्तन लाना हर व्यक्ति के बस की बात नहीं हो सकती। एक-एक व्यक्ति का हृदय परिवर्तन करने में सदियों बीत जाने पर भी करोड़ों लोगों का हृदय परिवर्तन संभव नहीं हो सकता। आज ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो लोक शक्ति जागृत करें व आम जनता के हृदय में भ्रष्टाचार के प्रति ऐसी घृणा पैदा कर दे कि लोग उस मार्ग पर जाने में संकोच करें व लज्जा महसूस करें। मेरे पिताजी के पूर्व कथित संस्मरण के अनुसार श्री माथुर जैसे वरिष्ठ अधिकारी की कार्य भावना हर कर्मचारी व अधिकारी के हृदय में भरी जाये। वे अपने वेतन से अधिक सच्चाई से कार्य करने की, काम चोरी एवं रिश्वत की दुर्गंध से बचने का प्रयास करें इसके लिए आज फिर इस देश में महात्मा गांधी जैसे उदात्त चरित्र के विराट व्यक्तित्व की आवश्यकता है। जो स्वयं अकिंचन बन कर शक्तिशाली साम्राज्य से टक्कर लेने के लिये अभय का व्रत स्वीकार करें व लाखों-करोड़ों लोगों में बलिदान की भावना भर कर निर्ममता से सारा संघर्ष झेलने में समर्थ बनाये। महात्मा गांधी ने प्राणों की बाजी लगाकर जन-जन के हृदय से स्वतंत्रता प्राप्त करने की इतनी उत्कट भावना भर दी कि वे अपना सब

कुछ गौण कर स्वतंत्रता संग्राम में कुद पड़े व अंततः स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी। आज समाज से कोई एक या अनेक ऐसे व्यक्ति सामने आये जो जन-जन में भ्रष्टाचार के विरुद्ध अलख जगाये और लोगों को जीवन परिष्कार की दिशा में सचेष्ट करें। युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से नैतिक एवं प्रामाणिक जीवन-यापन करने के लिये पुरजोर आह्वान किया तथा विगत छः दशक से देश में ऐसे कुछ वातावरण का निर्माण भी हुआ है पर जन-जन में उसका जितना व्यापक व गहन प्रभाव पड़ना चाहिये वैसा नहीं हुआ है। वे दूरदर्शी सन्यासी थे, अतः लोग उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान तो रखते हैं पर चूँकि वे गृहस्थ जीवन से संबंधित नहीं है। इसलिये गृहस्थ जन उनकी बातों का केवल आदर्श मानकर उस पर चलने का संकल्प नहीं लेते। फिर आचार्य प्रवर का अधिकांश अनुयायी ऐसा समाज है जिसका प्रत्यक्ष संबंध अर्थ द्वारा स्वचालित उद्योग व व्यापार से है, जो अर्थाजन व अर्थ संचय में अधिक रुचि रखता है, और इस स्थिति में उनका अनुयायी समाज उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत अभियान में सक्रिय रूप से जुड़ नहीं पाता।

दूसरे लोग जो इस अभियान से जुड़ते हैं उनकी शक्ति सशक्त सामाजिक कार्यकर्ताओं की टोली के बिना संगठित नहीं हो पाती। धनी मानी लोग मंदिर, धर्म स्थान, शिक्षा, सेवा व चिकित्सा संस्थान खड़े करके अपनी विसर्जन भावना का परिचय तो देते हैं पर अर्जन व संचय के स्रोतों को शुद्ध बनाने में उनकी रुचि नहीं बन पाती है। अणुव्रत आंदोलन किसी सुन्दर व्यवस्था के लिये आतुर न बन कर मात्र आंदोलन ही बना रहता व उसके सैकड़ों कार्यकर्ता समाज क्रांति का संकल्प लेकर गांव-गांव नगर-नगर में अणुव्रत का घोष लगाते हुए बुराईयों का प्रतिकार करने में जुट जाते तो आज तक राष्ट्र का कायाकल्प हो जाता। महात्मा गांधी के आह्वान पर शराब बंदी, स्वदेशी आंदोलन, हरिजन सेवा आदि अनेक रचनात्मक कार्यों में लाखों कार्यकर्ता लगाये, महिलाएँ तक आगे आ गयी तो सारे भारत में क्रांति की लहर फूट पड़ी। वैसे ही आवश्यकता है कि अणुव्रत आंदोलन के कार्यकर्ता भ्रष्टाचार, मिलावट, जमाखोरी, नशाबंदी आदि बुराईयों के विरुद्ध बलिदान की भावना लेकर देश के कोने-कोने में फैल जाएं तथा अणुव्रत के संकल्प पूरे करने में लग जायें। तो मेरा निश्चित विश्वास है कि वे लोक जागृति व सामुदायिक शिक्षा से जन-जन के हृदय में परिवर्तन कर भ्रष्टाचार की इच्छा को समाप्त कर सही व परिष्कृत जन जीवन का मार्ग प्रशस्त होगा। अगर ऐसा प्रभावी व पुरजोर आंदोलन नहीं किया गया तो भ्रष्टाचार का नासूर जो जन-जन के जीवन के कण-कण में घुस गया है उसे खोखला कर देश को ले डूबेगा।

मैं निःसंकोच कह सकता हूँ कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन हृदय परिवर्तन से ही होगा पर ऐसा हृदय परिवर्तन जो लोक शक्ति में जागृत हो तभी यह संभव होगा।

सुर्वण नयनी, 2/183, कुड़ी भगतासनी हा. बोर्ड, जोधपुर, (राज.)



रोकनी होगी राजनीति में भाईगिरी

◆ राजनीति के अपराधीकरण के मुद्दे पर सरकार और संसद फिर से गौर करे। साथ ही हत्या, रेप और अवैध वसूली जैसे गंभीर आरोपों का सामना कर रहे उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने से रोकने के लिए तुरंत कदम उठाए जाएं। गंभीर आरोपों में दोषी ठहराए जाने के बाद मौजूदा सांसदों और विधायकों को अयोग्य करार दिया जाए। किसी को अयोग्य ठहराने की ताकत चुनाव आयोग नहीं संसद के पास है। मौजूदा कानून के तहत किसी शख्स को तभी चुनाव लड़ने के अयोग्य ठहराया जा सकता है जब वह दोषी साबित हो चुका हो। लेकिन विरोधाभास यह है कि जेल में बंद शख्स केस लंबित रहने के दौरान चुनाव लड़ सकता है पर वोट नहीं कर सकता। मौजूदा सांसदों और विधायकों को दोषी करार दिये जाने और उन्हें दो वर्ष से अधिक की सजा सुनाये जाने के बाद भी उनके सदन के सदस्य के तौर पर बने रहने का विशेषाधिकार भेदभावपूर्ण है।

सिर तब शर्म से झुक जाता है जब लोग किसी अंतर्राष्ट्रीय मंच पर कहते हैं कि मौजूदा लोकसभा के 543 में से कम से कम 162 सदस्यों पर आपराधिक मामले चल रहे हैं और उनमें से 76 सदस्यों पर गंभीर अपराध करने के आरोप हैं। चिंता की बात यह है कि हर बार यह संख्या बढ़ती जाती है।

चुनाव आयोग इस पक्ष में है कि ओपिनियन पोल बंद हों। आयोग को फर्जी राजनैतिक पार्टियों का रजिस्ट्रेशन रद्द करने का अधिकार मिलना चाहिए। देश में 1,200 राजनैतिक पार्टियां हैं, जिनमें से सिर्फ 150 सक्रिय हैं बाकी फर्जी हैं। सरकार द्वारा चुनाव खर्च का बोझ उठाने से पैसे का दुरुपयोग बढ़ जायेगा। अब चुनाव आयोग वोटर स्लिप खुद बांटेगा। इसकी शुरुआत इस बार के प. बंगाल चुनावों से होगी। यह पाया गया था कि पार्टियां वोटिंग से पहले वोटरों को स्लिपों के साथ पैसे वगैरह देकर उन्हें लुभाने की कोशिशें करती हैं। आयोग की आजादी के लिए जरूरी है कि चुनाव आयुक्तों को भी मुख्य चुनाव आयुक्त के बराबर का दर्जा दिया जाए ताकि उन्हें आसानी से हटाया न जा सके। जो सबसे सीनियर हो उसे खुद-ब-खुद चुनाव आयुक्त के पद पर प्रमोट कर दिया जाए।

एस.वाई. कुरैशी, मुख्य चुनाव आयुक्त

महिलाओं की नशाविरोधी जंग

डॉ. रामसिंह यादव

हमारा जीव अनमोल है, इसका सदुपयोग करके ऊंचाईयों को छू सकते हैं और चाहे तो दुरुपयोग कर अंधी गलियों में धकेल सकते हैं। शराब पीकर, शराब की लत में पड़कर नशे की आदत डालकर कोई भी व्यक्ति न सिर्फ अपने स्वास्थ्य (जिंदगी) के साथ खिलवाड़ करता है बल्कि पूरे जीवन को ही अंधी राहों में धकेल देता है। उसका परिवार घर-बार सब पतन के गर्त में चला जाता है। हत्याएं, लूट-पाट-अपहरण बलात्कार की जड़ में भी नशे की आदत है। तभी यह लोक गीत गाया जाता है

है नशा बुरा जंजाल न आदत डाल
हां सुनते जाना नसीहत पर ध्यान लगाना।

शराब पीने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। शराब का नशा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता व पिछड़े वर्ग दोनों में समान रूप से चलता है। धनिक वर्ग के लोग अपना रुतबा व व्यापार के विस्तार के लिए या फैशन के रूप में पार्टियों में अपने साथियों के साथ शराब का सेवन करते हैं। शराब का नशा व्यक्ति को आर्थिक, शारीरिक व मानसिक क्षति पहुंचाता है। शराब समग्र पाचन तंत्र विशेषकर लीवर को खराब करती है और उस शराबी की मौत तक हो जाती है। गरीब परिवार भुखमरी के कगार तक पहुंच जाते हैं और इस व्यसन (शराब) की आदत के कारण उनका जीवन तबाह हो जाता है।

‘महिला सरकार’ जीती जंग

रात भर महिलाएं कर रही चौकीदारी
समाज सुधार की यह अनूठी खबर
इंदौर संभाग के जिला खरगोन की है।

4 जनवरी 2011, शराब जरा धीरे भैया, किसी ने सुन लिया तो कोहराम मच जाएगा। गजब हो जाएगा। गांव में अब तो आजकल शराब पीना और पिलाना बंद है। उन्हें पता चल गया कि कोई शराब पी रहा है या पिला रहा है तो घर में नहीं घुसने देंगी। जुलूस बना देंगी, थूकेंगी

हमारी मर्दानगी पर जानते हो जो काम आज तक कोई बड़ा नेता, समाजसेवी, मंत्री, प्रधानमंत्री तक नहीं कर पाया। उसे औरतें कर रही हैं। हर वक्त चौकीदारी हो रही है। रात-रात भर जाग कर।

पियक्कड़ों-शराब के शौकीनों नशेड़ियों की यह बातचीत उस जीत की बुनियाद है, जिसे हांसिल किया है महिलाओं की सरकार ने। ग्राम पनाली में महिलाओं ने शराबबंदी का नारा बुलंद कर रखा है। बहुत बड़ा बदलाव आ गया है उस गांव में। महिलाओं के बुलंद होंसले की चर्चा इंदौर उज्जैन संभाग में ही नहीं पूरे मध्यप्रदेश में है।

गांव की सरकार चलाने वाली सरपंच दितलीबाई समेत अन्य महिलाएं खुद शराब के खिलाफ नशा-निषेध के इस अभियान में कमर कसकर कूद पड़ी है। नशा बुरी चीज है शराब आदमी को पशु बना देती है। घर-परिवार तबाह हो जाते हैं और बर्तन-भांडे तक बेचकर शराब पी जाते हैं घर के मुखिया और औरतों को शराब के लिए पीटा जाता है। यह बुराई खत्म हो इसके लिए शराब के खिलाफ जागरूकता लाने के लिए रात-रात भर महिलाएं जाग रही हैं।

गांव पनाली की सरपंच दितलीबाई ने अपना कानून भी बना लिया है। शराब बेचने पर 5001 रु. (पांच हजार एक रुपए) का दंड और इसकी सूचना देने वाले को यह इनाम देने की घोषणा। लगभग 25 महिलाएं हर रात घरों में दे रही हैं दस्तक। लगभग 500 की संख्या में समाजसेवी महिला औरतें शराब बंदी के लिए सरपंच दितलीबाई के साथ बहुत ही विनम्रता के साथ शराबबंदी का अनुरोध कर रही हैं। शराब बेचने व पीने वाले पर वे आगाह करते हुए कि उन पर जुर्माना लगाया जायेगा। एक सप्ताह हो गया है

महिलाएं गांव में धूम-धूम कर शराब-बंदी का नारा बुलंद कर रही है।

पहली जनवरी नये साल में महात्मा गांधी की प्रेरणा लेकर पनाली गांव में शराब बंदी पर पियक्कड़ों पर जुर्माना लगाने व शराब बेचने वालों पर भी दण्ड लगाने की तैयारी की जा रही है।

जो लोग स्थानीय गांव में कलाली पर शराब बेचते थे, कलालियों, मयखानों पर बैठकर शराब पीते थे। अब वहां शराब नहीं बिक रही है। रात में शराब अलग-अलग स्थानों पर बाहर से लाकर बेची जाती थी। अब वहां भी कोई नहीं आ रहा है शराब खरीदने के लिए।

पुरुषों ने भी बढ़ाया होंसला

खरगोन के गांव पनाली में सरपंच महिला के इस अभियान को सफल बनाने के लिए गांव की पांच सौ महिलाओं की टीम जुटी है। वही शराब बंदी अपनाने वाली महिलाओं को पुरुषों का भी साथ मिलने लगा है। अनेक पुरुष महिलाओं की समझाईश शराब बंदी मुहिम इस समाज सुधार अभियान शराब बंदी मध्य निषेध के लिए आगे आ रहे हैं आगे आए हैं।

इस गांव से प्रेरित होकर नजदीकी गांव तलकपुरा व ग्यासपुरा में भी शराब बंदी का नारा सुनाई देने लगा है ग्रामीणों ने खुद आकर शराब नहीं पीने नहीं छूने तक की बात की है। तलकपुरा सरपंच रघुवीर सिंह ने बताया कि गांव में शराब बंदी को लेकर जागरूकता आ रही है, कई परिवार इस नशा निषेध अभियान से जुड़ चुके हैं।

है नशा बुरा जंजाल न आदत डाल।

हो सुनते जाना नसीहत पर ध्यान लगाना।

पीते जो शराब घड़ी-घड़ी

जूतों की उन पर लगे झड़ी

नाली में गिर कुत्तों से मुंह चटवाना।

है नशा बुरा जंजाल न आदत डाल।

14, उर्दूपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

बरामद डायरी खोलेगी कलमाडी के राज

प्रमुख संवाददाता

नई दिल्ली

कॉमनवेल्थ गेम्स के सिलसिले में छापे के दौरान पुणे से बरामद हुई डायरी अब सुरेश कलमाडी के राज खोलेगी। इस डायरी में करोड़ों रुपये की अनेक एंट्री हैं। यह रकम किसको और किस तरह से दी गई इस पता सीबीआई अधिकारी लगा रहे हैं।

24 दिसम्बर को आयोजन समिति के अध्यक्ष सुरेश कलमाडी के दिल्ली, मुंबई



■ सुरेश कलमाडी

तथा पुणे स्थित आवास तथा कार्यालयों पर सीबीआई ने छापे मारे थे। कार्रवाई के दौरान सीबीआई अधिकारियों के हाथ तीन कम्प्यूटर, दो लैपटॉप तथा अनेक दस्तावेज बरामद हुए थे। दस्तावेजों से

भरे बैग को अब सीबीआई अधिकारियों ने खंगालना शुरू कर दिया है। सूत्रों ने बताया कि पुणे में मारे गए छापे के दौरान दस्तावेजों के साथ एक डायरी भी मिली जिसमें तीन करोड़ 50 लाख, दो करोड़ 80 लाख तथा एक करोड़ 40 लाख रुपये सहित अनेक एंट्री दर्ज हैं। लेकिन डायरी में रकम लेने या देने वाले के नाम का जिक्र नहीं है। सूत्रों का कहना है कि डायरी कलमाडी के लेन देन का राज खोल सकती है। आखिर यह रकम किसको किस काम के लिए दी गई।

आफिस में सिगरेट-सुरती लाने पर लगेगा जुर्माना

कानपुर। तंबाकू उत्पादों के इस्तेमाल पर नियंत्रण के लिए नए साल में जिला प्रशासन ने एक नया आदेश जारी किया है। जिसके तहत सरकारी कार्यालय में सिगरेट, सुरती, पान मसाला, गुटखा आदि का सेवन करने वालों पर 200 रुपए का जुर्माना लगाया जाएगा और यह धनराशि संबद्ध व्यक्ति के वेतन से काटी जाएगी।

शहर में जिला तंबाकू नियंत्रण सेल

'संघी आतंकवाद' से सख्ती राजस्थान फतह पहलों से निपटे सरकार : कांग्रेस सीढ़ी : कर्नल बैसला

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली

कांग्रेस ने केंद्र सरकार से 'संघी आतंकवाद' से सख्ती से निपटने की मांग की है। पार्टी का कहना है कि स्वामी असीमानंद के बम धमाकों में शामिल होने की बात स्वीकार करने के बाद यह साफ हो गया है कि कई आतंकी घटनाओं के पीछे संघ से जुड़े लोगों का हाथ है। पार्टी का कहना है कि इन जानकारियों के सामने आने से सीमापार आतंकवाद पर भारत के रुख को झटका लगा है।

कांग्रेस प्रवक्ता शकील अहमद का कहना है कि स्वामी असीमानंद ने

प्रहार

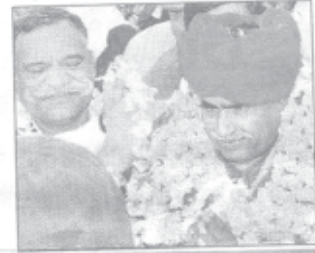
- असीमानंद की स्वीकारोक्ति से संघ की सच्चाई सामने आई
- सीमापार आतंकवाद पर भारत के रुख को झटका लगा

मजिस्ट्रेट के सामने बयान दिया है कि आरएसएस के किस व्यक्ति ने किसे कितने पैसे दिए थे। इस तरह के आतंकवाद से देश में बड़ा खतरा पैदा हो गया है। लिहाजा, सरकार को ऐसे मामलों से पूरी सख्ती से निपटना चाहिए। संघ पर पाबंदी लगाने के सवाल पर शकील अहमद ने कहा कि यह सरकार के अधीन है कि वह क्या कार्रवाई करती है।

एनबीटी न्यूज ॥ गुड़गांव

जिले के गांव तिगरा में एनसीआर गुर्जर पंचायत में आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष कर्नल किरोड़ी सिंह बैसला ने कहा कि राजस्थान फतह तो मंजिल की पहली सीढ़ी है। अब इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर लाया जाएगा। उन्होंने राजस्थान की जीत में सहयोग करने पर पंचायत का धन्यवाद किया और आरक्षण को पूरे भारत में लागू करवाने का बातों बातों में इशारा दे दिया। उन्होंने कहा कि देश में एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर संविधान की समीक्षा होनी चाहिए। सरकार को इस पर सोचना चाहिए कि देश का मेहनती समाज पिछड़ कर कैसे रहा गया है।

एनसीआर पंचायत के पंचों की मंशा सिर्फ गुर्जों पर बनाए गए केस वापस लेने के लिए सरकार से बातचीत करते तक ही सीमित थी। लेकिन कर्नल बैसला ने मुद्दे को छोटा बताते हुए पंचायत को नए संघर्ष का मंत्र दे दिया। उन्होंने कहा कि दिल्ली, यूपी, हरियाणा सरकारों से जल्द ही बात की जाएगी और केस वापस



▶ गुड़गांव जिले के तिगरा में एनसीआर गुर्जर पंचायत में पहुंचे कर्नल

▶ दिल्ली, यूपी, हरियाणा सरकारों से केस वापस लेने का करेंगे अनुरोध

लेने का अनुरोध रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि तीनों प्रदेश की सरकार उनके अनुरोध को टालेगी।

उन्होंने माना कि राष्ट्रीय रेल मार्ग रोके जाने से देश को हानि हुई है लेकिन गुर्जर समाज को उनका हक दिलाने के लिए यह सब करना पड़ा है।

भ्रष्टाचार पर बना आठ सदस्यीय मंत्रिसमूह

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली

यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी के भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए सुझाए गए पांच विन्दुओं पर विचार करने के लिए सरकार ने वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी की अध्यक्षता में आठ सदस्य मंत्रिसमूह का गठन किया है। माना जा रहा है कि मंत्रिसमूह फरवरी में होने वाले बजट सत्र से पहले अपनी राय सरकार को दे देगा।

मंत्रिसमूह में गृह मंत्री पी चिदंबरम, मानव संसाधन विकास मंत्री कपिल सिब्बल, रेल मंत्री ममता बनर्जी, कृषि मंत्री शरद पवार, रक्षा मंत्री एके एंटनी,

विधि मंत्री वीरप्पा मोइली और डीएमके नेता व रसायन एवं उर्वरक मंत्री एमके अलागिरी शामिल हैं। पिछले दिनों कांग्रेस के सम्मेलन में सोनिया गांधी ने भ्रष्टाचार का मुद्दा प्रमुखता से उठाया था। उन्होंने कहा था कि भ्रष्टाचार के ऐसे मामले जिनमें जनसेवक और नेता शामिल हों उन्हें जल्द से जल्द निपटाने की व्यवस्था की जाए। साथ ही ऐसे कानून लाए जाएं जिससे सार्वजनिक खरीद तथा ठेकों में पूर्ण पारदर्शिता आए। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा था कि विवेकाधिकार की शक्तियां, खासकर भूमि आवंटन के मामले भ्रष्टाचार का प्रमुख स्रोत हैं, इस शक्ति को समाप्त करने पर विचार किया जाना चाहिए।

न्याय नहीं मिला तो कानून हाथ में लेंगे लोग : गोविंदाचार्य

नई दिल्ली। भाजपा के पूर्व नेता व भारत विकास संगम के के. एन. गोविंदाचार्य ने कहा है कि बिहार के पूर्णिया जिले में विधायक राजकिशोर केसरी की हत्या के मद्देनजर सरकारी तंत्र को आत्मचिंतन करना चाहिए। कोई आम व्यक्ति कानून

को तभी हाथ में लेता है, जब उसे न्याय नहीं मिल पाता है।

उन्होंने कहा कि इस घटना की जांच इस बात पर केंद्रित होनी चाहिए कि हमारी व्यवस्था आरोपी महिला को न्याय देने में क्यों विफल रही। (एजेंसी)

हिन्दुस्तान दैनिक, नई दिल्ली : 6,7,9,10 जनवरी 2011

‘पापा, आप समझते क्यों नहीं।’ मम्मी, अब जमाना बदल गया है। इस प्रकार के कई वाक्य आज के युवक-युवतियों से सामान्य रूप से सुने जाते हैं। आज की पीढ़ी की यह भाषा आज से बीस साल पहले नहीं थी। विगत वर्षों में यह भाषा महानगरों, नगरों में जहां महामारी की तरह फैली है वहीं इसका प्रभाव कस्बों और गांवों में उच्च शिक्षा प्राप्त युवक-युवतियों में दृष्टिगत होता जा रहा है।

पीढ़ी का यह अन्तर वर्तमान महानगरी, नगरीय आपाधापी, व्यस्तता, भौतिक साधनों की बढ़ती ललक के कारण बाल्यकाल में बालक/बालिका को माता-पिता के सही समय पर सुसंस्कार न देने के कारण के साथ-साथ कई अन्य कारणों से होता है।

बालक-बालिका के बौद्धिक विकास का दायित्व जहां पुरुष वर्ग का होता है वहीं भावनात्मक रूप से विकास का दायित्व नारी का होता है। पुरुष वर्ग से बालक बुद्धि, विवेक, जीवन संघर्ष आदि सद्गुण प्राप्त करता है वहीं प्यार, स्नेह, सहानुभूति, दया आदि सुसंस्कार नारी देती है। अतः पीढ़ी के अन्तर का मुख्य कारण बाल्यपन में माता-पिता द्वारा सुसंस्कारित न कर पाना है।

आज के युवक-युवतियां वरिष्ठ नागरिक द्वारा किए कामों को हमारे दिए गए नैतिक मूल्यों की सौरव को नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन के कारण नहीं मानते। वरिष्ठ नागरिक को अपने परिवार को टूटने से बचाने को जो भी जीवन में अर्जित किया यदि उस सारे का नहीं तो जितना समय दिया जा सकता है उतना हिस्सा उदारतापूर्वक विभाजित करने पर पीढ़ी के अंतर के कटु शब्दों से बचा जा सकता है।

वरिष्ठ नागरिक पीढ़ी के अंतर के व्यवहार से बचने के लिए अपनी सोच में परिवर्तन लाए। महंगाई के कारण वरिष्ठ नागरिक द्वारा अर्जित आजीवन की पूंजी की महत्ता आज कुछ भी नहीं रह गई। आज का सरूप सैकड़ों, हजारों की अपेक्षा लाखों की आस करता है। अतः उसे आत्मनिर्भर होना

पीढ़ी का अन्तर

शिवचरण मंत्री

चाहिए। अपनी संचित या सतत कमाई से ही अपना काम चलाना बेहतर है।

परिवार में परस्पर मतभेद होने पर भी वरिष्ठ नागरिक को मनभेद होने के लिए परिवार में या तो स्वयं या अपने किसी अन्य समझदार सदस्य को इस प्रकार समय रहते प्रशिक्षित करे कि घर में मतभेद होने पर भी वह मतभेदों के कारणों पर गंभीरता से विचार करके परिवार के सदस्यों को अपने विवेकपूर्ण, न्यायसंगत विचारों से मना लें। संक्षेप में परिवार में कोई ऐसा सदस्य हो जो पारस्परिक मतभेदों को अपने विवेक से मनभेद होने से बचाए रखे। परिवार के इस सदस्य के लिए सभी परिजनों में सम्मान की भावना हो। ऐसा होने पर पीढ़ी का अंतर कम होगा।

परिवार के वरिष्ठ नागरिक बच्चों को प्रारंभ से ही शिष्टाचार की सीख देने के लिए अपने आपको उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते रहें। साथ-साथ तरुणावस्था के बच्चों को स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाने का प्रयास करे। पर स्वतंत्रता का अभिप्राय स्वच्छंदता न हो। यदि स्वच्छंदता का भाव विकसित होता है तो पीढ़ी का अंतर बढ़ेगा ही।

पीढ़ी का अंतर कम करने के लिए

वरिष्ठ व्यक्ति को अपने स्वयं के छोटे-छोटे काम यथा नहाने के बाद अपना बनियान एवं कच्छा स्वयं धोएं। भोजन हेतु खाने की सामग्री खुद रसोईघर से लाएं और झूठे बर्तनों को यथा-स्थान रख आएं। संक्षेप में बूढ़ा व्यक्ति यथा समय अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं ही करने का प्रयास करें।

वृद्धावस्था में किसी पर आर्थिक रूप से निर्भर रहना भी पीढ़ी के अंतर को बढ़ाता है। वर्तमान आर्थिक युग में प्रयास यह रहे कि बूढ़ा व्यक्ति किसी पर आर्थिक रूप से बोझ न बने। यह घर के खर्च में यथासमय भागीदार बने।

वृद्ध व्यक्ति जब असाध्य रोग के कारण उठने-बैठने चलने-फिरने लायक न रहे और रोग-शैथिल्य पर ही रहे। ऐसे समय परिवार का कोई सदस्य उसके पास न आये या उसकी सेवा में चौबीस घंटे भी रह सकता। ऐसी स्थिति में वृद्ध व्यक्ति को यह विचार करना जरूरी है कि समाज पारस्परिक हितों से जुड़ा है और वह उस क्रिकेट खिलाड़ी जैसा है जो पिच पर खड़ा नहीं होकर बाउण्ड्री पर खड़ा है अर्थात् अब वह संसार से जाने वाला है। अतः मन में शान्त रहे।

व्यवसाय में व्यस्त रहने वाले वृद्ध को वृद्धावस्था, जीवन की अंतिम सांस तक अपने व्यवसाय की गोपनीय बातें अपने व्यवसाय में लगे पुत्रों, भाइयों को बताकर अपना उत्तरदायित्व पूरा करना चाहिए। व्यवसाय के हानि-लाभ का दायित्व पुत्रों में व्यवसाय में आत्मविश्वास उत्पन्न करने से वृद्ध द्वारा प्रारंभ, स्थापित किया व्यवसाय निरंतर काम की स्थिति में चलता रहेगा।

पीढ़ी के अन्तर को मिटाने का एक वाक्य का आम उपाय है वृद्ध अपना स्वभाव बालक सा बना ले। ऐसा करना यद्यपि बड़ा कठिन है पर वृद्ध यदि बालक को अति मान, अपमान, प्रशंसा, आलोचना, बुरा-भला आदि को क्षणिक ले और सदैव प्रसन्न रहने का प्रयास करें तो जीवन के अंतिम क्षण शांति से गुजरेंगे। पीढ़ी का अंतर कम या नहीं अखरेगा।

श्रीनगर, अजमेर
(राजस्थान) 305025

दिल्ली में हुए 19वें राष्ट्रमंडल खेलों और ग्वांगझू (चीन) में हुए 16वें एशियाई खेलों में पदक जीतने वाले भारतीय महिला व पुरुष खिलाड़ियों ने दिखा दिया है कि गांव के रहने वाले युवा लड़के-लड़कियां भी किसी से कम नहीं हैं। इनमें से ज्यादातर जिमनास्टिक्स, एथलेटिक्स, कुश्ती, तीरंदाजी और वेटलिफ्टिंग में अपना नाम रोशन कर रहे हैं।

48 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक जीतने वाली सोनिया चानू मणिपुर के एक गांव की रहने वाली है। उसके पिता मामूली किसान हैं। उसके घर वालों के पास इतना पैसा नहीं था कि वे सोनिया के कैरियर बनाने के लिए किसी दूसरे इलाके में भेज सकें। सोनिया इस सपने को पूरा करने के लिए लखनऊ के स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया सेंटर में आ गई। वहां खूब मेहनत की और पदक जीतने में सफल हुई। लखनऊ में ही रहकर वेटलिफ्टिंग की प्रैक्टिस करने वाली रेनुबाला चानू भी इंफाल की रहने वाली है। वह जब लखनऊ आई थी, तो हिंदी नहीं बोल पाती थी। उसके पिता भी मणिपुर के एक गांव में खेती करते हैं। रेनु की आंखों में राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने का सपना था। उसे पता था कि यह पदक ही उसकी जिंदगी का रंग बदल सकता है। उसने दूसरी बार राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीता।

उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद जिले के रहने वाले आशीष कुमार के पिता रेलवे में चौथे दर्जे के मुलाजिम थे। कम तनखाह में वे अपने पूरे परिवार का गुजारा नहीं कर पा रहे थे। आशीष का भी मन पढ़ने के बजाय खेल में ज्यादा लगता था, इसलिए वह जिमनास्टिक्स सीखने जाने लगा। उसकी मेहनत रंग लाई और राष्ट्रमंडल खेलों में उसने जिमनास्टिक्स में वोल्ट मुकाबले में रजत पदक और फ्लोर एक्सरसाइज मुकाबले में कांस्य पदक जीता। वह भारत का पहला ऐसा जिमनास्ट बना, जिसने राष्ट्रमंडल खेलों में पदक



पिछड़ेपन को पछाड़ चमके खिलाड़ी

नरेन्द्र देवांगन

जीते। ओडिसा के रहने वाले के.रविकुमार के पिता टैक्सी ड्राइवर थे। उसके घर की माली हालत ठीक नहीं थी। इसी बीच पिता की मौत हो गई। जो आमदनी थी, वह भी बंद हो गई थी। परिवार को चलाने के लिए रवि की मां आंगनबाड़ी में टीचर बन गई। इसी बीच रवि ने पहले बॉडी बिल्डिंग शुरू की और बाद में वेटलिफ्टिंग करने लगा। खेल के दम पर ही रवि सेना में नौकरी करने लगा। इसके बाद उसका समय और खेल दोनों सुधरने लगा। राष्ट्रमंडल खेलों में 74 किलो वर्ग की फ्री स्टाइल कुश्ती में स्वर्ण पदक जीतने वाले नरसिंह यादव के पिता पंचम सिंह मुंबई में दूध बेचने का काम करते हैं। कभी-कभी नरसिंह को भी पिता के काम में हाथ बंटाना पड़ता था। नरसिंह के लिए स्वर्ण पदक जीतना किसी आश्चर्य से कम नहीं

रहा। ट्रायल्स में वे सुमित कुमार से हार चुके थे। लेकिन सुमित डोप टेस्ट में दोषी पाए गए और किस्मत नरसिंह पर मेहरबान हो गई। खराद की मशीन पर काम करने वाले पिता के बेटे गुरप्रीत सिंह ने राष्ट्रमंडल खेलों में निशानेबाजी में दो स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीता। गुरप्रीत पंजाब के एक गांव का रहने वाला है, उसके पिता भी खेती करते हैं और उनकी माली हालत अच्छी नहीं है। गुरप्रीत ने पदक जीतकर नए पिस्टल किंग के रूप में नाम रोशन किया है। गुरप्रीत के सामने अभी बहुत से टूर्नामेंट हैं, जहां उसे अपनी मेहनत से कामयाबी के नए दरवाजे खोलने हैं। ओलिम्पिक, विश्व और राष्ट्रमंडल खेलों के कांस्य पदक विजेता विजेन्द्र सिंह ने आखिर अपने पदक का रंग सुनहरा कर ही दिया। भारत के इस स्टार मुक्केबाज ने

एशिया में 75 किग्रा वर्ग में उज्बेकिस्तान के अब्बोस आतोव को परास्त कर स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। विजेन्द्र को भी इस मुकाम तक पहुंचने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा है। हरियाणा के सोनीपत जिले के रहने वाले पहलवान योगेश्वर दत्त शर्मा ने भी राष्ट्रमंडल खेलों में 60 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल किया। वह दो बार ओलंपिक में खेल चुका है। कुश्ती में ही रजत पदक जीतने वाला अनुज चौधरी भी मुजफ्फर नगर के बढ़ेरी गांव का रहने वाला है। अनुज को मेलबोर्न राष्ट्रमंडल कुश्ती चैंपियनशिप में 76 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक और कनाडा राष्ट्रमंडल खेल में 84 किग्रा वर्ग में स्वर्ण पदक मिला था।

राष्ट्रमंडल खेलों में भारत को 2 स्वर्ण पदक दिलाने वाली दीपिका का परिवार रांची से 15 किलोमीटर दूर एक गांव में रहता है। साधारण सी कमाई, घर चलाना आसान नहीं था। बामुश्किल दो समय का खाना ही हो पाता था। ऐसे में पिता ने ऑटोरिक्षा चलाना शुरू किया और मां को आया की नौकरी करनी पड़ी। गांव में दीपिका को पत्थर मारकर आम गिराने में बड़ा मजा आता था, उसकी टोली के सभी लोग उसके निशाने के कायल थे। इसी अचूक निशाने के चलते उसका चयन सरायकेला की तीरंदाजी अकादमी में हुआ। वहां जब उसने बेहतरीन प्रदर्शन किया तो उसे टाटा आर्चरी अकादमी भेज दिया गया। इसके बाद दीपिका ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसने अमरीका में यूथ वर्ल्ड आर्चरी चैंपियनशिप में गोल्ड जीता था। राष्ट्रमंडल खेल में उसने रिकर्व इवेंट में तो सोना जीता ही साथ ही टीम इवेंट में ये उपलब्धि हासिल की। राष्ट्रमंडल खेलों की कुश्ती प्रतियोगिता में सिल्वर पदक जीतने वाली निर्मला देवी हरियाणा के घिराव गांव की रहने वाली है। 48 किलोग्राम भार वर्ग की विजेता निर्मला देवी जब अपने गांव गईं, तो ढोल-नागाड़ों के साथ उसका स्वागत किया गया।

महाराष्ट्र के नासिक जिले के सबपददा गांव में पैदा हुई कविता राउत बहुत गरीब परिवार से थी। वह दूसरे खेलों में इसलिए नहीं जा सकी, क्योंकि उनमें खेलने के लिए पैसा चाहिए होता था। कविता ने एथलेटिक्स में अपना ध्यान लगाया। कविता ने नंगे पैर दौड़ लगानी शुरू की थी। उसकी मेहनत रंग लाई और राष्ट्रमंडल खेलों में 10 हजार मीटर की दौड़ में वह कांस्य पदक जीतने में कामयाब हो गई। एशियाड में कविता ने 10 हजार मीटर दौड़ में रजत और 5000 मीटर दौड़ में कांस्य जीता। डिस्कस थ्रो में कृष्णा पूनिया ने राष्ट्रमंडल खेल में स्वर्ण पदक और एशियाड कांस्य पदक जीता। रायबरेली की रहने वाली सुधा सिंह ने भी राष्ट्रमंडल खेल में दमदार प्रदर्शन किया। 3 हजार मीटर स्टीपलचेज रेस में सुधा मंडल तो नहीं जीत पाई, पर नया भारतीय रिकार्ड बनाकर अपना नाम रोशन कर दिया। लेकिन एशियाड में सुधा ने स्वर्ण पदक हासिल किया। एथलीट अश्विनी चिदानंदा अंकूजी 16वें

एशियाई खेलों में अपनी दोहरी स्वर्णिम सफलता से साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा और एमसी मैरीकॉम जैसी दिग्गज खिलाड़ियों को पीछे छोड़ भारतीय खेलों की नई क्वीन बन गई हैं। भारतीय महिला खिलाड़ियों ने एशियाई खेलों में 14 में से 5 स्वर्ण पदक जीते जिनमें से दो में अश्विनी की भूमिका रही।

असुविधाओं और अभाव को मात देकर इन खिलाड़ियों ने दिखा दिया कि उनके दम पर ही देश तरक्की कर सकता है। यह देश सदियों से इसी वजह से पीछे रहा है, क्योंकि यहां पर दलित, पिछड़ी और आदिवासी जातियों को जातीय भेदभाव और सामाजिक शोषण के चलते सामाजिक रूप से हाशिए पर रखा गया था। अब जब ऐसे लोगों को मौका मिल रहा है, तो वे अपनी काबिलीयत साबित कर आगे बढ़ रहे हैं।

नरेन्द्र फोटो कॉपी
फोस्ट - खरोरा 493225
जिला-रायपुर (छ.ग.)

मृत्यु नहीं, जीवन

एक महात्माजी जंगल से गुज़र रहे थे। अचानक सामने डाकुओं का एक दल आ खड़ा हुआ। डाकुओं के सरदार ने कड़क कर कहा कि जो भी माल-असबाब है निकालकर रख दो वरना जान से हाथ धो बैठोगे। महात्माजी ने कहा कि वो तो भिक्षा पर पलने वाला संन्यासी है उसके पास माल-असबाब कहाँ से आएगा। डाकुओं के सरदार ने अट्टहास करते हुए कहा कि यदि उसके पास कुछ भी नहीं है तो उसकी जान तो है उसे ही ले लेते हैं। महात्माजी ने कहा कि ये ठीक है तुम मेरी जान ले लो लेकिन मेरी जान लेने से पहले सामने के दरख़्त से दो पत्ते तोड़ लाओ। डाकू पत्ते तोड़ लाया और महात्माजी को देने लगा। महात्माजी ने कहा कि ये पत्ते मुझे नहीं चाहिएँ तुम इन्हें वापस पेड़ पर लगा आओ। डाकुओं के सरदार ने विचलित होते हुए कहा कि कहीं टूटे हुए पत्ते भी दोबारा पेड़ पर लग सकते हैं? यह तो प्रकृति के विरुद्ध है। महात्माजी ने समझाते हुए कहा कि यदि तुम टूटी हुई चीज़ों को जोड़ नहीं सकते तो कम से कम तोड़ो तो मत। यदि किसी को जीवन नहीं दे सकते तो कम से कम मृत्यु तो मत दो। महात्माजी की बातें सुन कर डाकू की आँखें खुल गईं और वह अपने साथियों के साथ सदा के लिए दस्युवृत्ति त्यागकर एक नेक इंसान बन गया।

● प्रेम नारायण गुप्ता
ए.डी.-26-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

बहुत काम की चीज है हिन्दी

जसविंदर शर्मा

गणेशी लाल मंदिर में सरकारी किस्म के पुजारी हैं। सारा साल तो फाके काटने पड़ते हैं। कभी-कभार धनवान जजमान मिल जाते हैं तो अच्छी आमदनी हो जाती है उनकी। श्राद्ध वाले पखवाड़े में तो गणेशी लाल को दो मिनट की भी फुर्सत नहीं मिलती। लोग पितरों को प्रसन्न करने में बहुत जल्दबाजी से काम लेते हैं। महानगर में हजारों की संख्या में श्रद्धावान लोग अभी भी हैं। ऐसे में गणेशी लाल गांव-बिरादरी से अपने लोगों की टोली बुलवा लेते हैं। उन सब को इधर-उधर दौड़ाते हैं ताकि कोई घर छूट न जाए। मंदिर में आकर दान-पुण्य करने वालों की भी कमी नहीं होती उन दिनों।

गणेशी लाल सरीखे एक और पुजारी हैं। छेदीलाल। ये महाशय हिन्दी के पुजारी हैं। महानगर में यह अपने चले-चंटों के साथ सरकारी दफ्तरों में हिन्दी करवाते हैं। इधर सरकारी दफ्तरों में हिन्दी दिवस के सालाना उत्सव उर्फ श्राद्ध के मौके पर धूमधाम से कई प्रकार के समारोह किये जाने लगे हैं। इस काम के लिए सरकार बहादुर ने प्रति दफ्तर लाखों रुपए की सहायता देने का प्रावधान किया है। ऐसे में छेदीलाल सरीखे हिन्दी के पंडितों की जजमानी खूब चल रही है। हिन्दी दिवस वाले इस पूरे सितम्बर महीने छेदीलाल बुक रहते हैं। आसपास के गावों-नगरों से अपने खास लोगों को बुला लेते हैं क्योंकि इतना बड़ा शहर और इतने अधिक दफ्तर व स्कूल, जहाँ हिन्दी में भाषण, निबन्ध, टिप्पण व क्विज जैसे कार्यक्रम हफ्तों चलते हैं। एक ही दिन में कई जगह दस-दस समारोह होते हैं। किसी को छोड़ा तो नहीं जा सकता न। ऐसे में चेलों-चंटों की पूरी एक फौज खड़ी कर रखी है छेदीलाल ने।

छेदीलाल के फंडे एकदम बिल्कुल

साफ हैं। अपने मुंह से कुछ नहीं कहते कि हिन्दी का कार्यक्रम सफल बनाने के एवज में कितने पैसे लेंगे। जैसे रतजगा या सत्संग करने वाली पार्टियां कुछ नहीं बोलती वैसे ही छेदीलाल ने पिछले दस सालों से इतनी मेहनत की हुई है कि मुंह खोले बिना ही उम्मीद से काफी ज्यादा मिल जाता है। कल बता रहे थे, 'स्टेट बैंक वालों ने हिन्दी के फंक्शन की अध्यक्षता मुझ से करवाई तो नकद रोकड़ा न देकर 'ला-पोला' का डिनर सैट दे दिया। कई नए दफ्तर या छोटे स्कूल मोमेंटो दे देते हैं मगर उन्हें बेचने या सही ठिकाने लगाने का हल भी है हमारे पास। सीधे उसी दुकान पर जाकर वापिस कर आते हैं हम लोग। बीस-तीस रुपए कट जाते हैं मगर उसके बाद हम उस संस्था को बता देते हैं कि आगे से कैश का प्रावधान ही रखें।

छेदीलाल से उत्सुकता के मारे पूछ ही बैठे कि हिन्दी दिवस पर दफ्तरों में इतने समारोह होने लगे हैं तो क्या अब हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा बन कर रहेगी। वह हंसते हुए बाले, 'यह सब लीपा-पोती है। हिन्दी पखवाड़े के विभिन्न उत्सव सम्पन्न करवाने के लिए खूब सरकारी धन मिलने लगा है। अंग्रेजी का वर्चस्व उसी तरह कायम है बल्कि अंग्रेजी स्कूलों का चलन पहले से कई गुणा हो गया है। ऐसे में एक पखवाड़ा हिन्दी के विभिन्न श्राद्ध कर देने से हिन्दी लागू होने से रही। चलो अच्छा है हम जैसे हिन्दी कराने वालों का साल का खर्च निकल आता है। कोई मरे कोई जिए, सुथरा घोल बताशे पिए।' जब तक गणेशीलाल और छेदीलाल सीखे श्राद्ध सम्पन्न करवाने वाले गुरु-घंटाल रहेंगे, धर्म और हिन्दी का भविष्य एकदम सुरक्षित है।

हिन्दी ने उन्हें मनचाही बुलन्दी पर पहुचा दिया। हिन्दी में एम.ए. करते ही

छेदीलाल की तो मानो निकल पड़ी। पूरे दफ्तर पर वह छा गए। उनकी तपस्या रंग लाई। भारत सरकार बहादुर का आदेश हुआ कि हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हरेक दफ्तर में एक हिन्दी अधिकारी होना मांगता। हिन्दी लागू करने की यह अपनी तरह की अनूठी स्कीम थी। ढूंढ-ढूंढकर हिन्दी अफसर बनाए जा रहे थे। छेदीलाल उन दिनों दफ्तर के बोर काम से उकता चुकने के बाद हिन्दी भाषा में एम ए कर रहे थे। उनकी तो लाटरी निकल पड़ी। सरकार बहादुर ने उन्हें राजपत्रित अधिकारी बना दिया।

मैं हर रोज उनसे मिलता था मगर जब से वह हिन्दी अधिकारी बने थे, उनसे मिलना कोई आसान काम नहीं रह गया था। वह हर समय हिन्दी लागू करने की मुहीम पर रहते। उन्होंने दफ्तर के अड़ियल व नामाकूल लोगों को हिन्दी सिखाने के लिए कार्यशाला शुरू की तथा विधिवत प्रशिक्षण देना शुरू किया। मुझ जैसे लोगों को बाहर से बुलवाया, भाषण करवाए तथा इस तरह हर महीने हमारी भी अच्छी-खासी आमदनी होने लगी। अब हमें हिन्दी से लगाव होने लगा।

हमें पता चला कि हिन्दी तो बहुत काम की चीज है। लाखों लोगों के लिए रोटी और मक्खन का जुगाड़ करती है यह हिन्दी। हम दिन में दो बार छेदीलाल के पास जाकर बैठने लगे। साल बाद तो हिन्दी की और भी रोचक स्कीमें आने लगी। छेदीलाल ने दफ्तर की हिन्दी की मासिक पत्रिका निकालनी शुरू की। अब उनके पास चार सफारी सूट हो गए। आरामदायक कुर्सी व बड़ा-सा मेज आ गया। तीन चार अनुवादक मिल गए।

दफ्तर में जहाँ-जहाँ अंग्रेजी में कुछ लिखा जाता था वहाँ-वहाँ हिन्दी में लिखने के लिए मुहीम तेज की जाने

लगी। मासिक पत्रिका में हिन्दी के आम बोलचाल के शब्द, दफ्तरी प्रारूप व टिप्पण वगैरा छपते थे मगर धीरे-धीरे उसमें कहानी, कविता, लेख आदि छपने लगे। रचनाओं को पारिश्रमिक तय करना हिन्दी अधिकारी के हाथ में था। अन्धे को क्या चाहिए था दो आँखें। हम तो छेदीलाल के चोटी-कट चले बन गए। हमारे शार्गिदों की संख्या भी बेतहाशा बढ़ने लगी। कुछ भी उल्टा-सीधा लिखकर हम छद्म नामों से पत्रिका में छपने लगे तथा लक्ष्मी मैया की हम पर असीम कृपा होने लगी।

अंग्रेजों के जमाने के इस दफ्तर में हिन्दी का एकदम इतना बोलबोला हो जाने के कारण जहाँ बाहर के लोग इतने खुश थे, दफ्तर के बाबुओं में भी खुशी की लहरें बहने लगी थी। सरेआम नकल लगाकर हिन्दी का छोटा-सा इम्तहान पास करने पर उन्हें ईनाम तथा खास इन्क्रीमेंट मिलने लगी। हजारों रूपयों के ईनाम तब मिलते जब वे अपने कार्य सम्बन्धी प्रारूप व टिप्पण हिन्दी में लिखते जिनकी शब्द संख्या दस हजार से ज्यादा चली जाती। हिन्दी अधिकारी का निर्णय सब मामलों में मान्य होता। हिन्दी में क्विज होने लगे, टिप्पण-प्रारूप, निबन्ध व भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की जाने लगी। सरकारी खजाने के मुंह खोल दिए गए। सब तरफ हिन्दी की फसल लहलहाने लगी। दफ्तर का मुख्य काम तो वे लोग भूलने लगे थे।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान तो यह बुखार अपनी चरम सीमा पर होता। इधर मीटिंग, उधर मीटिंग। छेदीलाल पूरे समय में नए-नए आदेश लागू करते रहते इन पन्द्रह दिनों में हाजिरी हिन्दी में लगनी चाहिए, बोर्ड, फाइलें नेमप्लेट, रबड़ की मोहरें वगैरा सब कुछ हिन्दी में हों। यहाँ तक की कोई अफसर नीचे स्टाफ के साथ सलाह-मशवरा भी करे तो भी भाषा का माध्यम हिन्दी ही रहे।

हिन्दी की एक मीटिंग में छेदीलाल हमें भी ले गए। बड़ा-सा कमरेटी रूम,

चार-चार ए.सी. लगे हुए। गोल आकार की मेज के चारों ओर आरामदेह कुर्सियां। तीन वर्गों के अफसर हाथों में आकर्षक नोट-पैड उठाए। एजेन्डा था हिन्दी को बुलन्दी पर पहुँचाना। छेदीलाल के तीन मातहत कर्मचारियों ने सब कुछ ठीक से पहले ही जमा रखा था। चाय के साथ काजू की बर्फी और समोसा था, मुर्गी छेना था तथा अच्छी कम्पनी के क्रिस्प बिस्कुट थे थोड़े मीठे, थोड़े नमकीन। छेदीलाल पहुँचे तो सभी अफसरों ने उठकर उनका स्वागत किया। उसके बाद सबसे बड़े बॉस पहुँचे। कार्यवाही शुरू हुई।

हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट पढ़ी गई। हिन्दी के व्यवहारिक प्रयोग में हुई उन्नति पिचानवे फीसदी बताई गई। पूरी रिपोर्ट पढ़ने के बाद छेदीलाल बोले, 'अब मैं महामहिम अध्यक्ष महोदय से अनुरोध करूँगा कि वे उपस्थित कर्मचारियों को हिन्दी दिवस की महिमा बताते हुए उन्हें प्रेरणा स्वरूप दिशा निर्देश दें।'

कुछ देर तक सब तरफ चुप्पी छाई रही। साहब के पी.ए. ने सारी स्थिति सम्भाली। साहब के पास जाकर कान में बोले, 'सर, आप से कहा गया कि आप फाइनल स्पीच दें।' साहब बोले, 'अंग्रेजी में बोलने के लिए मुझे माफ करें। मुझे हिन्दी कम आती है। मैं सीख रहा हूँ। मुझे इससे बहुत प्रेम है, यह हमारे देश की मदर-टंग है। अंग्रेजी अच्छी है मगर हिन्दी उससे ज्यादा अच्छी है, लागू होनी चाहिए।'

एक दो अनुभागों में कुछेक दिक्कतें थी। वहाँ की हिन्दी सम्बन्धी प्रयोग की प्रतिशतता नीचे जा रही थी। छेदीलाल ने संबंधित अधिकारियों से बात की और सबके सामने उन्हें क्रॉस-एग्जामिन किया तो पता चला कि वहाँ का स्टाफ काफी दिक्कतें झेल रहा है। कूलर छह महीने से खराब हैं। कुर्सियों के हत्ये नहीं हैं। बाथरूम से बहुत बदबू आती है। स्टेशनरी की बहुत किल्लत है। उन्हें पिछले महीने का ऑनररियम नहीं दिया गया जो हिन्दी में काम करने वालों को दिया जाता है।

बिग बॉस ने वादा किया कि सब कुछ दिया जाएगा, बस हिन्दी की प्रतिशतता में कमी न आने पाए वर्ना मुख्यालय उन्हें खींच कर रख देगा। पीछे की श्रेणी के तीन चार दरम्यानी श्रेणी के अफसर झपकियां लेने लगे थे। खैर, चाय सर्व की गई। सब काजू की बर्फी और क्रिस्प बिस्कुटों पर टूट पड़े जो कुरमुरे व मस्त-मस्त थे। कड़कड़ की सामूहिक आवाजों से स्पष्ट था कि जल्दी ही हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा बन कर रहेगी।

हम छेदीलाल के साथ ही उनके केबिन में लौटे। अब इस सारी कार्यवाही की प्रेस रिलीज भी तैयार करनी थी। उधर छेदीलाल से मिलने वालों का तांता लगा हुआ था। हर तरफ भगदड़ थी जैसे तूफान के वक्त मल्लाहों की हालत होती है। फोन पर फोन आ रहे थे। इधर दौड़ो, उधर दौड़ो। एक बार फोन हमने उठाया। उधर से एक महिला का सुरीला स्वर उभरा, 'सर जी, ट्यूशन फीस की हिन्दी क्या है?' हम बोले, 'क्या करना है आपने पूछकर?' वह चहकी, 'सर जी, वेतन बिल बना रही हूँ। आपका ही आदेश है कि सारा काम हिन्दी में करें।' मैं बोला, 'ट्यूशन फीस ही लिख डालो।'

मैं वहाँ से सिर पर पांव रखकर भागा वर्ना पागल हो जाता। कल छेदीलाल ने फोन पर बताया कि हिन्दी पखवाड़े के आयोजनों पर पचास लाख रुपए खर्च हो गए। मैंने कहा कि चलो भाई, इस बहाने दफ्तर में हिन्दी तो लागू हो गई। वह बोले 'सच मानना, सब लीपापोती है, पैसा फेंको तो लोग हिन्दी की वाह वाह बोलते हैं, आगे पीछे वही अंग्रेजी। अंग्रेजी को हटा पाना इतना आसान नहीं है। लोगों की आत्मा में अंग्रेजी रच बस गई है। अकेला मैं या भारत सरकार क्या कर सकती है।' उनका आत्मप्रलाप काफी देर चला। मुझे कुछ नहीं सूझा। मैं बोला, 'हमारा चैक तो तैयार है न।' वह बोले, 'कल आ जाइएगा।'

**5/2-डी रेल विहार, मंसादेवी
पंचकुला-134109 (हरियाणा)**

गण की उपेक्षा क्यों

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

जनतंत्र और गणतंत्र में मुख्य अंतर यह है कि जनतंत्र में जहां जनता का प्रत्यक्ष या परोक्ष शासन स्थापित होता है, वहां गणतंत्र में देश का सर्वोच्च शासक (हमारे यहां राष्ट्रपति) भी जनता द्वारा निर्वाचित होता है और आवश्यक योग्यता प्राप्त करने वाले देश के किसी भी नागरिक को इस पद के लिए निर्धारित प्रक्रिया के अनुरूप चुनाव लड़ने का अधिकार होता है। जहां तक जनतंत्र का संबंध है, हमारे यहां 15 अगस्त 1947 से ही परोक्ष जनतंत्र है। विशाल आकार के कारण अब प्रत्यक्ष जनतंत्र अपने शुद्ध रूप में राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी देश में उपलब्ध नहीं है। स्विटजरलैंड की कुछ इकाइयों में अवश्य ही प्रत्यक्ष जनतंत्र के दर्शन होते हैं, लेकिन केन्द्रीय स्तर पर वहां भी परोक्ष जनतंत्र ही है। प्रत्यक्ष जनतंत्र की 'जनमत संग्रह' तथा 'जनमत निर्णय' जैसी कुछ व्यवस्थाएं वहां अवश्य अपनायी हुई हैं। तदनुसार हमारे यहां भी अब परोक्ष जनतंत्र ही है अर्थात् जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है और वे प्रतिनिधि जनता की तरफ से शासन संचालन की नीतियों का निर्माण करते हैं, कानून बनाते हैं और शासन संचालन के लिए बनायी गयी कार्यकारिणी पर अपना नियंत्रण रखते हैं। ये जनप्रतिनिधि सही अर्थों में जनता का कितना और कैसे प्रतिनिधित्व करते हैं, यह अलग प्रश्न है, जो हमसे विश्लेषण की अपेक्षा रखता है।

गणतंत्र के रूप में देश के सर्वोच्च पदाधिकारी राष्ट्रपति का चुनाव भी ये जनप्रतिनिधि ही करते हैं, जिनमें राज्य विधान मण्डलों तथा केन्द्रीय संसद के निर्वाचित सदस्य सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार सैद्धान्तिक रूप में हमने अपने देश

में जनतंत्र और गणतंत्र दोनों के परोक्ष स्वरूपों की स्थापना की हुई है।

विश्लेषण के रूप में हम सर्वप्रथम जन प्रतिनिधियों की स्थिति का ही आकलन करें। निश्चित ही वे जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप में निर्वाचित होते हैं, लेकिन वह निर्वाचन, सहज और सरल रूप में नहीं होता। आज के दलीय जनतंत्र में सबसे पहले तो किसी राजनीतिक दल के टिकट की ही बात करें तो वहां पर परिवारवाद, धनबल और भुजबल का पूरा प्रभाव होता है। जो व्यक्ति किसी बड़े राजनेता के परिवार से सम्बन्ध रखता हो या पार्टी के चुनाव-कोष में अधिक से अधिक धन देने की क्षमता रखता हो या अपने भुजबल से मतदाताओं को डरा धमकाकर उनके मत प्राप्त करने का साहस रखता हो, उसी के टिकट प्राप्त करने की अधिक सम्भावना रहती है। आम आदमी टिकट प्राप्त करने की इच्छा तो रख सकता है, लेकिन उसे वास्तव में टिकट प्राप्त हो जायेगा, इसकी सम्भावना कम ही है। वैसे भी राजनीतिक दलों को अपना अस्तित्व बनाये रखने और चुनाव लड़ने के लिए धनपतियों की तो आवश्यकता होती ही है, गुंडा तत्वों से भी उसे मेलजोल बनाकर रखना पड़ता है। इसलिए पूंजीपतियों के साथ ही पार्टी को अनेक अपराधी तत्वों को भी टिकट देने पड़ते हैं। यही कारण है कि हमारी जनप्रतिनिधि संस्थाओं में अपराधियों की काफी बड़ी संख्या रहती है, जो जनप्रतिनिधि के रूप में अपने देश के भाग्य का निर्माण करते हैं। पूंजीपतियों का दबदबा तो स्पष्ट है ही। सभी राजनीतिक दलों में यह स्थिति कमोबेश इसी प्रकार की है। यही एक मुख्य कारण है कि राजनीति की सही समझबूझ रखने वाले अनेक व्यक्ति चुनाव के समय पर मतदान केन्द्रों से दूर ही रहते हैं और मतदान का प्रतिशत सामान्यतः



60 प्रतिशत के आस पास ही बना रहता है। फिर राजनीतिक दलों के उम्मीदवारों तथा निर्दलीय उम्मीदवारों की संख्या इतनी अधिक रहती है कि यह 60 प्रतिशत मत भी उनमें इस प्रकार बंट जाते हैं कि 30-40 प्रतिशत मत प्राप्त करने वाला व्यक्ति विजय प्राप्त कर लेता है। कुल मतदाताओं की तुलना में अध्ययन किया जाए तो केन्द्र या किसी भी राज्य की सरकार 15-20 प्रतिशत मतदाताओं का प्रतिनिधित्व ही प्राप्त कर पाती है। मतदान के समय राजनीतिक दल जिस प्रकार से आम मतदाताओं को झूठे आश्वासन देकर, जातीयता और साम्प्रदायिकता की भावना को उभारकर अपने बाहुबलियों से डरा धमकाकर तथा कहीं पर वस्त्र या भोजन बांटकर या शराब की बोटलें बांटकर उनकी बुद्धि को कुंठित कर देते हैं और इस प्रकार उनसे मत झटक लेते हैं। इससे इन चुनावों की उपयोगिता पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। ये चुनावी उम्मीदवार चुनाव से पहले ही अपने आपको पूंजीपतियों तथा गुण्डा तत्वों के पास गिरवी रख देते हैं, तब उनसे सही अर्थों में देश के शासन संचालन और आम जनता के हित की अपेक्षा कैसे की जा सकती है ?

इस समय देश में भ्रष्टाचार का जो भयानक बोलबाला है, उसके पीछे भी मुख्यतः यह व्यवस्था ही उत्तरदायी है। विजेता उम्मीदवार अधिक से अधिक धन

एकत्रित करके न केवल अपने चुनावी खर्च को पूरा करना चाहता है, अपितु आगे के लिए भी अपने पास धन एकत्रित करना चाहता है। चूंकि साधारणतया राजनेताओं के विरुद्ध भ्रष्टाचार के मुकदमे कम दर्ज होते हैं और अगर दर्ज हो भी जाते हैं तो उन पर होहल्ला करने से अधिक कार्यवाही नहीं होती, इसलिए अधिकांशतः वे निश्चिंत होकर भ्रष्टाचार करते रहते हैं और आम जनता का शोषण करके धन एकत्रित करते रहते हैं। सदन में वे आम जनता के हित की बात ऊपर से भले ही करलें, लेकिन वास्तव में तो जनहित की बात यदाकदा ही करते हैं। उनके मन की भावना तो स्वयं के हित की ही रहती है। राजनेताओं को भ्रष्टाचार में उलझे देखकर उनके अधीनस्थ अधिकारी भी खुलेआम भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं। वास्तव में भ्रष्टाचार की गंगोत्री ऊपर से नीचे की तरफ बहती है। जब ऊपर का अधिकारी या मंत्री भ्रष्टाचार में लिप्त रहता है तो उसके अधीन कार्य करने वाला अधिकारी निश्चिंत होकर आम जनता का शोषण करता है। यदि कभी कोई धरपकड़ होती है तो उससे भी कोई अधिक फर्क नहीं पड़ता। हमारे यहां कानून व्यवस्था इतनी लचर है कि एक ही व्यक्ति बार-बार अपराध करता है, पकड़ा जाता है और बार-बार उसकी जमानत होती रहती है। इस क्रम में बरसों गुजर जाते हैं और धीरे-धीरे बात आयी-गयी हो जाती है। यही स्थिति देश में निरन्तर बढ़ रहे अपराधों की है। अपराधी कानून के प्रति लापरवाह होता जा रहा है और निश्चिंत भी। अपनी सुरक्षा के लिए उसे यदि किसी की आवश्यकता होती है तो एक अदद बड़े नेता की। उसके बाद उस पर किसी खतरे की सामान्यतः आशंका नहीं रहती। भ्रष्ट राजनेताओं तथा अधिकारियों ने सम्पूर्ण तंत्र को लुंजपुंज बनाया हुआ है।

हालात को देखकर कभी-कभी मन में यह प्रश्न कौंधता है कि क्या यही वह स्वतंत्रता है, जिसके लिए स्वाधीनता संघर्ष में हमारे राष्ट्रभक्तों ने अनेक कष्ट सहे और अपनी कुर्बानियां दी। निश्चित ही

उनकी कल्पना में ऐसा भ्रष्ट और अनाचारों से युक्त देश नहीं था। उन्होंने कभी नहीं सोचा होगा कि स्वतंत्र भारत में शासन-संचालक राजनेता भ्रष्टाचार के गर्त में आंकठ डूब जायेगा। अपराधों का ग्राफ निरन्तर बढ़ता रहेगा, महिलाओं का सम्मान खतरे में बना रहेगा, आम जनता भूख और बेकारी से त्रस्त रहेगी तथा चन्द लोग स्वच्छ धवल वस्त्र धारण करके अपने दोनों हाथों से उसके धन, सम्पत्ति और अस्मत् को लूटते रहेंगे। इन दिनों बड़े धुंआधार और आदर्श की बरसात करते भाषण दिये जाते हैं, लेकिन यही लोग व्यवहार में आदर्श की धज्जियां उड़ाते रहते हैं। निश्चित ही यह सब, राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले राष्ट्रभक्तों और शहीदों का घोर अपमान है। मगर इसका प्रतिकार कैसे हो? **कौन सुधारेगा यह सब? इसी स्थिति से प्रभावित होकर हमारी अदालत ने यह चेतावनी दी थी कि भ्रष्ट लोग अपने को सुधारें, नहीं तो लोग उन्हें दौड़ा-दौड़ा कर मारेंगे। निश्चित ही समय रहते अराजकता और हिंसा की उस स्थिति से हमें बचना होगा और अदालत की चेतावनी का सम्मान करना होगा।**

गणतंत्र के अध्यक्ष, राष्ट्रपति के लिए भी संविधान निर्माताओं ने यह अपेक्षा की थी कि इस पद पर विशेष विद्वान, दार्शनिक, विज्ञानवेत्ता अथवा ऐसे समाजसेवी व्यक्ति प्रतिष्ठित होंगे, जिनकी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष ख्याति हो तथा जिनके प्रति व्यक्ति अनायास ही नतमस्तक हो जाते हों। इससे स्वभावतः सम्पूर्ण देश में अनुशासन और सही व्यवस्था की प्रेरणा प्राप्त होने की भी सम्भावना थी। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन तथा डॉ. अब्दुल कलाम जैसे महामहिमों ने इस पद की सार्थकता भी प्रदान की। संविधान निर्माताओं ने यह कभी नहीं सोचा था कि इस महान् पद पर भी राजनीति घुसपैठ करने लगेगी। लेकिन राजनेताओं ने जब सम्पूर्ण देश की व्यवस्था को ही राजनीतिमय बना डाला तो इसकी भी वे उपेक्षा कैसे करते ?

प्रतिवर्ष हम गणतंत्र दिवस मनाते हैं। लालकिले पर राष्ट्रीय ध्वज लहराता है। परेड होती है और ध्वज को सलामी भी दी जाती है, अलग-अलग राज्यों की झांकियां निकलती हैं, जिनमें हमारी संस्कृति की विविधता झलकती है। अलग-अलग राज्यों में भी विभिन्न स्तरों पर इसी प्रकार के आयोजन होते हैं, जो हमारी नयी सन्तति को याद दिलाते हैं कि आज गणतंत्र है। इन आयोजनों में कड़कती ठंड में खुले आसमान के नीचे उपेक्षित सी आम जनता भी सम्मिलित होती है, लेकिन उनमें सामान्यतः तमाशगिरी की ही भावना होती है। राष्ट्रीय भावना ओझल सी रहती है। उसके विचारों में केवल उस राजनेता या अधिकारी का व्यक्तित्व घूमता रहता है, जो राष्ट्रीय ध्वज को लहराता है। गणतंत्र के आयोजनों में राजनेता रहते हैं, उनकी राजनीति रहती है, चमन-दमक और भव्यता रहती है, लुंजपुंज तन्त्र भी वहां रहता है, लेकिन गण तथा उसकी भावनाएं वहां पर उपेक्षित से रहते हैं।

प्रश्न उठता है समस्या का समाधान क्या हो ? गणतंत्र में 'गण' को 'तंत्र' के साथ कैसे जोड़ें? इसका उपाय है व्यवस्था में आमूल परिवर्तन। निर्वाचन व्यवस्था में सुधार करके उसे पूंजीपतियों के चंगुल से बचाए, चुनाव का खर्च सरकारी खजाने से किया जाए, भ्रष्ट राजनेताओं तथा अधिकारियों को सत्ता से निष्कासित करके कारागार में डाला जाए, बढ़ते राजनीतिक दल और चुनावी उम्मीदवारों की संख्या को नियंत्रित किया जाए, कानूनों में परिवर्तन करके उन्हें सख्त बनाया जाए और आम जनता में यह भावना पैदा की जाए कि शासन की प्रत्येक कमी के लिए वह स्वयं भी उत्तरदायी है, जो ऐसे गलत व्यक्तियों को चुनकर भेजती है। इसके लिए जन जागरण आवश्यक है और यह कार्य केवल मीडिया बखूबी कर सकता है। मीडिया को भी उत्तरदायी मजबूत और रचनात्मक बनाने के लिए कानूनों में सुधार किया जाना चाहिए।

10/611, मानसरोवर,
जयपुर - 302020 (राजस्थान)

सात्विक भोजन है शाकाहार

डॉ. कुसुम लूणिया

अहिंसा जैसे आध्यात्मिक विषय पर शाकाहारी की चर्चा क्यों करें? अहिंसा समवाय के मंच से हम इस विषय पर इसलिए चिंतन-मंथन कर पा रहे हैं क्योंकि हम मनुष्य हैं, जीवित प्राणी हैं। हमारे जीवन का स्रोत है प्राण, यह शरीर की विद्युत ऊर्जा है। विद्युत ऊर्जा समाप्त होते ही जीवन की बत्ती गुल हो जाती है। प्राण का स्रोत है पर्याप्ति। पर्याप्ति का मूल है आहार पर्याप्ति। मनुष्य बाहर से कैसे पुद्गल परमाणुओं को लेता है यह मनुष्य पर निर्भर है।

सही मायने में मनुष्य के लिए उत्तम आहार वही है जो आधि, व्याधि व उपाधि से दूर स्वस्थ मन व स्वस्थ शरीर निर्माण में सहयोगी हो। स्वस्थ मन से ही शरीर स्वस्थ रहता है तथा स्वस्थ शरीर में ही विधायक भावों का जन्म होता है। स्वस्थ सकारात्मक भावों द्वारा अंतःस्रावी ग्रेन्थियों से स्रावित स्त्रावों के फलस्वरूप मनुष्य का स्वास्थ्य श्रेष्ठ बनता है। **आवेश-आवेग मुक्त स्वस्थ मन, स्वस्थ भाव व स्वस्थ शरीर निर्माण में सात्विक आहार की अहम भूमिका है।**

व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रस्थान करते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि वर्तमान युगीन जीवन शैली ने अनेक ऐसी समस्याओं को जन्म दिया है जिनसे पूरी मानव जाति त्रस्त है। जीवन शैली में बदलाव लाये बिना उन समस्याओं से उबरना मुश्किल है। जीवन शैली का मुख्य घटक होता है आहार या भोजन। **जिनकी जीवन शैली मांसाहार प्रधान है, उन लोगों की तुलना में निरामिष भोजी या शाकाहारी लोगों का जीवन अधिक स्वस्थ है यह बात आज सर्वमान्य हो गई है।** डॉ. डीन ओर्नीश जैसे विख्यात डॉक्टरों ने प्रयोग

सिद्ध करके दिखाया कि हित, मित व सात्विक भोजन वाली जीवन शैली अनेक प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं का बचाव एवं उपचार है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि **प्राणी जगत के सर्वोत्कृष्ट जीव मनुष्य की श्रेष्ठता का मूल है शाकाहार।** शाकाहार अर्थात् 'अहिंसक आहार' मांसाहार अर्थात् 'हिंसक आहार' भारत की आध्यात्मिक संस्कृति एवं चिंतन में मांसाहार को वर्ज्य और शाकाहार को विहित माना गया है। अहिंसा समवाय के मंच पर अहिंसात्मक दृष्टिकोण से विवेचना करें तो पायेंगे कि अहिंसा का दर्शन अति सूक्ष्म है। शाकाहार जिसमें वनस्पति की हिंसा व मांसाहार जिनमें प्राणियों की हिंसा अनिवार्य है इन दोनों का तारतम्य समझने के लिए दर्शन की गहराई में उतरना पड़ता है।

जैन दर्शन में मन, वचन व काया से कृतकारित व अनुमोदित तीनों कोटि हिंसा में आती है। मांसाहार करना, करवाना या अनुमोदन तीनों ही हिंसा है। इसलिए संसार के सभी महापुरुषों ने मांसाहार की निन्दा की है। संसार के प्रसिद्ध महापुरुष, चिंतक, वैज्ञानिक, कलाकार, कवि, लेखक जैसे पाइथा गोरस, प्लूटार्क, प्लांटीनस, सर आइजक न्यूटन, डॉक्टर एनीबेसेन्ट, अलबर्ट आइन्स्टीन, टाल्सटाय, कवि मिल्टन पोप, शैले, सुकरात व यूनानी, दार्शनिक अरस्तू सभी शाकाहारी थे। **'अहिंसक आहार' शाकाहार ने ही उनको अहिंसा, सहिष्णुता, दयालुता व सृजनात्मकता आदि सद्गुणों से विभूषित किया था।**

महान चित्रकार, विचारक और वैज्ञानिक लियो नार्डी दी विंची भी कट्टर

अहिंसक आहारी थे। उन्हें आधुनिक पश्चिमी सभ्यता का प्रथम अहिंसक आहारी कहा जाता है। प्रस्तुत उदाहरण शाकाहार अहिंसा के समन्वय का सकारात्मक पक्ष आपके समक्ष प्रस्तुत करता है।

दी विंची ने तो यहां तक कहा है कि 'प्रकृति नहीं चाहती कि हर एक जीव दूसरे का घात करें। भेड़ों-बकरियों, गायों आदि को खाने के अन्याय के प्रति वह घृणा प्रकट करते हुए कहता था कि एक समय आयेगा जब मनुष्य पशुओं के वध को भी उसी प्रकार का दुष्ट कर्म 'हत्या' समझेगा जिस प्रकार आज मनुष्य को हत्यारा समझा जाता है। सेन्ट मैथ्यू तथा सेंट पाल भी मांसाहार को धार्मिक पतन का सूचक व शाकाहार को धर्म विहित आहार मानते थे। **यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस के शिष्य रोमन कवि सैनका जब शाकाहारी बने तब उन्हें न केवल सुखद आश्चर्यजनक अनुभव हुआ बल्कि उनका मन पहले से भी अधिक स्वस्थ, सावधान, समर्थ व शान्त हो गया था।** यह तथ्य सिद्ध करता है कि अहिंसा व शाकाहार का कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

प्रबल आत्मबल से ही शाकाहार द्वारा अहिंसा की अनुपालना हो सकती है। जॉर्ज बर्नाड-शॉ से डॉक्टरों ने कहा आप मांसाहार नहीं करेंगे तो मर जायेंगे। बर्नाड-शॉ ने कहा "जानवर मेरे दोस्त हैं उन्हें मैं खा नहीं सकता। मांसाहार के बजाय मैं मृत्यु को गले लगाना ज्यादा पसन्द करूंगा।" ऐसा ही उदाहरण अहिंसादूत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का है। बच्चे की असाध्य बिमारी पर डॉक्टरों की पुरजोर सलाह के बावजूद उन्होंने मांस का सूप नहीं दिया, और देखिये अहिंसा में दृढ़निष्ठा का चमत्कार, दोनों न केवल बचें बल्कि स्वस्थ भी हुए। अतः हम कह सकते हैं

“शाकाहार के प्रयोग से, मिट जाये सब भ्रम।

आत्मा तो निर्मल बने, बन्धन घन घाती कर्म।।”

इस प्रकार स्पष्ट है कि विश्व बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत: करुणा व दया से सराबोर अहिंसक मानव का आहार शाकाहार ही होता है। शाकाहारी व्यक्ति का जीवन आत्म-केन्द्रित होता है इसके केन्द्र में मानवीय मूल्य होते हैं जिसका व्यापक परिणाम होता है, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, विश्व शान्ति, पर्यावरण सुरक्षा व जीवजगत को अभयदान। दूसरी ओर मांसाहार नैतिक व आध्यात्मिक पतन का कारण होता है। क्योंकि मांसाहारी व्यक्ति की जीवन शैली द्रव्य के चारों ओर घूमती है, इस भौतिकवादी जीवन पद्धति का अंततः परिणाम होता है घोर हिंसा, विनाश।

अहिंसा अवतार भगवान महावीर ने मनुष्य की वृत्तियों का अध्ययन कर उनको तीन कोटियों में विभक्त किया 1. महेच्छ, 2. अल्पेक्ष, 3. इच्छाजयी। प्रथम कोटि में महाआरंभ अर्थात् महाहिंसा में लिप्त मांसाहारी मनुष्य है, दूसरी कोटि में अल्पेक्ष अर्थात् आवश्यक हिंसास्त (जितनी जीवन यापन को आवश्यक हो) व्यक्ति है और तीसरे पूर्णतः अहिंसक अर्थात् इच्छाजयी ‘साधु पुरुष रूप’ मनुष्य हैं।

आज का अर्थशास्त्र कहता है इच्छा बढ़ाओ, भोगविलास बढ़ाओ। मांसाहार का अर्थशास्त्र हिंसा, क्रूरता, रक्तपात अपव्यय, अपराध व अमानवीयता का अर्थशास्त्र है। अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से शाकाहार व मांसाहार की तुलना करें तो पायेंगे कि

● अण्डे से प्राप्त 1 ग्राम प्रोटीन की कीमत है 14 पैसे।

● गेहूं से प्राप्त 1 ग्राम प्रोटीन की कीमत है 4 पैसे।

● दालों से प्राप्त 1 ग्राम प्रोटीन की कीमत है 3 पैसे।

● सोयाबीन से प्राप्त 1 ग्राम प्रोटीन की कीमत है 2 पैसे।

ऊर्जा की दृष्टि से कैलोरीज से देखें तो 100 कैलोरीज पर व्यय आता है

● अण्डे से 90 पैसे ● गेहू से 9 पैसे

● दालों से 9 पैसे ● सोयाबीन से 5 पैसे

जहां एक किलो गेहूं के लिए 50

गैलन जल चाहिए वहीं एक किलो गोमांस के लिए 10,000 गैलन जल चाहिए।

अमेरिका में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार एक एकड़ भूमि से लगभग 20,000

किलो आलू का उत्पादन किया जा सकता है। वहीं उतनी भूमि से गौमांस सिर्फ

125 किलो मिल सकता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जहां एक शाकाहारी 0.72

एकड़ भूमि से अपना जीवन यापन कर सकता है वहीं मांसाहारी के लिए 1.63

एकड़ जमीन चाहिए। शाकाहार व मांसाहार में जलकायिक जीवों की हिंसा

और पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का तुलनात्मक विवरण सामने है, फैसला

आपको करना है कि हिंसा कम किस आहार से होती है और कौन-सा आहार

अपनाने का संदेश मानवता के नाते हमें पूरे विश्व में फैलाना है।

यहां एक सामान्य प्रश्न समीचीन है कि जब शाकाहार ‘अहिंसक आहार’ इतना

फायदेमंद है तो विश्व की बहुसंख्य आबादी मांसाहारी क्यों है? इसका उत्तर है कि

मानवीय दुर्बलताएं सुविधावाद की ओर झुकती है। जीभ की लोलुपता मनुष्यों को

मांसाहार से विमुख नहीं होने देती, लेकिन अब शाकाहार आंदोलन व प्रतिवर्ष

शाकाहारियों की बढ़ती संख्या एक शुभ संकेत है। ‘मिंटेल कंज्यूमर इंटेलेजेंस’ के

अनुमान के अनुसार 1996 में अमेरिका में शाकाहार का कुल बाजार 31 करोड़ का

था, वहीं 2002 तक 1.5 अरब का हो गया। सन् 2006 तक यह बाजार 2.8

अरब तक का हो जाएगा। आंकड़ों के अनुसार इस समय अमेरिका में एक करोड़

से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जिन्होंने शाकाहार

अपना लिया है। सिर्फ अमेरिका में ही नहीं शाकाहार की मजबूत जड़ें यूरोप में भी पहुंच चुकी है। यूरोपीय देशों में सबसे अधिक शाकाहारी ब्रिटेन में, दूसरे स्थान पर जर्मनी में, फिर नीदरलैंड व बेल्जियम में हैं। ब्रिटेन में लगातार यह संख्या बढ़ रही है।

वर्तमान में शाकाहारी से ज्यादा 100 प्रतिशत शाकाहारी ‘वीगन’ बनना

पसंद किया जा रहा है। सम्पूर्ण शाकाहारी, दूध, दूध से बने उत्पाद जिलेटिन,

आइसक्रीम, पशु-पक्षी आधारित खाद्य-पदार्थों का त्याग कर रहे हैं। सिल्क,

रेशम, ऊनी व चमड़े आदि पशुओं की हिंसा या पीड़ा से प्राप्त कोई भी पदार्थ

जिस उत्पाद में मिला हो ‘वीगन’ ऐसे पदार्थों का उपयोग नहीं करते जैसे

दूध-पेस्ट, सेविंग-क्रीम, कस्टर्ड-पाउडर व सौन्दर्य प्रसाधन आदि।

अहिंसक चेतना जागरण हेतु शाकाहार प्रसार के लिए मांसाहार निरोध की दिशा

में संकल्प चेतना का जागरण, भावना का प्रयोग, प्रेक्षाध्यान, मैत्री व करुणा की

अनुप्रेक्षा व अनेकानेक उपाय प्रभावकारी हो सकते हैं, किन्तु सबसे महत्वपूर्ण कदम

होगा अहिंसा प्रशिक्षण। समग्र मानस परिष्कार व बदलाव अहिंसा प्रशिक्षण से

ही घटित हो सकता है। लाखों डालर हिंसा प्रशिक्षण की बजाय अहिंसा प्रशिक्षण

में लगाये जायें तो विश्व की कोई ताकत शाकाहार प्रसार नहीं रोक सकती।

शाकाहारी व्यक्ति हिंसा में मांसाहारियों की तुलना में कम लिप्त होगा। अतः यह

कदम विश्व शान्ति की दिशा में उठा प्रभावी कदम होगा। आइये! सब मिल संकल्प करें

सात्विक, पथ्य, सस्ता, सुलभ, है ये शाकाहार।

मांसाहार का त्याग कर/करवा, करें आत्म उद्धार।।

बी/66 सूर्य नगर, चन्द्र नगर गाजियाबाद (उ. प्र.)

मधुमेह और प्रेक्षा चिकित्सा :1:

मुनि किशनलाल

इक्कीसवीं सदी में मनुष्य के रहन-सहन व आहार-विहार में जिस द्रुतगति से पाश्चात्य संस्कृति का समावेश हो गया है, उससे भारतीय संस्कृति धीरे-धीरे स्वयं की पहचान खोती जा रही है। फास्ट-फूड, अति गरिष्ठ भोजन, अति मिष्ठान का सेवन, मद्यपान व रासायनिक पेय पदार्थों का प्रचलन तथा व्यस्त जीवन शैली की बदौलत मनुष्य शरीर बीमार होता जा रहा है।

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि आज विश्व में 15 करोड़ 70 लाख लोग मधुमेह रोग से पीड़ित हैं। अकेले भारत में ही लगभग 5 करोड़ व्यक्ति मधुमेह रोग से आक्रान्त हैं व अनुमान है कि 2010 तक इस रोग के रोगी सबसे ज्यादा भारत में ही होंगे। अनुमान यह भी है कि देश के प्रति एक हजार बच्चों में से एक बच्चा मधुमेह से पीड़ित है, जबकि पहले ये रोग 40-45 वर्ष की आयु के बाद होता था।

मधुमेह रोग के बारे में सदियों पहले भी लोगों को जानकारी थी। मधु का अर्थ है – शहद। मेह का अर्थ है- मूत्र के साथ बहना। शब्द ग्रीक भाषा के 'डाइबेनीन' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ होता है 'सायफन' यानि 'बहना'।

मधुमेह के कारण

हमारे भोजन में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज लवण एवं जल तत्त्व मुख्य हैं। जो भी भोजन हम करते हैं वह छोटी आंत द्वारा अवशोषित होता है। पाचक एंजाइम जो आमाशय, आंतों एवं अग्नाशय (पैंक्रियाज) ग्रन्थि से निकलते हैं, वे भोजन में मिलकर उसे पाचन लायक बनाते हैं। कार्बोहाइड्रेट, ग्लूकोज (शर्करा) में परिवर्तित हो जाता है, जिसे छोटी आंत द्वारा अवशोषित कर रक्त में पहुँचाया जाता है। रक्त के साथ बहकर यह शर्करा प्रत्येक कोशिका तक पहुँचती है। कोशिका के भीतर इस शर्करा का उपयोग ऊर्जा उत्पादन के लिए किया जाता है। ऊर्जा उत्पादन की प्रक्रिया में इन्सुलिन हार्मोन एक उत्प्रेरक का कार्य करता है।

हर सामान्य व्यक्ति के रक्त में शुगर (शर्करा) होती है। खाली पेट के समय रक्त में शुगर का स्तर 100 मि.ग्रा./डेसी लीटर से कम होता है। अग्नाशय (पैंक्रियाज) से इंसुलिन हॉर्मोन निकलता है, जो रक्त में शुगर (शर्करा) की मात्रा को नियंत्रित रखता है।

शरीर में इन्सुलिन की मात्रा रक्त में शुगर (शर्करा) के स्तर को नियंत्रित करती है। यदि शरीर में इन्सुलिन की मात्रा कम होती है तो रक्त में उपस्थित शुगर (शर्करा) का पूर्ण उपयोग ऊर्जा उत्पादन में नहीं हो पाएगा और यह अतिरिक्त शर्करा रक्त के साथ शरीर में बहती रहेगी और

किडनी द्वारा रक्त शोधन प्रक्रिया से यह अतिरिक्त शर्करा रक्त से निकल कर मूत्र के द्वारा शरीर से बाहर चली जाएगी। शर्करा का मूत्र द्वारा विसर्जन होने से तथा ऊर्जा उत्पादन की प्रक्रिया बाधित होने के कारण रोगी को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिल पाती है, जिसके परिणाम स्वरूप रोगी कमजोरी का अनुभव करने लगता है। हमारे शरीर में इन्सुलिन का उत्पादन अग्नाशय (पैंक्रियाज) ग्रन्थि के द्वारा किया जाता है। यदि यह ग्रन्थि काम करना बन्द कर दे अथवा इसके कार्य में शिथिलता आ जाए अथवा त्रुटिपूर्ण इन्सुलिन का स्राव होने लगे तो शरीर में इन्सुलिन की मात्रा भी असंतुलित होती है और इन्सुलिन होते हुए भी इसकी गुणवत्ता खराब होने के कारण रक्त में शुगर की मात्रा का नियन्त्रण बिगड़ने लगता है और परिणाम मधुमेह के रूप में हमारे सामने आता है।

मधुमेह के प्रकार

मधुमेह रोग (डायबिटीज) मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है-

1. टाईप-एक : इंसुलिन निर्भर मधुमेह एवं
2. टाईप-दो : बिना इंसुलिन निर्भर

इंसुलिन निर्भर मधुमेह

इस प्रकार का मधुमेह बच्चों में सत्रह से 30 वर्ष तक की उम्र में होता है। कभी-कभी वयस्क लोगों में भी यह रोग पाया जाता है। शरीर में इन्सुलिन की आपूर्ति तथा इंसुलिन की मात्रा को नियंत्रित करने के लिए बाहर से अतिरिक्त इन्सुलिन इंजेक्शन के द्वारा शरीर में डाला जाता है। इसलिए इसे आई.डी.डी.एम. कहते हैं। बिना पर्याप्त इंसुलिन के मरीज बेहोश हो जाता है और कोमा में चला जाता है। यह स्थिति 'डायबिटिक कोमा' कहलाती है। ऐसा कहते हैं कि वायरस जनित बीमारियों या अन्य कारणों से पैंक्रियाज ग्रन्थि क्षतिग्रस्त हो जाती है या कार्य करना बन्द कर देती है।

बिना इंसुलिन निर्भर मधुमेह

यह बीमारी 'इंसुलिन निर्भर मधुमेह' की तुलना में अधिक गंभीर होती है। सब प्रकार के मधुमेह रोगियों में से दो-तिहाई रोगी बिना इंसुलिन निर्भर मधुमेह के होते हैं। शरीर में इंसुलिन हॉर्मोन तो है, परन्तु -

- इंसुलिन हॉर्मोन का प्रयोग करने वाली कोशिकाएं इंसुलिन का उपयोग करने में असमर्थ हो जाती हैं तथा खासतौर से 'मस्कल' व 'फैट टिस्सू' को प्रभावित करती हैं।

- इस हॉर्मोन का असर ही नहीं होता। इंसुलिन का उपयोग करने वाली कोशिकाओं की असमर्थता के कारण शरीर में इंसुलिन मात्रा इतनी अधिक हो जाती है कि रोगी को बाहर से इंसुलिन लेने की जरूरत नहीं पड़ती। इसीलिए

इसे नॉन-इंसुलिन डिपेंडेंट डायबिटीज या एन.आई.डी.डी. एम. कहते हैं। यह भी दो प्रकार की होती है - (1) वे व्यक्ति, जो मोटे नहीं हैं। (2) वे व्यक्ति जो मोटे हैं।

(1) जो व्यक्ति मोटे नहीं होते, उनमें डायबिटीज को "मैच्योरिटी ओनसेट डायबिटीज" अर्थात् परिपक्व अवस्था में मधुमेह कहते हैं। यह खान-पान पर नियंत्रण करने से या दवाई खाने से ठीक हो सकता है।

(2) वे व्यक्ति जो मोटे हैं, उनके शरीर के अन्दर पैदा होने वाली इंसुलिन का असर कम हो जाता है। इंसुलिन रेसिस्टेंस या इंसुलिन तो बन रही है, परन्तु उसका असर नहीं हो पाता है। इन लोगों में चरबी पेट एवं कमर के आस-पास जमा हो जाती है।

मधुमेह के लक्षण

1. भूख अधिक लगना,
2. वजन कम होना,
3. पेशाब बार-बार और अधिक मात्रा में आना, शरीर में पानी की कमी हो जाना। इसे 'डायबिटीज इनसीडियस' कहते हैं।
4. थकान एवं शिथिलता,
5. खुजली, शरीर के अन्दर वाले हिस्सों (जननांगों), जांघों और पेशाब की जगह पर संक्रमण व खुजली होना,
6. आँखों से धुंधला दिखाई देना और चश्मे के नम्बर बढ़ना,
7. फोड़े-फुन्सियों का होना, पैर व टाँगों का सुन्न हो जाना और चींटियां चलना जैसा महसूस होना,
8. पिंडलियों में दर्द होना, रात में सोते या दिन में चलते-चलते पिंडलियों में कढवल (बांयटा) पड़ना,
9. कई बार चोट लग जाने या जूतों के काटने से हुआ घाव लम्बे समय तक बना रहना,
10. व्यक्ति के मुंह से अजीब सी गंध आना,
11. रक्त चाप कम होना,

मधुमेह के रोगियों को अन्य रोगों की संभावना

1. दिल का दौरा (हार्ट अटैक),
2. दौरा पड़ना (स्ट्रोक) या पक्षाघात,
3. बार-बार संक्रमण (इनफैक्सन) होना,
4. आँखों की बीमारी,
5. यौन समस्याएं,
6. गुर्दे की बीमारी

निम्न स्थितियों में मधुमेह होने की संभावना बढ़ जाती है।

1. अधिक उम्र, मोटापा एवं आरामपरस्त लोगों में,
2. उन महिलाओं में जिनको गर्भधारण के समय मधुमेह हो रहा हो,
3. जिनको उच्च रक्तचाप हो एवं रक्त में चर्बी की मात्रा अधिक हो,
4. जिनके वंश में (माता-पिता या पिछली पीढ़ियों में) किसी को मधुमेह हो, (आनुवांशिकता),

5. जिनका औसत वजन 20 प्रतिशत अधिक हो,
6. उन सभी लोगों को जिनको कम उम्र में उच्च रक्तचाप या अन्य हृदय रोग हों,
7. उनको जिनके जख्म जल्दी नहीं भरते हों,

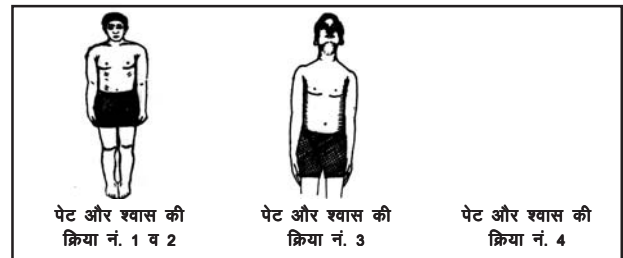
मधुमेह की प्रेक्षा चिकित्सा

1. **आसन**— पेट और श्वास की दस क्रियाएं, उत्तानपादासन, इष्टवंदन, अर्द्धमत्स्येन्द्रासन, तिर्यक भुजंगासन, कटि आसन। 30 मिनट।
2. **प्राणायाम**— नाड़ी शोधन, अनुलोम-विलोम, सूर्यभेदी। 5 मिनट।
3. **प्रेक्षा**—अग्न्याशय (पैंक्रियाज) की प्रेक्षा। 10 मिनट।
4. **अनुप्रेक्षा**—अग्न्याशय की स्वस्थता का सुझाव - 'मेरा अग्न्याशय स्वस्थ हो रहा है।' 15 मिनट।
5. **जप**—'णमो लोए सव्वसाहृणं'। 10 मिनट।
6. **तप**—चीनी और चीनी से बने पदार्थों का वर्जन। आलू, चावल व स्टार्च बनाने वाले पदार्थों का वर्जन। मीठे फलों का वर्जन। सप्ताह में एक दिन एकासन या उपवास करें।
7. **मुद्रा** — प्राण मुद्रा, अपान मुद्रा।

आसन - (1) पेट और श्वास की दस क्रियाएं—श्वास की क्रिया का सम्यक् होना आवश्यक है। सामान्यतः श्वास-प्रश्वास की क्रिया को अधिकतर लोग उल्टा करने लगते हैं। जो तनाव-ग्रस्त हैं उनका श्वास-प्रश्वास उल्टा चलने लगता है। पेट और श्वास की दस क्रियाओं में जहां श्वास-क्रिया ठीक होती है वहां पाचन-संस्थान भी ठीक होने लगता है। छोटा बालक सहज रूप से श्वास-प्रश्वास करता है। जब वह श्वास ग्रहण करता है तो पेट फूलता है, प्रश्वास करता है तब पेट सिकुड़ता है। सम्यक् श्वास-प्रश्वास के लिए श्वास लें, तब पेट फूले, प्रश्वास करें तब सिकुड़े। इससे श्वास-प्रश्वास सहज ही दीर्घ होने लगता है। इन क्रियाओं के लिए तनाव रहित होकर खड़े रहें। चित्त को क्रिया में संलग्न करें। श्वास-प्रश्वास के साथ पेट का संचालन होगा। श्वास अन्दर जाए तब पेट फूलेगा। श्वास बाहर आए तब पेट सिकुड़ेगा। पेट और श्वास की क्रियाओं से श्वास-प्रश्वास की स्थिति सम्यक् बनेगी।

पहली क्रिया : गर्दन को सीधा रखें। दृष्टि सामने रखते हुए धीरे-धीरे दस बार श्वास-प्रश्वास की क्रिया करें।

दूसरी क्रिया : पूर्व स्थिति में दस बार श्वास-प्रश्वास की गति तीव्र करें।



तीसरी क्रिया : ऊपर आकाश की ओर अपलक देखकर दस बार श्वास—प्रश्वास तीव्र गति से करें।

चौथी क्रिया : गर्दन सीधी दृष्टि को सम्मुख शरीर से पांच फुट की दूरी पर रखें। दस बार श्वास—प्रश्वास को तीव्रता से करें।

पांचवी क्रिया : प्रश्वास कर के मुंह को कौए की चोंच सदृश बना कर श्वास भरें। पेट, फेफड़े, गला एवं कपोलों (गालों) को फुला कर आंख बन्द करें। टुड्डी को कंठकूप से लगाएं। मूल बंध लगा कर कुम्भक करें। फिर गर्दन सीधी कर नाक से श्वास छोड़ें। इससे उष्णता बढ़ती है। गर्मी के मौसम में इसे नहीं करें। सर्दी में तीन—चार आवृत्तियां की जा सकती है।

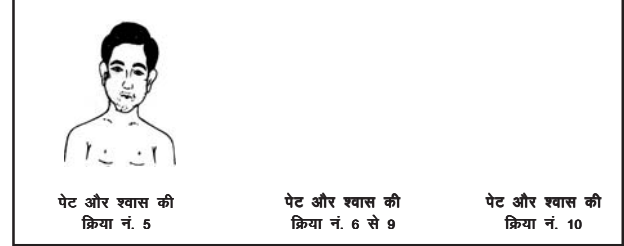
छठी क्रिया : हाथों को कमर पर रखें, अंगुलियां पीछे और अगूठा आगे की ओर रहे। दृष्टि सम्मुख रखते हुए 30° का कोण बनाकर शरीर को स्थिर करें तथा दस बार श्वास—प्रश्वास करें।

सातवीं क्रिया : छठी क्रिया की तरह ही हाथ कमर पर रख कर 90° तक झुकें और तेजी से दस बार श्वास—प्रश्वास करें।

आठवी क्रिया : छठी क्रिया की तरह शरीर आगे की ओर 30° कोण में झुका कर प्रश्वास करके बाह्य कुम्भक करें, पेट को भीतर—बाहर पांच से दस बार संचालित करें।

नवीं क्रिया : 90° में शरीर को झुका कर हाथों को कमर पर स्थापित करें। बाह्य कुम्भक की स्थिति में पेट को तेजी से दस से बीस बार संचालित करें। दृष्टि सम्मुख रहेगी।

दसवीं क्रिया : दोनों पैरों के बीच लगभग डेढ़ फुट का फासला रखते हुए शरीर को कुर्सी की आकृति में लाएं, हथेलियां घुटनों पर रखते हुए श्वास का रेचन करके पेट को पीठ की ओर खींच कर उड्डियान करें। इस अभ्यास की परिपक्वता से नौली क्रिया होने लगेगी।



लाभ :

1. श्वास की क्रिया सहज होकर श्वास संबंधी विभिन्न रोग दूर होते हैं।
2. फेफड़े स्वस्थ होते हैं, रक्त का शोधन होता है।
3. प्राण की सक्रियता बढ़कर शरीर शक्ति सम्पन्न होती है।
4. कब्ज दूर होती है। अपान वायु की शुद्धि होती है। पाचन क्रिया व्यवस्थित बनती है। पेट के विभिन्न रोगों से मुक्ति मिलती है।
5. अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के स्राव व्यवस्थित एवं संतुलित बनते हैं जिससे भाव शुद्ध होते हैं।

(अगले अंक में लगातार.....)

किसी नगर में एक आदमी रहता था। उसने परदेश के साथ व्यापार किया। मेहनत फली, कमाई हुई और उसकी गिनती सेठों में होने लगी। महल जैसी हवेली बन गई। वैभव और बड़े परिवार के बीच उसके दिन आनंद से बीतने लगे।

एक दिन उसका एक संबंधी किसी दूसरे नगर से आया। बातचीत के बीच उसने बताया कि उसके यहां का सबसे बड़ा सेठ गुजर गया। बेचारे की लाखों की धन-संपत्ति पड़ी रह गयी। बात सहज भाव से कही गयी थी, पर उस आदमी के मन को डगमगा गई। हां उस सेठ की तरह एक दिन वह भी तो मर जाएगा। उसी क्षण से उसे बार-बार मौत की याद सताने लगी। हाय, मौत आएगी, उसे ले जाएगी और सबकुछ यहीं छूट जाएगा। मारे चिंता के उसकी देह सूखने लगी। देखने वाले देखते कि उसे किसी चीज की कमी नहीं है, पर

सबसे बड़ा डर

उसके भीतर का दुःख ऐसा था कि किसी से कहा भी नहीं जा सकता था। धीरे-धीरे वह बिस्तर पर पड़ गया। एक दिन एक साधु उसके घर पर आया। उस आदमी ने बेबसी से उसे पकड़ लिया और रो-रोकर अपनी व्यथा उसे बता दी।

सुनकर साधु हंस पड़ा और बोला “तुम्हारे रोग का ईलाज तो बहुत आसान है।” उस आदमी के खोए प्राण मानो लौट आए। अधीर होकर उसने पूछा “स्वामीजी, वह इलाज क्या है।”

साधु ने कहा “देखो मौत का विचार जब मन में आए, जोर से कहो जब तक मौत नहीं आएगी, मैं जीऊंगा। इस नुस्खे को सात दिन तक आजमाओ, मैं अगले सप्ताह आऊंगा।”

सात दिन के बाद साधु आए तो देखा कि वह आदमी बीमारी के चंगुल से बाहर आ गया है और आनन्द से गीत गा रहा है। साधु को देखकर वह दौड़ा और उसके चरणों में गिरकर बोला “महाराज, आपने मुझे बचा लिया। आपकी दवा ने मुझ पर जादू जैसा असर किया। मैंने समझ लिया कि जिस दिन मौत आएगी, उसी दिन मरूंगा, उससे पहले नहीं।”

साधु ने कहा ‘वत्स, मौत का डर सबसे बड़ा डर है। वह जितनों को मारता है मौत उतनों को नहीं मारती।’

● शुभम सुराना
श्रेष्ठ विहार, दिल्ली

अनैतिकता की धूप – अणुव्रत की छतरी

प्रमोद घोड़ावत



कभी-कभी लगता है प्रतिदिन प्रातःकाल समाचार पत्र का क्यों बेसब्री से इंतजार किया जाए? क्या बढ़ते भ्रष्ट आचरण, नैतिकता की हदों को पार करते कुकृत्यों और आपराधिक मनोवृत्ति को दर्शाती वृत्तियों से रू-ब-रू होने के लिए।

भारत एक ऐसा देश है जो अपने उच्च राष्ट्रीय प्रतिमानों के लिए माना और जाना जाता है। ऐसे देश का नाम भ्रष्ट देशों की सूची में वरीयता उच्च क्रम में आना हमारे राष्ट्र भक्तों की कुर्बानियों को भी धूमिल करता है। कहां गए हमारे शाश्वत मूल्य? क्या यही सूचक हैं हमारे विकास का?

आज हर क्षेत्र में भ्रष्ट-आचरण का बोलबाला है। खेल हो या राजनीति, चिकित्सा हो या शिक्षा-सभी जगह भ्रष्टाचार ने अपनी पैठ बनायी है। कभी जिस देश के शीर्षस्थ राजनेता अपने विभाग की तकनीकी भूल से हुई रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए मंत्री पद से इस्तीफा दिया हो, जिस गणतंत्र के प्रमुख पद का कार्य संभालने वाले महानुभाव ने अपना सेवानिवृत्ति काल एक साधारण व्यक्ति की तरह बिताया हो, ऐसे प्रेरक व्यक्तियों के देश का नैतिक स्तर आज बहुत ज्यादा गिर चुका है। मूल्यों में गिरावट की यह बेहद शर्मनाक स्थिति है। घूसखोरी, भ्रष्टाचार, घोटाले, आर्थिक अनियमितताओं के समाचार पहले औसतन दो महीने में एक नजर आते थे अब यह दर प्रति सप्ताह दो से अधिक प्रतीत होती है। कभी दाल में काला नजर आता था, अब तो लगता है पूरी दाल ही काली है। सबसे बड़ी बात

यह लगती है कि हमारे देश के आम नागरिकों ने इस विषय को मानो एक 'रुटीन' मान लिया है। लोग घोटालों की खबरों से विचलित नहीं होते। देश की संपत्ति का एक अच्छा खासा हिस्सा सत्ताधारी ही नहीं बल्कि विपक्ष के रुतबे और रसूखदार लोग उड़ा ले जाते हैं। कतिपय अपवादों को छोड़कर राजनैतिक दलों की रगे भी एक-दूसरे से दबती है। इसीलिए भ्रष्टाचार और अनैतिक आचरण का विरोध सशक्त स्वरों में नहीं हो पाता। यह स्थिति शोचनीय है।

भ्रष्टाचारियों की शक्ति भी इतनी बढ़ गई है कि ईमानदार व्यक्ति को वे दबा डालते हैं या परेशान कर कार्यक्षेत्र से बाहर कर देते हैं। आमतौर पर व्यापारी वर्ग को मुनाफाखोरी, रिश्वत देने, मिलावट, टैक्स चोरी का प्रचालक माना जाता है। लेकिन सिक्के के दूसरे पहलू को भी देखना जरूरी है। हाल ही में एक समाचार-पत्र से प्रकाशित सर्वे की रिपोर्ट ये बताती है कि राजनेता, सरकारी अधिकारी और पुलिस विभाग इस दलदल की अधिक गहराई में डूबे हुए हैं।

दो बातें गौरतलब हैं पहली यह है कि पहले शीर्षस्थ राजनेता और उच्चतम अधिकारी वर्ग पर सीधे तौर पर भ्रष्ट होने का आरोप नहीं लगता था। अब तो न्यायपालिका से संबंधित व्यक्ति भी शक के घेरे में आने लगे। दूसरी यह है कि बड़े-बड़े दुष्कर्म करने के बाद भी उन व्यक्तियों के चेहरे पर पश्चाताप का भाव परिलक्षित नहीं होता। न उनका सामाजिक बहिष्कार होता है बल्कि अपनी ताकत

और बेशर्मी के बल पर वे सत्ता पर काबिज रहते हैं।

'जाए लाख रहे साख' के नीति वाक्य से लोग दूर होते जा रहे हैं। धनलोलुप मनोवृत्ति ने व्यक्ति को शोषक और भ्रष्ट बना दिया। व्यक्तिवादी मनोवृत्ति उसे संवेदनशून्य बना रही है। इसी के साथ पनप रही है अन्य अनैतिक वृत्तियां भी।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत की आवश्यकता आज फिर से नितांत है। यह सही है कि अणुव्रत जैसे अभियान द्वारा उत्प्रेरित मानसिकता के कारण ही जहां आरटीआई जैसे सूचना प्राप्ति के अधिकार का अस्त्र भी जनसाधारण के हाथों में आया है वहीं बढ़ते कम्यूटीरीकरण से अब रेल टिकट प्रभृति सुविधाओं के लिए टिकट बाबू की हथेली गर्म करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

लेकिन अभी भी संघर्ष अपेक्षित है। आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी सम्मुखीन है ऐसे समय में हमें अपनी ओर से अणुव्रत आंदोलन को व्यापक और बहुगुणित करने का पूरा-पूरा प्रयास करना चाहिए। यह कार्य जहां एक ओर हमारी तरफ से मानवता के मसीहा और नैतिक क्रांति के अग्रदूत आचार्य तुलसी के प्रति अर्ध चढ़ाने जैसा होगा वहीं इस महान राष्ट्र की धूमिल पड़ती छवि को उज्ज्वल बनाने में योग्यभूत होगा। अनैतिकता की पसरती, आम आदमी को प्रताड़ित, परेशान करती धूप से अणुव्रत की शीतलता प्रदान करने वाली छतरी तानकर निजात दिलाएं।

आइए एक बार फिर से सशक्त रूप से नारा बुलंद करने का समय आ गया है 'संयमः खलु जीवनम्'।

संपादकीय : 'तेरापंथ टाइम्स'
20-26 दिसंबर 2010 से साभार

गज़ल

अक्षय गोजा

दल बदल को कुर्सियां हैं आजकल
सच वचन को खाइयां हैं आजकल

देख लें चाहे पढ़ें हर रोज ही
बस वे ही तो सुर्खियां हैं आजकल

काम चाहे हो न हो निश्चित है ये
हर तरफ ही अर्जियां हैं आजकल

नाम धरते हो सियासत का ही क्यों
हर कहीं बदमाशियां हैं आजकल

ये हुआ जो बदलाव पहनावे में
वो कहाँ सरगोशियां हैं आजकल

लाभ के पद का है कोई मामला
इसलिए सरगर्मियां हैं आजकल

हो तमाशा मंच पर कोई कहीं
खेलती बस उंगलियां हैं आजकल

भेद तो जनमा मगर मानव नहीं
गर्भ में मृत लड़कियां हैं आजकल

युद्ध से क्या कम है ये आतंक भी
बम विस्फोट गोलियां हैं आजकल

●●●

अब न सभा में बात चले
शोर मचे और लात चले

बैठक में हाथापाई
कमरे में मुलाकात चले

बिन मेहनत हो काम सफल
जब कोई सौगात चले

दिन में तपती धूप रहे
शीतल मोहक रात चले

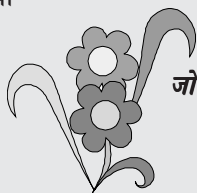
शीघ्र बड़ा होने की होड़
शिशुओं के जज़्बात चले

जीवन की शतरंज यही
निशिदिन शह और मात चले

हर प्रश्न बिना उत्तर था
ऐसे भी हालात चले

देश दिखे न व्यथा कोई
काला धन बरसात चले

दिन तो गुज़रे श्रमिकों संग
सेठों के घर रात चले।



चांदपोल गेट के पास,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

पन्ने इतिहास के

हुकमचंद सोगानी

दुनिया एक खुली किताब है
पढ़ सकते हो; पढ़ लो
सकारात्मक दृष्टि से
जीवन की राहें जोड़ो।

सांसें कितनी दुर्लभ हैं
हर रोज जश्न मनाओ
ज्ञांको अपने अंतर-मन में
खुशियों का सागर लहराओ।

आजादी का आलम है
प्रगति का परचम फहराओ
अज्ञान के साये छंट जाएंगे
शिक्षा का विगुल बजाओ।

पन्ने इतिहास के रंगे हुए हैं
वीरों की गाथाओं से
प्रेरित होकर उनके जीवन से
देश का मान बढ़ाओ।

श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला,
फ्लैट नं. 201, महावीर मार्केट,
नई पेट, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

सांझ पड़ी रे राही

सांझ पड़ी रे राही अब तो घर आ जा,
तेरी यादों में मैंने अपने घर को साजा,

क्या याद है वो बचपन की बातें,
वो संग हंसती संग रोती रातें,

इक-दूजे को संग-संग ढाल लिया था,
हर आफत को अपने सिर से ढाल लिया था,

साथ हंसते थे, साथ ही तो रोते,
जागे साथ, साथ ही तो सोते,

पर वक्त ने क्यों ला दी हममें इतनी दूरी,
प्यार हमारा कर न सका जिसे पूरी,

मेरे संग था हरदम तू बनकर एक अहसास,
याद किया मैंने तुझको संग हर सांस-सांस,

खैर आ अब तो गले लग जा क्यूं दूर खड़ा है
मजबूरी की बेड़ी टूटी अब क्यूं मजबूर खड़ा है,

चल एक गलती भुला भी दे मेरी,
ना अब कर तू कुछ भी देरी,

याद कर हरपल तेरा साथ निभाया,
थी आत्मा एक पर दो काया,

क्या हुआ जो परिवार टूटे हमारे,
उनके संग क्यों भाग फूटे हमारे,

ना था तू दोषी, ना गलती मेरी थी,
ये तो बस मित्र किस्मत की फेरी थी,

आज भी जब बिछुड़ने की रात याद आती है,
रूह मेरी टिप-टिप पानी बन बह जाती है,

पर भुला दिया अब बीती बातों को,
उन रोती-बिलखती तमस रातों को,

आ फिर दोस्ती का जहान बनाएं,
मिलकर फिर अपने घर को सजाएं,

फिर मिलकर प्रेम के गीत गाएंगे,
वैर भस्म हो गए अब प्रीत निभाएंगे,

आ अब बचपन को लौट चलें,
इन नफरतों को बस यहीं छोड़ चलें।

● मुस्कान बरड़िया
ओसवाल भवन के पास
श्रीडूंगरगढ़ (राज.)

महिलाएं : विवेक चेतना को जागृत करें



कनक बरमेचा

समय कब क्षण-क्षण बीतता हुआ सेकेंड मिनट में, मिनट घंटे में, घंटे दिन में, दिन महीनों में तथा महीने साल में बदल जाते हैं पता ही नहीं चलता। देखते ही देखते 365 दिनों की यात्रा सम्पन्न कर एक वर्ष अलविदा हो जाता है तथा उसका स्थान नया वर्ष ले लेता है। नव वर्ष का नवोदित सूर्य हर दिन जैसा ही होता है पर उसकी रक्तभाभ सुनहरी किरणों में छुपा है नया जोश, नई उमंग एवं नई परिकल्पनाएं। नया केलेण्डर, नई तारीखों के साथ परिवर्तन की शाश्वत क्रिया को पुष्ट करता हुआ नये जागरण को दस्तक देता है।

सदियों से व्यक्ति की पहचान दो मानदंडों के आधार पर होती आई है सामान्य और विशेष। वर्तमान में जिस तेजी से विचारों में, व्यवहारों में, परम्पराओं में और जीवन-स्तर में परिवर्तन दिखाई दे रहा है, ऐसा लगता है हर व्यक्ति सामान्य से विशेष बनने की दौड़ में शामिल हो रहा है। कई दृष्टिकोणों से यह सही भी है क्योंकि हर जगह विशेषज्ञता की पूछ है। अगर कोई महिला किसी कार्य में विशेषज्ञ है और उसे मार्केटिंग करनी आती है तो उसकी विशेष पहचान बनती है। मेरे कहने का तात्पर्य है देश और काल का असर हर किसी पर पड़ता है। हम भी उसमें शामिल हैं, क्योंकि आज का जमाना विशेषज्ञों का है, फिर क्यों नहीं हम अपनी शक्ति का उपयोग विशेषज्ञता हासिल करने में लगाएं।

अभी हम संधिकाल से गुजर रहे हैं एक ओर तो महिला अपने पुरुषार्थ के बल पर आकाश की ऊंचाइयां मापने की कोशिश कर रही है तो दूसरी ओर असहाय अबला बन कर अपने ऊपर हो रहे अत्याचार भी सहन कर रही है, भले वह कन्या भ्रूण हत्या के रूप में हो या फिर ऑनर किलिंग के रूप में। समाज महिलाओं के विकास को खुले दिल से स्वीकार नहीं कर रहा है, पर विकास के वेग को रोक भी नहीं पा रहा है। महिलाएं घर परिवार के साथ अपने कैरियर को भी देखती हैं तो पति के आर्थिक पक्ष को भी संभालती हैं। बच्चों के संस्कारों का भी उसे ध्यान रखना है तो अपने स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक रहना है। विकास के लिए मिलने वाले अनगिनत अवसर कई दिशाएं उद्घाटित कर रहे हैं, जहां से हर महिला का अस्तित्व विस्तार की पुकार कर रहा है। हम अपने अस्तित्व के विस्तार को उत्कृष्टता हासिल करके सार्थकता दे सकते हैं।

छुईमुई-सी कोमल कली, आंगन की शीतल छांव, मम्मी की गुड़िया एवं बाबुल की चिड़िया कहलाने वाली प्यारी लाइली कन्यायें, अपने अस्तित्व को चहुंमुखी विस्तार दे रही हैं। कन्यायें अपने स्वाभिमान व आत्मविश्वास के बल पर बाप का जिम्मेदार बेटा बनने की कोशिश कर रही हैं। समाज की सोच में बदलाव आया है हर मां-बाप अपनी बेटी को जहां तक संभव हो डिग्रियों के साथ कुछ विशिष्टता हासिल करवाना चाहते हैं, ताकि उनकी बेटी सामान्य से ऊपर उठकर विशेषज्ञ कहलाए।

खुले आकाश में परी की तरह उड़ने वाली कन्याएं अपनी आंखों में संजोए हर सपने को सच करना चाहती हैं। सफलता पाने के लिए सपने को साधना मानकर अपना पूरा समय, श्रम, शक्ति, अनुरक्ति उससे जोड़ देती हैं। नव वर्ष पर यही मंगल कामना कि दृढ़ मनोबल के सहारे

आप हर सपने को अपना बनाने में सफलता प्राप्त करें। नये वर्ष की विकास यात्रा इस लक्ष्य से शुरू करें

- आपको सामान्य से विशेष बनने की दिशा में अपने व्यक्तित्व का विकास करना है।

- विशेषज्ञ बनने के लिए आपकी गति सिर्फ उस एक दिशा में ही होनी चाहिए। वह दिशा अध्यात्म, तत्वज्ञान, जीवन-विज्ञान, समाजसेवा, राजनीति आदि में से कोई भी हो सकती है।

- जब तक श्रेष्ठता हासिल न हो, विश्राम नहीं लेना है। श्रेष्ठता प्राप्त करने की जीजिविषा ही आपको सामान्य से विशेष बनाएगी।

- विकास के खुले दौर में क्या खोया, क्या पाया इसकी स्वस्थ समीक्षा जरूर करें। समय की बलिवेदी पर सुसभ्यता, सुसंस्कृति व सुसंस्कारों का बलिदान न दे।

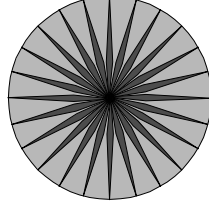
- आत्मचिंतन व्यक्ति का आईना होता है। अगर ईमानदारी से अपना अकश आईने में देखते हैं, तो वह आपके लिए दिशा सूचक यंत्र बन सकता है। दिशा सूचक यंत्र हमेशा आपको सही राह दिखायेगा।

आप सभी के परिवार रिश्तों की मजबूत डोर से बंधे रहें। अपनी विवेक चेतना को जगाते हुए युवा पीढ़ी अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग करें। स्नेह का सेतु बुजुर्ग एवं युवा पीढ़ी के बीच का अंतराल खत्म करें। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से नैतिकता की भावना एवं मानवीय संवेदना सबमें बनें। हर महिला इस वर्ष का स्वागत इस संकल्प से करें कि वह अपनी विवेक चेतना को जाग्रत रखते हुए विशेषज्ञता हासिल करने की दिशा में कूच करेगी।

नारी लोक, जनवरी 2011 से साभार

देशभक्ति के संस्कार :2:

कैलाश वर्मा



रात के लगभग नौ बजे थे। घायल शरीर से लड़खड़ाता हुआ वह शिविर की सीमा पार कर रहा था। उसके मन में आया दौड़, ताकि जल्दी पार हो सकूँ पर दौड़ना खतरे से खाली नहीं था। गश्त लगाने वाला कोई भी पुलिस या सेना का जवान उसे शत्रु समझकर गोली का निशाना बना सकता था।

लगातार तेज चलने से सांस फूलने लगी, गला सूख गया। उसका शरीर अब और अधिक चलने के लिए समर्थ नहीं था।

उसने फिर साहस को बटोरा और आगे चला। अब वह शिविर से काफी दूरी पर आ गया था। उसने सोचा पास के किसी गाँव में रात्रि विश्राम कर कल अपने शहर की ओर रवाना हो जाऊंगा। वह चलता रहा, चलता रहा।

सुनसान इलाका। सरसराती-सनसनाती ठण्डी हवाओं के झोंके उसकी गति को शिथिल कर रहे थे। रोडलाइट के खंभे काफी दूर-दूर थे और उनका प्रकाश भी बहुत कम था। पूरी सड़क एक अजीब रहस्यमय धुंधले अन्धकार में लिपटी हुई थी। वह सतर्कता से आगे बढ़ रहा था पर अब पैर लड़खड़ाने लगे। वह गिरने को हुआ तभी एक वृक्ष का सहारा मिल गया। वह वहीं खड़ा होकर देखने लगा पर दूर दराज तक कोई गाँव नजर नहीं आया। वह थोड़ा और आगे बढ़ा, परिवार का मोह उसे पल-पल खींच रहा था.....।

एकाएक उसकी आँखों में चमक आ गई। कुछ दूरी पर उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। आशा की किरण जगी। उसने गति को तेज कर दिया। उसके मन ने प्रश्न किया-इतने सुनसान जंगल में एकमात्र इस झोंपड़ी में कौन रहता होगा?

फिर सोचा कोई भी रहे, रात को विश्राम का स्थान तो मिल ही गया।

झोंपड़ी का मद्धिम प्रकाश छिद्रों से बाहर झाँक रहा था तो सैनिक कप्तान अक्षय उन्हीं छिद्रों से भीतर झाँकने को उतावला हो रहा था।

वह दरवाजे के निकट पहुँच गया, कुंडा हाथ में लिया और जोर से खटखटाने ही वाला था कि उसने सुना-झोंपड़ी के भीतर घुसर-पुसर हो रही थी। उसने सोचा-इतनी रात गए भी कोई जाग रहा है और बातें भी हो रही है। सुनूँ, कौन है? क्या बातें कर रहे हैं?

महीन छिद्र पर दृष्टि टिकाई तो देखा-भीतर एक वृद्धा, दुबली-पतली पर साहस की पुतली झोंपड़ी के आंगन पर बैठी थी और एक चार-पाँच साल का बच्चा जो अभी अभी नींद से जगा था उसे दादी अम्मां कहकर पुकार रहा है।

क्या बात है दीपू! आज तुम इतनी जल्दी ही जाग गए। लगता है सर्दी के कारण तुम्हारी नींद जल्दी खुल गई है? दीपक तत्काल उठकर उसकी गोद में आ बैठा। अपनी दादी अम्मां का मुँह अपने हाथों में लेकर कहा-अम्मां! आज तुम शहर के मेले में गई थी ना। वहाँ से मेरे लिए क्या लाई?

बेटा! जो तुम्हारे लिए लाना चाहिए वही लाई हूँ। पर अभी तो रात है, तुम सो जाओ। सुबह दिखाएंगे कि क्या लाए हैं?

“नहीं अम्मां! अब मैं नहीं सोऊंगा। आज शाम को आपने कहानी भी नहीं सुनाई। अब सुना दो अम्मां! एक प्यारी-प्यारी कहानी सुना दो।”

“दीपू! मैं तुम्हें इतनी कहानियाँ सुनाती हूँ उनमें से तुम्हें सबसे अच्छी कौन सी लगती है?”

वही जो देशभक्ति की होती है।” दीपू ने तपाक से उत्तर दिया।

वृद्धा ने दीपक को गोदी में भींचते हुए प्यार की झड़ी लगा दी। उसने कहा-मेरे लाल! मैं तुमसे यही आशा करती हूँ। तुम भी एक दिन अपने पिता के स्थान तक पहुँच जाओगे।

अक्षय बाहर सुन रहा था। पर वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि यह वृद्धा उसी की माँ निशादेवी है और यह नन्हा-सा दीपक उसी का खून है। उसकी माँ एक झोंपड़ी में रहे यह तो स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता। पर वह इतना एकाग्र होकर सुन रहा था कि झोंपड़ी को खटखटाना और आराम करना सब भूल गया। वह कानों को टिकाए सुनता ही रहा।

दीपक ने कहा-अम्मां! तुम पिताजी के बारे में इतनी बातें करती हो पर उन्हें बुलाती क्यों नहीं? एक बार बुला दो ना अम्मां! मैं मिलना चाहता हूँ। क्या वे मुझे याद नहीं करते हैं? क्या वे मुझसे मिलना पसन्द नहीं करेंगे?

दीपू! तेरा पिता इतने उच्च पद पर है, उसकी इतनी जिम्मेदारियाँ हैं कि वह नहीं आ सकता।

पत्र तो भेजा जा सकता है, अम्मां! हाँ, पत्र भेजे गए थे बेटे, बहुत भेजे गए थे। पर अब नहीं, और कहते-कहते निशादेवी की आँखें नम हो गईं।

पर अब क्यों नहीं? दीपक ने पुनः प्रश्न खड़ा कर दिया।

जिस अक्षय को यह कल्पना ही नहीं हो सकती थी, उसी अक्षय को दोनों के वार्तालाप ने यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि यह उसकी ही माँ निशादेवी है और यह नन्हा-सा दीपक उसका ही लड़का है।

अक्षय ने अपने सिर को झटका और कहा नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

वरना उसकी पत्नी जया भी उनके साथ होती। वह सुनने लगा, अम्मा ने कहा बेटे! पाँच साल बीत चुके हैं उन बातों को! तुम्हारे जन्म की खुशी का पत्र मैंने वहाँ भेजा था। उसके बाद मैंने कोई भी पत्र नहीं दिया क्योंकि जब तुम सात दिन के हुए तभी तुम्हारी माँ को परमात्मा ने ऊपर बुला लिया। मरते दम उसने यही कहा था अम्मा! आप अक्षय को कोई समाचार न देना वरना वे अपने कर्तव्य पर अटल नहीं रह पाएंगे और तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में देते हुए कहा-अम्मा! इस नन्हें फूल को इतना सिंचन देना कि यह लहलहाते वृक्ष का रूप ले सके और एक दिन अपने पिता के स्थान तक पहुँच सके। कहते-कहते निशादेवी की आँखों से आंसू बह पड़े।

कितनी महान् थी तुम्हारी माँ! जिसने शादी के सात दिन बाद ही अपने पति को युद्धभूमि में लड़ने के लिए सहर्ष विदा किया था और जिसकी अन्तिम सांस भी देशभक्ति व देशप्रेम की प्रेरणा दे रही थी।

अक्षय की शंकाएं विश्वास में बदलती जा रही थीं। अब वह अच्छी तरह से पहचान चुका था कि यह वृद्धा उसकी माँ निशादेवी ही है और कोई नहीं, समय के थपेड़ों से पिटकर वह कंकाल मात्र रह गई थी।

अक्षय ने ज्योंही यह सुना कि जया इस संसार में नहीं रही उस पर वज्रघात सा लगा। उसके पैर लड़खड़ाने लगे। वह उतावला हो रहा था अपनी माँ और पुत्र से मिलने के लिए। उसके पत्रों का जवाब कैसे मिलता, जब स्वयं जया ने उन्हें बन्द करवा दिया था।

अम्मा! उसके बाद क्या हुआ?

दीपक भावविभोर-सा हुआ बात को आगे बढ़ा रहा था। और उसके बाद मैं उस घर में नहीं रह सकी। मैं तुम्हें लेकर इस झोंपड़ी में आ गई क्योंकि यह अपने देश की सीमा और गांव दोनों के मध्य में स्थित है। सीमा से लौटने वाले हर सैनिक की विश्रामभूमि है। दूरदराज गांवों में पहुँचते पहुँचते बीच स्थान पर भूखे की भूख मिटाने के लिए, प्यासे की प्यास

बुझाने के लिए और गिरते मनोबल को नया संबल देने के लिए मैंने इस झोंपड़ी का चुनाव किया और देश की सेवा के लिए अपने आपको भी समर्पित कर दिया।

शहर से दूर जहाँ रहकर तुम्हें कहानियाँ सुनाती हूँ तुम्हारे भीतर भी उन्हीं भावनाओं का संप्रेषण करती हूँ ताकि तू भी बहुत बड़ा सैनिक बन सके और अपनी माँ की अन्तिम इच्छा को पूरी कर सके।

आज से ठीक पाँच साल पहले इसी मेले के दिन तुम्हारी माँ हम लोगों से बिछुड़ गयी थी। उसी के बाद मैं हर बार शहर के मेले में जाती हूँ और तुम्हारे लिए एक चीज अवश्य खरीदकर लाती हूँ।

हाँ अम्मा! मैं तो भूल ही गया। आज आप मेरे लिए क्या लाई हो?

निशादेवी ने एक बंडल खोलते हुए एक ड्रेस निकाली और उसे पहनाते हुए कहा-बेटे! आज मैं तुम्हारे लिए ऐसी चीज लाई हूँ जिसके साथ तुम्हारा भविष्य जुड़ा हुआ है।

ज्योंही दीपक ने उस फौजी पोशाक को धारण किया, उसका रोम-रोम खिल गया। वह बहुत ही सुन्दर, सुहावना और साहसी सैनिक सा प्रतीत हो रहा था। मानो वह उस पोशाक के लिये जन्म-जन्म से तरसता रहा हो, और आज उसकी वह इच्छा पूरी हो गयी हो।

अक्षय उस नन्हें दीपक को अपने ही दूसरे रूप में देख रहा था। वह गद्-गद् हो गया अपने हू-ब-हू चेहरे को देखकर। पाँच साल का छोटा-सा बच्चा कितना होनहार लग रहा था।

निशादेवी को भी आज जया और अक्षय की बार-बार याद आ रही थी पर वह भावुकता में बहना नहीं चाहती थी। उनके सिर पर गौरव की रेखाएं खींची थी कि अक्षय अपनी ड्यूटी पर अटल है और इधर जया की इच्छा को पूर्ण करने में वह स्वयं दिन रात तत्परता से लगी हुयी है।

दीपक ने अपनी पोशाक को संवारते हुए कहा-अम्मा! क्या आप केवल पोशाक ही लायी है? बन्दूक नहीं लायीं?

बेटे! बन्दूक की मांग करना जितना सरल है बन्दूक उठाने की सही भाषा को समझना उतना ही कठिन है। बन्दूक उठाने का मतलब है दुधारी तलवार पर चलना। गांधी हमारे आदर्श हैं इसलिए बन्दूक हमारा शौक नहीं, मजबूरी है। युद्ध हमारा ध्येय नहीं, एक कर्तव्य है। बन्दूक तो सिर्फ उनके लिए होती है जिनका मानवता और न्याय में कोई विश्वास नहीं होता तथा जो प्रेम व करुणा की भाषा समझने को तैयार नहीं होते।

पर दूसरी और एक बार बन्दूक उठाने के बाद वह कभी पीछे न हटे यही हमारी शान है। स्वार्थ, जिजीविषा व पारिवारिक प्रेम के आगे कभी घुटने न टेक कर निरन्तर देश-रक्षा हेतु डटे रहना ही वीरता है।

दीपक निशादेवी को कितना समझ पा रहा था, कहना कठिन है पर निशादेवी भावविभोर हो बोलती ही चली गई।

तुम्हें बन्दूक मिलेगी मेरे लाल! अवश्य मिलेगी। कहते हुए निशादेवी का सीना गौरव से फूल गया कि उसका लाल स्वयं बन्दूक की मांग करने लग गया है। निशादेवी ने एक बंडल खोलकर बन्दूक निकाली और उसे दीपू के नन्हें कंधों पर सजाते हुए वह कहने लगी अपनी माँ व पिता के बलिदान व त्याग को सदा याद रखना मेरे लाल! तुम उनके खून हो, उनकी देशभक्ति के संस्कार तुम्हारे में फलीभूत हो यही मैं प्रभु से प्रार्थना करती हूँ। नन्ही-सी बन्दूक के साथ निशादेवी ने दीपू को अपनी छाती से लगा लिया।

अक्षय यह सब सुन कर स्तब्ध रह गया। उसके दिमाग में एक साथ कई आंधियाँ कौंध उठी। उसकी माँ के विभिन्न रूप कभी स्नेहिल मुस्कान तो कभी सद्-संस्कारों की प्रेरणा, कभी देश भक्ति तो कभी पारिवारिक कर्तव्य के प्रति अटल, लेकिन इन सबके पीछे एकमात्र भावना देश की सेवा, देश की रक्षा।

अक्षय की आत्मा ने कहा अक्षय! लौट जाओ, पुनः शिविर में लौट जाओ। जिस परिवार के लिए तुम शिविर में भाग

आए हो वह परिवार तुम्हें कभी नहीं अपनायेगा। इस कायरता के बाने को पहनकर अगर तुम अपनी मां के पास जाओगे तो वह तुम्हें धिक्कारेगी।

जिस मां ने तुम्हें विदा के समय देश की सम्हाल दी और जो स्वयं इस रूप में देश के लिए समर्पित है, उस मां के सामने ऐसी कायरता लेकर जाना महान् अपमान होगा।

अक्षय! तुम अपने संकल्प को भूल गए। धिक्कार है तुम्हें परिवार के मोह में पागल होकर तुम अपने कर्तव्य को भी भूल गए। तुमसे अच्छी यह वृद्धा है, तुमसे अच्छा यह बच्चा है जो रात के दो बजे भी देश की सुरक्षा की ही बातें करते हैं। अक्षय की आत्मा उसे प्रेरित करने लगी।

अगर तुम इसी रूप में अपने बच्चे से मिले तो, वह बच्चा तुम्हारी शकल पर थूकने की भी हिम्मत रखता है। जरा सोच लो।

मां का आशीर्वाद ही नहीं उसका पूरा जीवन तुम्हें प्रेरणा दे रहा है। तुम्हारी दिवंगत पत्नी तुम्हें बार-बार प्रेरित कर रही है और यह नन्हीं जान भी तुम्हारे लिए प्रेरणा स्रोत बन पड़ी है। अक्षय! अपने अधूरे काम को पूरा करो। कर्तव्य का पालन करो और फिर यहाँ आने की हिम्मत करना। अक्षय की आत्मा ने उद्बोधन दिया-जाओ, पुनः मोर्चे पर तैनात हो जाओ। मनोबल मजबूत होगा तो तन के घाव बहुत जल्दी ही भर जाएंगे। अतः लौट जाओ ताकि अपनी पत्नी के पास जाने में तुम्हें शर्म का एहसास नहीं करना पड़े।

अक्षय ने कुंडे को छोड़ दिया। उसके पैर मुड़ गए। वह पुनः शिविर में जाना चाहता था और रात ढलने से पहले अपने स्थान पर पहुँच जाना चाहता था ताकि किसी को भी उस पर कोई संशय न हो। वह थोड़ा आगे बढ़ा। लेकिन फिर झोंपड़ी के द्वार पर आया, उसने देखा-दीपक उसी फौजी पोशाक को पहने हुए सो रहा था और उसके पास निशादेवी भी सोने की तैयारी कर रही थी। उसने अपनी मां को मन ही मन प्रणाम किया और एक स्नेहभरी दृष्टि अपने बच्चे पर डाली और वहाँ से लौट पड़ा।

वह अपने भीतर दुगुने साहस का अनुभव कर रहा था। घावों की पीड़ा तो मानो क्षण-क्षण में हल्की होती जा रही थी। उसके कानों में अब भी मां के बोल गूँज रहे थे। एक बार बन्दूक उठाने के बाद वह कभी पीछे न हटे यही हमारी शान है। स्वार्थ, जिजीविषा व पारिवारिक प्रेम के आगे कभी घुटने न टेक कर निरन्तर देश-रक्षा हेतु डटे रहना ही वीरता है।

उसने अपनी गति को और तेज कर दिया। वह चलता जा रहा था, पूर्ण गौरव के साथ, दृढ़ संकल्प के साथ। उसके पिता और उसके भाई, उसकी पत्नी, उसकी मां और उसका बच्चा सबके सब उसे एक नई प्रेरणा दे रहे थे। बचपन से लेकर आज तक उसे बहुत प्रेरणाएं मिली। पर आज.....आज उसे एक और ऐसी प्रेरणा मिली जिससे उसके जीवन को नई दिशा मिल गई।

वह बढ़ता जा रहा है अपने शिविर की ओर.....।

72, कैलाश पार्क-अर्थला, पोस्ट-मोहननगर 201207, गाजियाबाद

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- जल्द ही रेल यात्री रेलवे से जुड़ी समस्याओं के बारे में अपनी शिकायतें एसएमएस के जरिए दर्ज करा सकेंगे। इसके लिए देशभर में एक ही नंबर काम करेगा। देश के 16 रेलवे जोन हैं और फिलहाल इस समय शिकायत दर्ज कराने के लिए हर जोन का अलग-अलग नंबर है। यह नंबर रेलवे इन्क्वायरी नंबर 139 की ही तरह होगा। यह नंबर चालू हो जाने पर किसी भी रेलगाडी में सफर कर रहा यात्री खराब खाने, गंदे बिस्तर या ऐसी ही दूसरी समस्याओं के बारे में एसएमएस कर सकेगा।
- खेतों में फसलों की रक्षा के लिए छिड़के जाने वाले कीटनाशकों के चलते भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर के अस्तित्व पर भी संकट पैदा हो गया है। भारत में कुदरती सफाईकर्मी माने जाने वाले गिद्धों के खात्मे के लिए पशुओं को लगाए जाने वाले दर्द निवारक टीके को जिम्मेदार माना जा रहा है। टीके की दवा पशुओं की मांसपेशियों में जमा हो जाती है और उनके मरने पर जब गिद्ध उन्हें खाते हैं तो यह दवा गिद्धों के शरीर में भी पहुँच जाती है। इस दवा के चलते गिद्धों की शारीरिक प्रणाली धीरे-धीरे काम करना बंद कर देती है और वे अकाल मौत मारे जाते हैं।
- देश के कई गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को वर्ष 2005 से 2008 के दौरान विदेशों से 28000 करोड़ रुपए की राशि अनुदान रूप में मिली है। वर्ष 2006-2007 के दौरान 18,996 एनजीओ को 11,336.97 करोड़ रुपए की राशि दी गई, जबकि वर्ष 2007-2008 में 18,796 एनजीओ को 9,663.46 करोड़ रुपए का अनुदान मिला।
- एआईसीटीई के अधीन हालांकि देश में 8000 तकनीकी शिक्षण संस्थान हैं। इसके बावजूद देश के एक तिहाई जिले (241 जिले) ऐसे हैं, जहाँ एआईसीटीई से मान्यता प्राप्त एक भी तकनीकी शिक्षण संस्थान नहीं है।

जरूरी है अनासक्त चेतना का जागरण : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़, 6 जनवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने गोलछा ज्ञान मंदिर में आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते हुए गीता के संदर्भ में अनासक्त चेतना का जागरण विषय की व्याख्या करते हुए कहा बंधन से मुक्त होने के लिए आसक्ति को छोड़ना होगा। आसक्ति की प्रवृत्ति मनुष्य को बांध देती है। अज्ञानी आदमी प्रवृत्ति के साथ चिपक जाता है। बंधन मुक्ति का उपाय है आसक्ति को समाप्त करना।

उन्होंने कहा श्रीमद्भागवद गीता भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमें सही जीवन जीने का तरीका बताया गया है। आत्मा एक अविनाशी तत्व है। जैसे आदमी पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र पहनता है वैसे ही आत्मा देह परिवर्तन करती है तो फिर मृत्यु के पश्चात शोक कैसा! आत्मा सनातन तत्व है।

आचार्य महाश्रमण ने विषय पदार्थ रूपी विषय पर चर्चा करते हुए कहा विषयी पदार्थों का बार-बार ध्यान लगाने, चिंतन करने से कामना बढ़ती है जो पूर्ति होने से और अधिक बढ़ती है और पूर्ति नहीं होने पर क्रोध आता है। यही बंधन है। आदमी का मन ही बंधन व मुक्ति का कारण है। भाव विशुद्धि की आराधना करें। अनासक्ति की चेतना जीवन की अच्छी शैली है, इससे परम शक्ति प्राप्त होती है।

मुनि दिनेशकुमार ने कहा हर व्यक्ति के मन में अनन्त ज्ञान की सत्ता है। व्यक्ति के मन में यह चिंतन होना जरूरी है कि ज्ञान भीतर से मिलता है। साधना के द्वारा सिद्धि को भी प्राप्त किया जा सकता है। मुनि हिमांशुकुमार ने कहा व्यक्ति का जीवन अच्छा व शांतिमय कैसे हो इस पर चिंतन करना चाहिए। व्यक्ति के जीवन में धर्म-आध्यात्म का समावेश हो तो

वह अपनी जीवन रूपी समस्या को सुलझा सकता है।

वर्धमान महोत्सव के अवसर पर बड़ी संख्या में संत, साध्वी, मुमुक्षु, भाई-बहन सम्मिलित हुए। गोलछा ज्ञान मंदिर के प्रांगण में कड़कड़ाती ठंड में भी बड़ी संख्या में भाई-बहनों आचार्यश्री के सम्मुख इकट्ठे हुए। तारा दूगड़ ने आचार्यश्री का अभिवन्दन किया। संचालन भंवरलाल सिंघी ने किया।

परिवार के साथ कैसे जियें

8 जनवरी : आचार्य महाश्रमण ने परिवार के साथ कैसे जियें के संदर्भ में बोलते हुए कहा आज निजी स्वार्थों के कारण परिवारों में कटुता पैदा हो रही है। परिवार में एक दूसरे की रुचि का सम्मान करना चाहिए। गृहस्थ परिवार में अनेक तरह के सम्बन्ध होते हैं और सम्बन्धों की दुनिया होती है। मां-बाप, भाई-बहन, चाचा, मामा आदि एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। स्वार्थ एक ऐसा बाधक तत्व है जो परिवार में कटुता पैदा करता है। कोई परिवार का सदस्य यदि कुछ गलत कर भी दे तो उसे सहन करना चाहिए। उन्होंने एक सूत्र देते हुए कहा सहना चाहिए, कहना चाहिए और शांति से रहना चाहिए। केवल सहना ही नहीं, गलती को उचित मौके पर कहना भी चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा परिवार में एक-दूसरे के लिए अपना स्वार्थ त्याग करें। जीवन में दूरदर्शिता अपनायें। परिवार का भला हो तो व्यक्ति त्याग करे, गांव का भला हो तो परिवार त्याग करे, राष्ट्र का भला हो तो गांव त्याग करे और आत्मा का भला हो तो मनुष्य को पृथ्वी का भी त्याग कर देना चाहिए। व्यक्ति हित पर जहां स्वार्थ हावी हो जाता है वहां परिवार में टूटन की स्थिति पैदा हो सकती है। व्यक्ति अपने कर्तव्यों पर ध्यान दें तो पारिवारिक जीवन शांतिमय व्यतीत हो सकता है। सहन की

क्षमता न होने पर परिवार में विघटन पैदा हो सकता है। बच्चों को अच्छे संस्कार देकर संस्कारवान बनायें।

आचार्य महाश्रमण ने कहा परिवार साधु-साध्वियों का भी होता है पर सम्बन्ध गुरु-शिष्य या गुरु-भाई का ही होता है। शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करे। किसी के प्रति दुराग्रह ना हो। आग्रह की वृद्धि होती है तो बाधाएं आती हैं। पारिवारिक जीवन शांतिमय होना चाहिए। प्रारम्भ महिला मंडल द्वारा गीत के संगान से हुआ। संचालन पुष्पा बैंगानी ने किया।

समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने परिवार के साथ कैसे जियें विषय पर बोलते हुए कहा एक-दूसरे पर पूर्ण विश्वास रखें। मुनि धर्मचंद 'पियूष' ने आचार्य महाश्रमण के स्वागत में कहा आचार्य महाश्रमण में गणाधिपति तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ दोनों को ही देखा जा सकता है। मेवाड़ कान्फ्रेंस की ओर से बोलते हुए बसंतिलाल बावेल ने कहा परिवार की शांति व्यवस्था के लिए अहंकार का त्याग, संवेदनशीलता, सहनशीलता, विश्वास व पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति का त्याग आवश्यक है।

गोलछा ज्ञान मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में दूर-दूर से आए सैकड़ों भाई-बहनों के साथ स्थानीय विधायक राजकुमार रिणवां भी उपस्थित थे। संचालन भंवरलाल सिंघी ने किया।

रतनगढ़, 9 जनवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अपनी कृति "आओ हम जीना सीखें" के अंग्रेजी में प्रकाशित संस्करण का विमोचन करते हुए कहा आस्तिक विचारधारा के व्यक्ति आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं एवं कृत कर्मों के फल को स्वीकार कर सारा चिंतन करते हैं और नास्तिक विचारधारा

के व्यक्ति यह दुनिया इतनी ही है यह सोचकर इन्द्रियों का सुख भोगते हैं। वे आनन्द और सुख से जीयो यह मानते हुए आत्मा को नहीं मानते है। आज व्यक्ति को भौतिक विचारधारा नास्तिक बना रही है। व्यक्ति की विचारधारा कैसी भी हो आदमी को गलत कार्यों से बचना चाहिए। मनुष्य जीवन मिला है इसमें कोई भी गलत कार्य ना हो अच्छे कार्य हों। अणुव्रती बनें, जीवन में नैतिकता अपनाएं, इससे जीवन में कल्याण होगा।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा कभी-कभी व्यक्ति सोचता है अभी मैं मानव हूं, पहले क्या था, मैं कहां से आया, किस दिशा से आया यह ज्ञान नहीं। कई व्यक्तियों को पूर्व जन्म की स्वयं स्मृति हो जाती है ज्ञानी भी बता देते हैं। यह ज्ञान प्रेक्षाध्यान से हो सकता है। हमें अच्छा जीवन जीने की शैली आनी चाहिए। आदमी चाहे जो कुछ सीख ले, जीवन जीने की कला ना आये तो कमी रह जाती है। जैन वाङ्मय में पुरुष की 72 कलाओं का वर्णन है, यदि धर्म की कला नहीं है तो वह उसमें कमी है। हम चाहे जितनी डिग्रियां हासिल कर लें परन्तु जीवन जीने की कला आदमी को आनी ही चाहिए। उन्होंने समाज द्वारा चल रही ज्ञानशालाओं को संस्कार निर्माण की अद्भुत शाला बताते हुए आह्वान किया कि छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं को अच्छे संस्कार दें, उनकी नींव मजबूत करें। ज्ञानशालाओं के माध्यम से यह कार्य हो सकता है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा आज नैतिकता का अभाव है, देश के सामने संकट है। अच्छे समाज का निर्माण ही ऐसा प्रयास करें। उम्मीद आदमी का सबसे बड़ा सहारा होता है। पुस्तक विमोचन समारोह के प्रकाशक रणजीत दूगड़ ने "आओ हम जीना सीखें" पुस्तक

पर प्रकाश डाला। समारोह में सरदारशहर पर लिखित पुस्तक “आपणो सुरंगो सरदारशहर” का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन भंवरलाल सिंधी ने किया।

बन्धन मुक्ति अपने भीतर

10 जनवरी : बन्धन मुक्ति तुम्हारे अपने ही भीतर है। बन्धन व मुक्ति दोनों में हमारा भाव जिम्मेदार है, मानव जो प्रवृत्ति करता है उसमें मन प्रधान है। कार्य करने से पहले मन में भाव है और वह कार्य करता है। ये विचार आचार्य महाश्रमण ने गोलछा ज्ञान मंदिर प्रांगण में जनमेदिनी की संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा हमारे भाव शुद्ध होने पर मन पवित्र कार्य करता है। बन्धन मुक्ति की भावना मन में आने पर आदमी के मन में व्रत, संयम, त्याग की

अणुव्रत समिति की बैठक

रतनगढ़। साध्वी राजीमती के सान्निध्य में अणुव्रत समिति रतनगढ़ की ओर से एक महत्वपूर्ण बैठक गोलछा ज्ञान मंदिर में आयोजित हुई। अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता अणुव्रत समिति के अध्यक्ष वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी ने की। बैठक में मुख्य अतिथि विधायक राजकुमार रिणवां, विशिष्ट अतिथि पं. विष्णुदत्त शास्त्री, संतोष कुमार इंटोदिया थे। राजकुमार रिणवां ने इस मौके को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि प्रसन्नता का विषय यह है कि तैयारियां सुचारु रूप से चल रही हैं।

बाबूलाल गोलछा ने कहा अणुव्रत की पालना सभी धर्मों का सार है तथा यह एक अच्छा इंसान बनाने में अति सहायक है। पंडित विष्णुदत्त शास्त्री ने शहर की संस्कृति की सराहना की। समिति के अध्यक्ष बालकृष्ण गोस्वामी ने सभी से अणुव्रती बनने का अनुरोध किया। पूर्व पालिकाध्यक्ष इंटोदिया ने इस बात पर संतोष जाहिर किया कि सभी वर्ग इस कार्यक्रम को सफल बनाने में जुटे हैं।

भावना भी जाग्रत होती है। ‘व्रत चेतना का जागरण’ पर चर्चा करते हुए कहा कि व्यक्ति के मन में व्रत चेतना का जागरण होने पर ही वह धर्म के मार्ग पर चल सकता है।

इस अवसर पर मुनि ताराचन्द, मुनि सुमितिकुमार, मुनि आदित्यकुमार, साध्वी चन्दनबाला, साध्वी विनयश्री, साध्वी कैलाशवती ने आचार्य प्रवर के रतनगढ़ प्रवेश पर अपनी भावनायें गीतिका एवं भाषण के माध्यम से व्यक्त की। आचार्य प्रवर ने मुनि ताराचन्द, मुनि कमल कुमार एवं साध्वी राजीमती के प्रति आदर भाव प्रकट किया। रतनगढ़ स्थली में जन्मी साध्वी राजीमती ने अपनी जन्म स्थली की ओर से आचार्य प्रवर का स्वागत किया। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बुद्धमल दूगड़ ने आचार्य प्रवर का एक चित्र आचार्यश्री को समर्पित कर वितरित किया।

कार्यक्रम में भवानी शंकर, शंकरलाल शर्मा, ओमप्रकाश सारस्वत, रामेश्वर लाल सारस्वत, चंपालाल बोधरा, विनोद पासवान, रमेश बैद ने भी अपने विचार व्यक्त किये। बैठक में महावीर महर्षि, पार्षद अनिल पारीक, पार्षद उम्मेद सिंह, ताड़केश्वर पुरोहित, नारायण पीपलावा, त्रिलोक नभा, देवकिशन पुरोहित, निर्मल तातेड़, प्रभाकर गोलछा, विनीत भूतोड़िया, अरिहन्त उपस्थित थे। सभी से अपील की गयी कि आचार्य महाश्रमण की प्रस्तावित यात्रा को ऐतिहासिक एवं सुखद बनाया जाय।

इस अवसर पर सामाजिक जागरूकता फैलाने के लिए बिजली, पानी, पर्यावरण जैसे सामाजिक मुद्दों के स्टीकरों का वितरण किया गया एवं इन पर गहराई से चिंतन किया गया। उपस्थित महानुभावों से आह्वान किया गया कि आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर सफल बनाएं। संचालन पी.के. पांडिया ने किया।

अणुव्रत से आगरी व्यापार में शुचिता : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़, 12 जनवरी। सौभाग्य से ही किसी को साधना का पथ मिलता है। एक साधक, श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा व उत्साह के साथ घर से चलता है और साधना के पथ को स्वीकार करता है। इस श्रद्धा में कमी नहीं आनी चाहिए। मन में चंचलता है, विकार उत्पन्न हैं तो साधना में कमी रह जाती है। अनास्था का भाव साधक के मन में नहीं आना चाहिए। ये विचार आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय गोलछा ज्ञान मन्दिर के प्रांगण में आयोजित ‘अणुव्रत और व्यापारी सम्मेलन’ में व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा हमने निष्ठा और श्रद्धा का जो भाव स्वीकार किया हुआ है वह तो रहना ही चाहिए और यह भाव ज्यादा दृढ़ होना चाहिए। मौन, प्रवचन श्रवण व ध्यान भी एक साधना है और इनका भी एक अपना महत्व है। हर साधक को राग और द्वेष से मुक्त रहने का अभ्यास करना चाहिए।

अणुव्रत और व्यापार पर चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक रास्ता है यह सभी के लिए उपयोगी है। इसके द्वारा व्यापारी वर्ग में नैतिकता की प्रतिष्ठा हो सकती है। व्यापारियों को केवल पैसा कमाने के उद्देश्य से ही व्यापार नहीं करना चाहिए अपितु सेवा भावना, शुद्धता की भावना व नैतिकता से व्यापार करना चाहिये। दूसरों की भावना को समझकर ही व्यापार में शुचिता का समावेश हो सकता है।

उन्होंने कहा वर्ष 2010 घोटालों का वर्ष रहा है। आदमी के भीतर कितनी तृष्णा है? मनुष्य के भीतर दो वृत्तियां होती हैं काम की व क्रोध की जो उसे अधर्म के मार्ग पर ले जाती हैं। उद्योगों पर बोलते हुए कहा उद्योगपति मजदूरों का

शोषण नहीं करें और मजदूर भी पूरी ईमानदारी से कार्य करें। “कोई किसी का शोषण नहीं करे बल्कि पोषण करे।”

जीवों का एक-दूसरे के परस्पर सहयोग से ही कार्य चलता है। साधु-साधवियों का कार्य भी अग्रणीय संत व सहवर्ती संतों के परस्पर सहयोग से मधुर व पवित्र बना रहता है। अणुव्रत व्यापार सम्मेलन को मुनि सुखलाल व मुनि कमलकुमार ने भी सम्बोधित करते हुए कहा आज नैतिकता से जीवन जीने के लिए अणुव्रत की महती आवश्यकता है। रतनगढ़ अणुव्रत समिति के अध्यक्ष वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी ने कहा कि जिस धन से अनर्थ होता है वह धन व्यर्थ है। परमार्थ करने वाला धन ही सार्थक है। अणुव्रत मानवीय दुर्बलताओं को नष्ट करने का सशक्त मार्ग है। अणुव्रत हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने कहा कि प्रतिदिन पूजा करना, प्रवचन सुनना, रात को नहीं खाना, उपवास करना, आदि उपासना प्रधान धर्म में गहरी आस्था होने पर भी यदि प्रामाणिकता, नैतिकता आदि चरित्रमूलक धर्म का आचरण नहीं है, तो वह व्यक्ति अपने आप को धार्मिक कैसे मान सकता है? छाप से आये धन्नाराम प्रजापत ने भी अणुव्रत सम्मेलन में गीतिका सुनाई। कार्यक्रम में कन्यामंडल की ओर से मंगलाचरण किया गया। समारोह में रूपचन्द सेठिया द्वारा लिखित पुस्तक “साध्वी सिद्धित्री” का लोकार्पण आचार्य प्रवर द्वारा किया गया। आचार्यप्रवर ने साध्वीश्री के तपमय जीवन को अनुकरणीय बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद पांडिया ने किया।

सर्द हवाओं को चीरता अणुव्रत का उद्घोष

नई दिल्ली। अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री राकेशकुमार के सानिध्य में विद्या भारती स्कूल, सूर्यनगर में “विद्यार्थी जीवन में अणुव्रत की भूमिका” विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। अणुव्रत महासमिति द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में मुनिश्री ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि आचार्य तुलसी की प्रज्ञा का नवनीत “अणुव्रत” जीवन को सुन्दर ढंग से जीने की कला है। इसने समाज में ऐसी रचनात्मक चेतना का पथ प्रशस्त किया है जिससे समाज में आध्यात्मिक, नैतिक व चारित्रिक मूल्य प्रतिष्ठित रह सके। इन मूल्यों की स्थापना हेतु बुद्धि को दिमाग में, लज्जा को आंख में, हिम्मत को दिल एवं तंदुरुस्ती को पेट में रखने की तथा इन सभी से क्रमशः क्रोध, लालसा, भय व रोग को दूर रखने की प्रेरणा देते हुए विद्यार्थियों से व्यसन वर्जन का आह्वान किया। मुनिश्री ने आगे कहा आज पांच ‘पी’ बहुत प्रभावी है। प्लेजर, पोजीशन, प्रोसपेरिटी, पावर एव प्लेस, इसमें हमें छठा ‘पी’ प्योरिटी को और जोड़कर, जीवन सफल बनाना है यही अणुव्रत का उद्घोष है।

मुनिश्री सुधाकर ने विद्यार्थी ग्राह्य रोचक शैली में “परन्तु-किन्तु, अगर-मगर” ये चार शब्द एवं आलस्य त्यागकर अणुव्रतों द्वारा जीवन परिष्कार का ओजस्वी आह्वान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध कवि गजेन्द्र सोलंकी ने कहा कि पर्यावरण असंतुलन जैसे समस्याओं का समाधान अणुव्रत प्रस्तुत करता है। उनके द्वारा प्रस्तुत छन्द, कविता, सूक्तक व गीतों के सरस काव्यपाठ से पूरी परिषद तरंगित हो गई और जब गीत के बोल गुंजे “शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ” तो तालियों की गड़गड़ाहट के

साथ अणुव्रत का उद्घोष करके गूँज उठा। महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने अभिनंदन के स्वर प्रस्तुत किये। शिक्षामंत्री राज गुणेचा ने प्रयोग करवाये। डॉ. कुसुम लूनिया ने कुशल संचालन किया।

मुनि दीपकुमार ने विद्यार्थियों को प्रलोभनों से बचने का, विवेक जगाने की एवं संयममय जीवन जीने की प्रेरणा दी।

विद्या भारती स्कूल सूर्यनगर-गाजियाबाद के विद्यार्थियों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन विद्या भारती स्कूल के महामंत्री डॉ. धनपत लूनिया ने किया। भीकमचंद सुराणा, ओसवाल समाज अध्यक्ष विमलपत सुराणा सहित अनेक वरिष्ठ श्रावकों एवं सैकड़ों विद्यार्थियों की उपस्थिति से अणुव्रत कार्यशाला का प्रभावक आयोजन हुआ। इस अवसर पर लगभग 1500 विद्यार्थियों ने जीवन भर नशा नहीं करने तथा पर्यावरण रक्षा का संकल्प किया।

तनाव प्रबंधन संगोष्ठी

मुनि राकेशकुमार के सानिध्य में “प्रेक्षाध्यान से तनाव प्रबंधन” विषयक संगोष्ठी का आयोजन डॉ. धनपत लूनिया के निवास स्थान पर हुआ। शाहदरा सभा के तत्वाधान में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारम्भ विनोद कुचेरिया ने प्रेक्षागीत द्वारा मंगलाचरण के रूप में किया।

मुनि सुधाकर ने कहा कि आगम वाक्यानुसार अपने आपको जानने का माध्यम है प्रेक्षाध्यान। यह आत्मशोधन एवं आत्ममंथन की प्रक्रिया है। जिसका प्रथम तत्व है भावक्रिया, द्वितीय मित्त भोजन एवं तृतीय मित्त भाषण है। अतः तनाव प्रबंधन का प्रथम चरण भाव, वचन एवं भोजन को संयमित रखना होगा। सूर्यनगर ज्ञानशाला के

भूतपूर्व ज्ञानार्थी मुदित कुचेरिया ने गीत का संगान किया।

मुनि दीपकुमार ने कहा कि आज के युग की लाइलाज बीमारी तनाव के अनेकों कारण हैं जिसमें मुख्य है असीमित इच्छाएं। तनाव मुक्ति हेतु इच्छाओं का अल्पीकरण अति आवश्यक है।

प्रेरक उद्बोधन में मुनि राकेशकुमार ने कहा कि तनाव मुक्ति में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग काफी प्रभावी रहते हैं। अपने

विद्यार्थियों द्वारा व्यसनमुक्ति का संकल्प

राजलदेसर, 1 जनवरी। अणुव्रत समिति जोरावरपुरा के तत्वावधान में गांव जोरावरपुरा के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में नववर्ष 2011 के प्रथम दिन आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने विद्यालय एवं गांव को नशामुक्त होने पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा नववर्ष के प्रथम दिन विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संकल्प करके भारत के समस्त विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरणा संदेश दिया है।

मुनिश्री ने आगे कहा नशा व्यक्ति को हैवानियत की ओर ले जाने वाला है। नशे से परिवार और समाज में अशान्ति के साथ अर्थ और स्वास्थ्य के लिए अनिष्टकारक होता है। गांव का प्रत्येक व्यक्ति इससे मुक्त रहे तथा भविष्य में भावीपीढ़ी भी इससे मुक्त रहे। इस बात की पूरी तरह से जागरूकता बरती जाय। गांव में परस्पर प्रेम और सौहार्द का वातावरण रहे। किसी कारणवश विवाद होने पर गांव के मुखिया मिल-बैठकर सुलझाने का प्रयास करें। कोर्ट-कचहरी का सहारा न लें जिससे गांव में सुख-शांति व समृद्धि बनी रहे।

मुनि मोहजीतकुमार ने कहा

व्यक्तिगत प्रयोग निश्चित कर लेने चाहिए। चाहे महाप्राण ध्वनि हो या दीर्घ श्वास, प्रेक्षा या रंगों का ध्यान हो, ये नकारात्मक विचार तथा रागद्वेष की लहरों के पैदा होने में अवरोध लगाते हैं। अतः कम से कम दीर्घ श्वास की एक माला सभी फेरने का प्रयास करें। तनाव प्रबंधन के लिए प्रेक्षाध्यान में बेहद उपयोगी सूत्र है। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. कुसुम लूनिया ने किया।

विद्यार्थी विद्या ग्रहण करने के साथ विनम्र और सहनशील बने। विनम्र विद्यार्थी ही विद्या का विशेष विकास कर सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों को विद्याध्ययन के साथ एकाग्रता और स्थिरता के विशेष प्रयोग भी करवाए।

मुनि चैतन्यकुमार ‘अमन’ ने कहा नए वर्ष पर मंगल कामनाओं के साथ मंगल कार्यों को अंजाम दें, जिससे वर्ष के साथ जीवन मंगलमय बनेगा। विद्यार्थी जीवन में सुसंस्कारों एवं शिक्षा की समन्विति हो। भविष्य की निधि भावीपीढ़ी में अच्छे संस्कारों के जागरण से समाज और राष्ट्र का विकास संभव है। शिक्षक गण भी भारत की इस अमूल्य सम्पदा को, इस नई पौघ को संस्कारों का सिंचन देते रहें, जो कि निर्माण के लिए अति आवश्यक है।

नववर्ष पर आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत समिति जोरावरपुरा के संरक्षक हड़माना राम, विद्यालय प्रशासन के पुरोधे जेतसिंह, मंत्री रामदयाल, विघलय के प्राचार्य पोकरमल शर्मा ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए गांव एवं स्कूलों में चलने वाली गतिविधियों की जानकारी दी।

ध्यान साधना ही मोक्ष प्राप्ति का द्वार

उदयपुर। अणुव्रत समिति उदयपुर, विज्ञान समिति एवं सभा के संयुक्त तत्वावधान में अशोक नगर में मुनि शुभकरण के सान्निध्य में “ध्यान की एक वैज्ञानिक विद्या प्रेक्षाध्यान” विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। समिति के प्रचार मंत्री राजेन्द्र सेन ने कार्यक्रम की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

मुनि शुभकरण ने कहा ध्यान परमात्मा से साक्षात्कार है। मनुष्य जन्म की सार्थकता खुद को अनुभूत करने में है। हमें ध्यान के द्वारा ही ध्यान को पाना है ताकि शान्ति मिले।

मुख्य अतिथि प्रो. आई.वी. त्रिवेदी कुलपति मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर ने कहा ध्यान ही योग है। ध्यान के माध्यम से आत्मा-परमात्मा से मिलती है। आज के इस चुनौतीपूर्ण परिप्रेक्ष्य में ध्यान अपरिमित सुख और शान्ति के लिए शिक्षा का एक अनिवार्य अंग होना चाहिए।

विज्ञान समिति के कार्यकारी अध्यक्ष आर.के. चतुर ने स्वागत करते हुए विज्ञान समिति के क्रिया-कलापों की जानकारी दी। अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने सभी का स्वागत करते हुए प्रतिरोधात्मक शक्ति को विकसित करने की बात कही।

इस अवसर पर मुनि स्वास्तिक,

अहिंसा से नस्लवाद का समाधान संभव

फतेहपुर शेखावटी, 4 जनवरी। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों के अच्छे परिणाम आ रहे हैं। अहिंसा प्रशिक्षण से जुड़कर लोग अच्छे कार्य कर रहे हैं। अहिंसा से नस्लवाद का समाधान संभव है। ये विचार प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र फतेहपुर शेखावटी में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा पहले अध्यापक वर्ग को प्रशिक्षित किया जाए उसके बाद विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण दिया जाए।

दिल्ली से पदयात्रा करते हुए प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार, मुनि अजित

मुनि जम्बूकुमार, प्रो. एस.एल. गुप्ता, शांतिलाल सिंघवी ने विचार रखे। सभा के मंत्री राजकुमार फत्तावत ने साहित्य भेंट किया। धन्यवाद बी. एस. चावत ने किया।

● **उदयपुर, 1 जनवरी।** आई. जी. पुलिस टी.एल. मीणा की पदोन्नति होने पर उदयपुर सेवा समिति के सदस्यों एवं गणेश डागलिया ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके घर जाकर बधाई दी। टी. एल. मीणा अणुव्रत समिति से जुड़े हैं तथा आचार-व्यवहार से अणुव्रती हैं। समिति के सदस्यों ने उनके अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस पद पर आसीन होने पर आशा व्यक्त की कि आप इसी प्रकार आम लोगों की समस्याओं का निस्तारण एवं कानून व्यवस्था निस्वार्थपूर्वक करते रहेंगे।

टी.एल. मीणा ने अणुव्रत समिति के कार्यों की प्रशंसा करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर गणेश डागलिया, डॉ. निर्मल कुणावत, शेख शब्बीर के. मुस्तफा, मनमोहनराज सिंघवी, एच.एल. कुणावत, अशोक राठोड़, अरविन्द चित्तौड़ा, वैद्य शोभालाल औदित्य, भंवरलाल गौड़, सुनिल खोखावत, राधाकृष्ण व्यास, राकेश चित्तौड़ा, भवर भारती, कमल कुमावत उपस्थित थे।

कुमार, मुनि अमृतकुमार एवं मुनि अभिजीतकुमार फतेहपुर शेखावटी स्थित लीलावती राजजादा स्मृति भवन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र में पहुंचे। यहां पहुंचने पर तहसीलदार सज्जन सिंह शेखावत, माणकचंद सोनी, रामचन्द्र कुमावत, राजू खटेड़, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के प्रभारी सतीश शाण्डिल्य ने उनकी आगवानी करते हुए उक्त केन्द्र में चल रही गतिविधियों से अवगत करवाया। आभार ज्ञापन रामगोपाल शास्त्री ने किया। उपस्थित अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ ओवर ब्रिज

अहमदाबाद, 1 जनवरी। शाहीबाग स्थित सभा भवन के समीप बन रहे ओवरब्रिज का नाम “**आचार्य महाप्रज्ञ ओवर ब्रिज**” रखने का महत्वपूर्ण निर्णय गुजरात सरकार ने लिया है। करोड़ों रुपए के खर्च से निर्मित ब्रिज के नाम की घोषणा 31 दिसंबर 2010 को सरकार द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम में **गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी** ने हजारों भाई-बहनों की उपस्थिति में की।

घोषणा के समय मुख्यमंत्री ने

अपने भाषण में आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं अणुव्रत आंदोलन का भी विशेष रूप से उल्लेख किया। यह समूचे धर्मसंघ एवं अणुव्रत आंदोलन के लिए गौरव की बात है। संभवतः भारत में यह पहला अवसर है कि इतने बड़े सार्वजनिक ब्रिज का नाम किसी संघ के अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य के नाम पर है। यह खबर देते हुए मदनलाल कोठारी एवं गजेन्द्र भंडारी ने प्रसन्नता व्यक्त की। अणुव्रत परिवार द्वारा हार्दिक बधाई।

अणुविभा का 29वां स्थापना दिवस

राजसमंद। अणुविभा राजसमंद का 29वां स्थापना दिवस राजसमंद जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राकेश तैलंग की अध्यक्षता एवं पूर्व न्यायाधीश बसंतिलाल बाबेल के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। संचय जैन ने कहा आचार्य तुलसी का आशीर्वाद तथा मोहनभाई का स्वप्न व परिश्रम अणुविभा के रूप में हम फलित होते हुए देख रहे हैं। विगत 28 वर्ष की यात्रा में अहिंसा व शान्ति के व्यापक कार्य हेतु एक प्लेटफार्म बना है। आधारभूत कार्य हुआ है एवं दिशा का निर्धारण हुआ है। आगे की यात्रा के लिए हम सबकी सहभागिता स्नेह व समर्पण अणुविभा की आवश्यकता है। इस अवसर पर उन्होंने अणुविभा का सर्वांगीण बाल-विकास का दर्शन एवं ज्ञान विद्यालय तक जाये इस क्रम में एक विशिष्ट प्रायोजना ‘स्कूल विद ए डिफरेन्स’ प्रारंभ करने की बात कही। प्रकाश तातेड़ ने प्रायोजना का परिचय दिया। वर्तमान में कुछ चयनित विद्यालयों में इसे पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में प्रारंभ करने की विधिवत घोषणा जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राकेश तैलंग ने की। आगामी शैक्षिक सत्र से इस योजना को 50 विद्यालयों में लागू किया जाएगा।

सुरेश कावड़िया ने कहा अणुविभा का नाम यू.एन.ओ. में है।

मेरी आप सबसे प्रार्थना है कि कार्य को आगे बढ़ायें, हम सब इसमें सहभागी बनें। इससे जुड़ना हमारा गौरव बढ़ायेगा। इस अवसर पर नरेन्द्र ‘निर्मल’ प्रबंधक जे.के., गणपत डांगी महामंत्री तुलसी अमृत विद्यापीठ, समाज सेवी जीतमल कच्छारा, मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष बसंतिलाल बाबेल, डॉ. राकेश तैलंग ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में संस्थागत रूप से अणुविभा से जुड़ी तुलसी अमृत विद्यापीठ आमेत, श्रीदेवी उच्च प्राथमिक विद्यालय बरार, इंडियन पब्लिक स्कूल एमडी, भारती शिशु निकेतन रेलमगरा आदि संस्थाओं को सम्मानित किया गया।

व्यक्तिगत स्तर पर नरेन्द्र ‘निर्मल’, सुरेन्द्र सिंह पाल, प्रकाश तातेड़, चतुर कोठारी, मंजू दक, मनस्वी व्यास, बालमुकुन्द सनाढ़य का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में डूंगरसिंह कर्णावट, अशोक डूंगरवाल, देव शर्मा, प्रमोद सोनी, जगजीवन चौरड़िया, संगीता देव, बालकृष्ण ‘बालक’, शम्भूपुरी गोस्वामी, सागर कावड़िया, विमल जैन, डॉ. विमल कावड़िया, पुष्पा कर्णावट, राजकुमार कुंडलिया, साविर सुक्रिया की प्रमुख उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मदन धोका ने किया। आयोजना व्यवस्था बालोदय प्रबंध निदेशक विमल जैन व कार्यकर्ताओं द्वारा की गयी।

अणुव्रत के नियमों का पालन करें

कोलकाता, 1 जनवरी। अणुव्रत दो शब्दों अणु एवं व्रत से मिलकर बना है। अणु का अर्थ है छोटा तथा व्रत का अर्थ है नियम। व्रत का भारतीय संस्कृति में बहुत बड़ा महत्व है। अणुव्रती बनकर अगर जीवन में अणुव्रत नियमों की पालना करें तो हम समाज और राष्ट्र के निर्माण का सपना पूरा कर सकते हैं। समाज और राष्ट्र के निर्माण की रचना पूरी तरह से व्यक्ति निर्माण पर टिकी हुई है। व्यक्ति का चरित्र निर्माण अणुव्रत दर्शन का मूल आधार है। अणुव्रत मानवीय और आध्यात्मिक समत्व का दर्शन है। अणुव्रत संकल्प शक्ति को

मजबूत बनाता है। ये विचार अणुव्रत समिति खिदिरपुर के मंत्री शम्भूनाथ सिंह ने यहां आयोजित अणुव्रत गोष्ठी में व्यक्त किए।

उन्होंने आगे कहा अणुव्रत मानवता के उत्थान का एक असाम्प्रदायिक आंदोलन तथा चरित्र विकास का सशक्त अभियान है। उपस्थित सभी भाई-बहनों से निवेदन है कि हम सभी अणुव्रती बनें एवं जीवन में अणुव्रत के नियमों की पालना करने का संकल्प करें। साथ ही हर गांव में अणुव्रत समिति गठित कर अणुव्रत आंदोलन में तेजस्विता लायें।

अणुव्रत समिति द्वारा व्यसनमुक्ति अभियान

थाना-मुंबई, 10 जनवरी। अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा क्षेत्र में व्यसनमुक्ति अभियान की शुरुआत थाना क्षेत्र में साईनाथ नगर से की गयी। प्रारंभ कंचन सोनी व अनिता गेलड़ा द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ।

समिति के मंत्री विनोद कोठारी ने अणुव्रत आंदोलन की विस्तृत जानकारी देते हुए व्यसनमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर चैंबूर स्थित साई जलोष मंडल के साई पालकी यात्रा के करीब 250 पदयात्री उपस्थित थे। व्यसनों के दुष्प्रभावों से संबंधित प्रदर्शनी का सभी लोगों ने अवलोकन किया।

इस अवसर पर जोशी बेडेकर कॉलेज के प्रो. सुनील ने उपस्थित जनमेदिनी को मराठी भाषा में सभी व्यसनों से दूर रहने हेतु सचेत किया।

व्यवित्तव विकास कार्यक्रम

जयपुर, 5 जनवरी। अणुव्रत समिति जयपुर के तत्वावधान में माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर में विद्यार्थियों हेतु व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम रखा गया। मुख्य वक्ता एलवीएस कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य तथा अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने विद्यार्थियों को बड़े ही सहज ढंग से व्यक्तित्व विकास की जानकारी दी। अणुव्रत समिति जयपुर की अध्यक्ष

इस्माइल युसुफ कॉलेज जोगेश्वरी के छात्रों ने व्यसनपीड़ित युवकों की दुर्दशा पर आधारित आकर्षक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। साई जलोष मंडल के सभी पदयात्रियों को अणुव्रत समिति की ओर से "अणुव्रतों का यह संदेश - व्यसनमुक्त हो सारा देश" स्लोगन युक्त टी-शर्ट वितरित की गयीं। उक्त टी-शर्ट पहनकर ये पदयात्री 10 दिनों तक चलने वाली यात्रा में गांव-गांव जाकर प्रचार करेंगे।

कार्यक्रम में अणुव्रत उपसमिति थाना के मनोहर कच्छारा, रमेश सोनी, खुशबू चौरडिया, दीपा लोढ़ा की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम की आयोजना में रमेश धोका का सराहनीय श्रम रहा। संयोजन विनोद कोठारी ने किया।

आशा नीलू टॉक तथा बच्चों का देश की संपादक कल्पना जैन ने विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण सूत्र दिए। समिति की मंत्री पुष्पा बांठिया ने आभार ज्ञापित किया। संयोजन विद्यालय की शिक्षिका तथा अणुव्रत समिति की सहमंत्री रांका सिद्धा ने किया। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने कार्यक्रम की आयोजना हेतु आभार व्यक्त किया।

आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक एवं कैरी बैग वितरण

नई दिल्ली, 3 जनवरी। महिला मंडल दिल्ली की ओर से पंजाबी बाग क्लब में समायोजित लायंस क्लब दिल्ली अंतरिक्ष एवं लायंस क्लब नई दिल्ली जागृति के चार्टर प्रजेन्टेशन समारोह में आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक "परिवार के साथ कैसे रहें" एवं "बेटी बचाओ कैरी बैग" का उपस्थित जनों को वितरण किया गया। महिला मंडल की ओर से 50 पुस्तकें कन्या बचाओ कैरी बैग के साथ वितरित की गयी। समारोह लायंस क्लब नई दिल्ली अलकनंदा द्वारा समायोजित था। इसमें लायंस क्लब जनपद 321 ए-1 के जनपदपाल एस.के. मधोक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। पूर्व जनपदपाल वी.एस. कुकरेजा, तेजपाल सिंह खिल्लन, जी न्यूज के टैक्स डॉक्टर रामनिवास लखोटिया, सीएनबीसी आवाज के

टैक्स गुरु सुभाष लखोटिया, रीजन चेयरमैन राकेश कुमार, एड्युकोम सोल्यूशन लि. की मुख्य वित्तीय अधिकारी संगीता गुलाटी, प्राइस वाटर हाउस में कार्यरत सी.ए. एकता सेठ, लायंस क्लब नई दिल्ली अलकनंदा के चार्टर अध्यक्ष के.डी. बाहेती, चार्टर सचिव आनन्द माहेश्वरी, अंतरिक्ष व जागृति क्लब के अध्यक्ष आर.के. अग्रवाल एवं सेठी, चार्टर सदस्य एवं लायंस जनपद के कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में जोन चेयरमैन सुनिल कुमार अग्रवाल, अरुणा सुराणा एवं भाजपा नेता विजय जौली भी विशेष रूप से उपस्थित थे। संचालन टैक्स गुरु सुभाष लखोटिया ने किया। कार्यक्रम की संयोजना में भारती कांठेड़ एवं अरुणा डूंगरवाल का सराहनीय श्रम रहा।

भाव परिवर्तन का प्रभावी आयाम

बाढ़-बिहार, 10 जनवरी। अणुव्रती संस्कारों के जागरण का आधार पारिवारिक सौहार्द और नशामुक्ति है। अणुव्रत आंदोलन भाव परिवर्तन का प्रभावी आयाम है। हिंसाग्रस्त क्षेत्र में इसके माध्यम से सुखद परिणाम आ रहे हैं। अणुव्रत आंदोलन का मुख्य कार्यक्रम नशामुक्ति अभियान के पक्ष में काम करना गांव, गरीब और भारत-माता की सेवा करना है। अणुव्रत चिंतन परिष्कार का यज्ञ है। इसकी प्रायोगिक पृष्ठभूमि जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं अहिंसा प्रशिक्षण है। अणुव्रत आंदोलन से जुड़ना युग की जरूरत है। ये विचार शिशुरोग डॉ. अंजेश कुमार ने टीबर गांव के प्राथमिक विद्यालय में आयोजित नशामुक्ति एवं पारिवारिक सौहार्द शिविर का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद

के प्रदेश मंत्री हेमन्तकुमार ने नशामुक्ति के स्थायी समाधान पर प्रकाश डाला। संसद के जिला संयोजक राजेश राजू ने इस अभियान के लिए गांव-गांव में पैदल यात्रा करने का संकल्प लिया। छात्र संसद के बिहार- झारखंड संयोजक राणा शत्रुघ्न सिंह ने नशामुक्ति के लिए अणुव्रत समिति को सक्रिय बनाने की जरूरत बतलायी। युवा खिलाड़ी संतलाल ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र बाढ़ के प्रभारी प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' ने इस जनपद से एक वर्ष में एक लाख लोगों को नशामुक्ति के संकल्प करवाने की बात कही। चंदन कुमार, कर्मवीर पासवान अनिल पासवान, आर.पी. निराला ने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य रामनरेश शर्मा ने की। इस अवसर पर 370 लोगों ने आजीवन नशामुक्ति रहने का संकल्प लिया।

अणुव्रत मानव मात्र के लिए कल्याणकारी

नई दिल्ली, 15 जनवरी। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यकर्ताओं की एक विशेष परिचर्चा राजस्थान के राज्यपाल शिवराज पाटिल के साथ कपूरथला हाऊस में हुई। महामहिम शिवराज पाटिल ने कहा अणुव्रत का संदेश मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। अणुव्रत जीवन जीने की कला है। अगर व्यक्ति अणुव्रत आचार संहिता के नियमों का पालन करता है तो वह अपने विकास के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति में सहयोगी बनता है। ऐसा मैं विश्वास से कह सकता हूँ। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष रह चुके शिवराज पाटिल ने आगे कहा मुझे आचार्य तुलसी से बहुत प्रेरणा व आशीर्वाद मिला। जब मैं सबसे पहले गंगाशहर में मिला तब से उनके प्रति श्रद्धा दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। उनके द्वारा चलाया गया अणुव्रत आंदोलन नैतिक व चारित्रिक मूल्यों के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ है। अणुव्रत का संदेश “निज पर शासन फिर अनुशासन” हर व्यक्ति को अपने जीवन में उतारना चाहिए। अणुव्रत पाक्षिक के अंक को देख उन्होंने भावविभोर होते हुए

कहा अणुव्रत पत्रिका नैतिक संस्कारों की श्रेष्ठ पत्रिका है। मुनिश्री के दर्शन कर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

मुनि राकेशकुमार ने कहा केवल भौतिक विकास से कोई भी राष्ट्र सफल और खुशहाल नहीं हो सकता। अणुव्रत आंदोलन स्वयं पर नियंत्रण करने की बात करता है। अणुव्रत के आदर्श स्वस्थ व उन्नत राष्ट्र के लिए बीज मंत्र की तरह है। अणुव्रत का अनुसरण वर्तमान में अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य प्रतीत होता है। मुनिश्री ने आचार्य महाश्रमण की पदयात्रा एवं आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव की भी जानकारी राज्यपाल महोदय को दी।

मुनि सुधाकर ने कहा देश के नैतिक एवं चारित्रिक विकास को ऊपर उठाने के लिए अहिंसक शक्तियों को अधिक तेजस्वी बनाना जरूरी है। इस अवसर पर मांगीलाल सेठिया, ख्यालीलाल तातेड़, के.के. जैन, हैमराज बैद, नरपत मालू, अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा, कोषाध्यक्ष रतन सुराणा, पवन बैंगानी, पवन बरडिया, छत्तर सिंह बाठिया, आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कमलेश चतुर्वेदी का निधन

दिल्ली, 15 जनवरी। आदर्श साहित्य संघ के आधारभूत कार्यकर्ता, अणुव्रत पाक्षिक, केन्द्रीय विज्ञापित के पूर्व संपादक एवं आदर्श साहित्य संघ के व्यवस्थापक कमलेश चतुर्वेदी का 14 जनवरी 2011 को रतनगढ़ (राजस्थान) में देहान्त हो गया। श्री चतुर्वेदी ने आदर्श साहित्य संघ के संस्थापक स्व. श्री जयचंदलाल दफ्तरी, स्व. श्री देवेन्द्र कर्णावट, स्व. श्री हणूतमल सुराणा एवं स्व. मोतीलाल एच. रांका के साथ वर्षों तक सहायक के रूप में काम कर स्वयं को एक साहित्यकार के रूप में निखारा। आदर्श साहित्य संघ के वर्तमान स्वरूप को निखारने एवं गति देने में उनका महत्वपूर्ण श्रम रहा।

श्री चतुर्वेदी विगत चार दशकों से आदर्श साहित्य संघ को अपनी सेवाएं दे रहे थे। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ की राष्ट्रव्यापी पदयात्राओं में श्री चतुर्वेदी साथ रहे और उन यात्राओं के समाचार विवरण को अपनी लेखनी से हजारों-हजार पाठकों तक पहुंचाया। वे अत्यन्त प्रतिभाशाली एवं शांत स्वभावी थे। हिन्दी भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ थी। उन्होंने युवादृष्टि का भी वर्षों तक संपादन किया। वे एक चिर परिचित पत्रकार, लेखक एवं साहित्यकार थे।

अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

नोखा में जीवन विज्ञान कार्यक्रम

नोखा, 22 दिसंबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने जीवन विज्ञान अकादमी नोखा का अवलोकन किया। आचार्यश्री ने यहां आयोजित संगोष्ठी में प्रधानाचार्य एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक पक्ष का समान विकास होना चाहिए। उसके बाद ही व्यक्ति, समाज और देश का सही विकास हो सकेगा। उन्होंने बताया कि स्वहित के लिए बुद्धि का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

आचार्यश्री ने प्रसंगवश बताया कि एक बार एक व्यक्ति गाड़ी से अकेले जा रहा था। शहर से बाहर निकलने पर कच्ची सड़क शुरू होती थी, जिस पर काफी कीचड़ था, गाड़ी कीचड़ में फंस गई। पास ही एक व्यक्ति नजर आया तो मदद के लिए गुहार लगाई। सामने वाला व्यक्ति बोला गाड़ी निकालने के एक सौ रुपये लूंगा। गाड़ी वाला

बोला ठीक है गाड़ी निकालने के बाद पैसा देते समय उसने पूछा इस तरह रात-दिन मदद करके तो तुमको बहुत आमदनी होती होगी। इस पर मदद करने वाले ने बताया रात तो कीचड़ पैदा करने में गुजर जाती है। कमाई तो सिर्फ दिन में ही होती है। आचार्यश्री के संबोधन के बाद संस्था संरक्षक घेवरचंद बैद व अध्यक्ष यश बैद द्वारा प्रधानाचार्यों का साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया।

मंच संचालन करते हुए इंद्रचंद बैद ‘कवि’ ने नोखा में चल रहे जीवन विज्ञान पर प्रकाश डालते हुए क्षेत्र में चलाए जा रहे मानवीय व समाज उत्थान के कार्यों को लाभदायक बताया। अणुव्रत समिति एवं जीवन विज्ञान शिक्षक हिरालाल श्रीमाली एवं भीखमचंद नखत ने जीवन विज्ञान अकादमी नोखा की सराहना की एवं बच्चों में नैतिक विकास हेतु प्रयासों को श्रेयस्कर बताया।

प्रादेशिक सेना रैली में अणुव्रत की चर्चा

पाली। सेना के प्रति नागरिकों में जागरूकता लाने के लिए दक्षिण पश्चिम कमान के अंतर्गत आने वाली प्रादेशिक सेना की ओर से 61वें प्रादेशिक सेना दिवस पर आयोजित प्रादेशिक सेना रैली एम्युनेशन कंपनी कानासर बीकानेर से रवाना होकर नोखा, नागौर, खेड़ापा, जोधपुर होते हुए गुरुवार शाम को पाली पहुंची। पाली से साण्डेराव, जालोर, रामसीन, सिरोही होते हुए आवूरोड़ में सम्पन्न हुई। रैली में उपस्थित सदस्यों ने स्थानीय दुर्गादास नगर के बालड़ भवन में साध्वी चांदकुमारी के दर्शन किये। रैली में सभागी लेफ्टिनेंट शैलेशकुमार ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा सेना में भर्ती होने के बाद मुझे आज प्रथम बार संतों के चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला है। हवलदार प्रेमराम नायक ने सेना की

दिनचर्या का जिक्र किया। प्रारंभिक परिचय के बाद साध्वीश्री ने अणुव्रत और जीवन विज्ञान की चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण की बीकानेर यात्रा की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया अणुव्रत आचार संहिता मानव जीवन का सुरक्षा कवच है। युद्ध में शारीरिक सुरक्षा के लिए आप लोग कवच पहनते हैं, वैसे ही बुराइयों के आक्रमण से बचने के लिए आचार्य तुलसी ने मानव मात्र के लिए अणुव्रत का रक्षा कवच दिया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने मानवीय चेतना जगाने के लिए प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। इन प्रयोगों के अभ्यास से व्यक्ति का आरामपूर्वक व्यसनमुक्त जीवन जीया जा सकता है। उपस्थित सैनिकों में काफी व्यसनमुक्त थे और जो नहीं थे उन्होंने भविष्य में व्यसनमुक्त रहने की बात कही।

नैतिकता व चरित्र के बिना शिक्षा अधूरी

शाहपुरा। अणुव्रत आंदोलन नैतिकता, सच्चरित्र और मानवता के निर्माण का आंदोलन है। इसे अपनाकर हर कोई सुखमय, शांतिमय और पवित्र जीवन जी सकता है। इसके लिए अणुव्रत आचार संहिता को आत्मसात करना जरूरी है। तनाव व अशांति का एक मात्र उपाय है आत्मसंयम। ये विचार समण सिद्धप्रज्ञ ने सर्वशिक्षा अभियान के तहत संकुल केन्द्र पर आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण शिविर के संभागियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा नैतिकता

और चरित्र के बिना शिक्षा और स्वतंत्रता भी अधूरी है। आज भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों का भी हास हो रहा है। ऐसे में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत महासमिति तथा उसके संगठनों की ओर से देश भर में विविध कार्यक्रम आयोजित कर समाज के हर वर्ग को अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से समाधान का रास्ता दिखाया जा रहा है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से शरीर व मन स्वस्थ होता है। प्रेक्षाध्यान से राग-द्वेष को भी कम करके समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

जीवन शैली में बढ़ता नशा देश के लिए घातक

शेरपुर। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के तत्वावधान में ग्राम पंचायत एवं नगर निवासियों के सहयोग से नशामुक्ति सेमिनार का आयोजन किया गया। उद्घाटन करते हुए अहिंसा प्रशिक्षक संजय भाई ने कहा जीवन शैली में बढ़ता नशा देश के लिए घातक है। शेरपुर क्षेत्र में सघन रूप से गांव एवं विद्यालय में नशे की रोकथाम हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। उन्होंने संभागियों को नशामुक्ति के प्रयोग करवाए एवं जीवन में नशा नहीं करने का संकल्प कराया। कार्यक्रम में संत बाबा निर्मल सिंह, सरपंच गुरमीत सिंह, मैडम शमशेर कौर, प्रशिक्षण केन्द्र महम्मदपुर के समन्वयक जसवीर सिंह शिरा एवं रोजगार प्रशिक्षिका शारदा प्रवीण ने विचार रखे। आभार व्यक्त सरकारी हाई स्कूल महम्मदपुर के मुख्य अध्यापक चमकौर सिंह ने किया।

● महम्मदपुर में 23वां रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन एवं 48वां महिलाओं द्वारा निर्मित वस्तुओं का प्रदर्शनी के साथ ग्रामश्री सेल मेला का आयोजन रविदास धर्मशाला में किया गया। संजय भाई ने संस्था के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। 23वां बैंच का उद्घाटन करते हुए शेरपुर थाना प्रभारी रणवीर सिंह ने महिलाओं को अधिक से अधिक

रोजगार प्रशिक्षण लेकर जीवन-स्तर ऊंचा उठाने की प्रेरणा दी।

मेले का उद्घाटन करते हुए स्टेट बैंक ऑफ पटियाला, कानरो ब्रांच के शाखा प्रबंधक लक्ष्मी नारायण स्वामी ने आह्वान किया कि ग्राम निर्मित वस्तुओं को खरीदने में गांव के लोगों को रुचि लेनी चाहिए, ताकि इन महिलाओं को रोजगार मिल सके और इन्हें आर्थिकोपार्जन कर अपनी स्थिति को सुधार सकें।

● अहिंसा रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र धनौरीकला में फीता सिखलाई प्राप्त कर रही महिलाओं को बौद्धिक कक्षा के दौरान संजय भाई ने कहा महिलाएं न तो पहले कमजोर थीं न आज हैं। जिन महिलाओं ने अपने अंदर की शक्ति को पहचान वे आगे बढ़ रही हैं। इस छमाही फीता सिखलाई के माध्यम से आपको अपने कौशल बढ़ाने एवं दक्षता प्राप्त करने का अवसर मिला है। सिर्फ प्रमाण-पत्र लेने के लिए ही न सीखें, बल्कि इस कला में दक्षता प्राप्त कर स्वरोजगार शुरू कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारें, ताकि बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़े। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर में प्रशिक्षण प्राप्त कर अनेकों महिलाएं समाज में उदाहरण की पात्र बनी हैं। आज ये प्रतिमाह 5000 रु. प्राप्त कर रही हैं।

अणुव्रत परीक्षाएं सम्पन्न

गंगापुर, 4 जनवरी। अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा संचालित अणुव्रत विज्ञ एवं अणुव्रत विशारद परीक्षाएं स्थानीय एवं क्षेत्रीय विद्यालयों में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र मैलोनी के प्रशिक्षक जगदीश बैरवा के प्रयास एवं सम्पर्क से सम्पन्न करवायी गयी। अणुव्रत समिति गंगापुर के संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने

जानकारी देते हुए बताया कि राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगापुर, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय विनायक विद्यापीठ, बालिका कुण्डचौक, वार्ड नं. 1, 2, रा.मा.वि. जूनावास, आदर्श विद्या मंदिर, रा. उ.प्रा. विद्यालय सराय, मैलोनी आदि विद्यालयों के 1400 छात्र-छात्राओं ने इन परीक्षाओं में भाग लिया।

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी को साहित्य सम्मान



संस्था के सचिव नरेश दाधीच ने अपने वक्तव्य में कहा कि डॉ. रत्नेश की साहित्यिक सेवाओं का फलक बहुत विस्तीर्ण है। एक कहानीकार के रूप में आपकी ख्याति है। आपने ख्याति के अनुसार मानसी, दो गज जमीन, अन्तर्व्यथा, विडम्बना, भाग्यचक्र, बदलते रिश्ते, परदेशिया, जेलर, परित्यक्ता, हादसा आदि कहानियों का सृजन कर कहानी विधा को समृद्ध किया है। आपकी कहानियां आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर प्रसारित हो चुकी हैं। ऐसे वरिष्ठ साहित्यकार को सम्मानित करते हुए प्रवाह संस्था गौरव की अनुभूति कर रही है।

लाडनूं। वरिष्ठ साहित्यकार, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय निदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश' को अपनी अप्रतिम साहित्यिक सेवाओं के लिए प्रवाह साहित्यिक संस्थान, भीलवाड़ा द्वारा साहित्य समारोह में 25 दिसम्बर 2010 को सम्मानित किया गया। सम्मान के रूप में उन्हें शॉल, श्रीफल एवं सम्मान-पत्र भेंट किया गया। संस्था के अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार ने इस अवसर पर डॉ. त्रिपाठी का परिचय देते हुए कहा हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्वान डॉ. त्रिपाठी ने कहानी, निबन्ध, नाटक आदि के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इनके चार कहानी संग्रह, दो काव्य कहानी संग्रह, 2 नाटक इत्यादि लगभग चालीस पुस्तकें साहित्य जगत की शोभा बढ़ा रही है। दार्शनिक के रूप में इन्होंने दर्शन के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी चलायी है।

पूर्व में डॉ. त्रिपाठी को अपनी साहित्यिक सेवाओं के लिए भवानीलाल गुप्ता, कहानी पुरस्कार, सोहनलाल द्विवेदी पुरस्कार, भीमराव अम्बेडकर साहित्य पुरस्कार, शकुन्तला सिरोटिया बाल साहित्य पुरस्कार, महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार, हिन्दी सहस्त्राब्दी सम्मान, अणुव्रत शिक्षक संसद पुरस्कार, राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। डॉ. त्रिपाठी के सम्मान पर अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक बधाई।

सार्थक जीवन की राह दिखाती कृति

प्रत्येक साहित्य की रचना शब्दों से होती है और शब्द वह है जिसका कुछ अर्थ हो। अर्थ के अभाव में शब्द अपना महत्त्व खो देते हैं। सार्थक शब्द और सार्थक अर्थ किसी भी कृति को मूल्यवान बना देते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ 21वीं सदी के ऐसे सशक्त हस्ताक्षर रहे जिनके साहित्य का कोई सानी नहीं है। उनके मस्तिष्क से निर्गत शब्द मानों ब्रह्म रूप में अपनी महत्ता व्यक्त करते हैं। 'शब्दैव ब्रह्म' की मान्यता ऐसे ही महान साहित्यकारों के शब्दों से ही सिद्ध होती है।

प्रस्तुत कृति 'जो सहता है वही रहता है' अपने सार्थक शब्दों एवं भावप्रधान अर्थों के कारण जहां अपनी उपयोगिता सिद्ध करती है वहीं इसे महाप्रज्ञ की 300वीं कृति का जो सम्मान मिला है उसके कारण भी यह कृति महिमा मंडित है। युवा मुनि जयंतकुमार ने अपनी अद्वितीय मेधा से जो संपादन इस कृति की प्रस्तुति में प्रदर्शित किया है वह न केवल प्रशंसनीय है अपितु अनुकरणीय भी है।

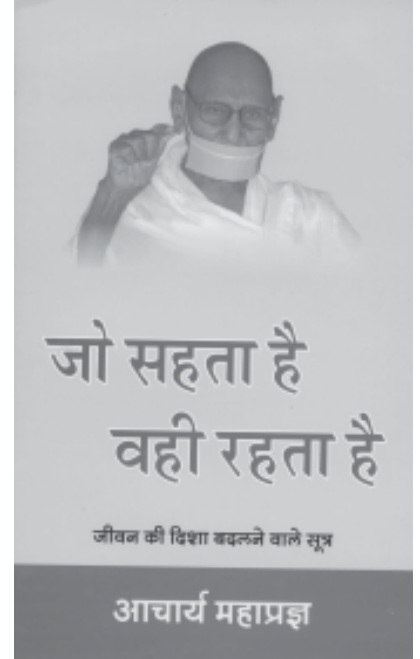
प्रस्तुत समीक्ष्य कृति मूलतः सात अध्यायों में विभक्त है। शीर्षक नाम के प्रथम अध्याय में लेखक ने इस सच्चाई को बखूबी अभिव्यक्त किया है कि सहने वाला भीरू नहीं होता। कायरों में सहन शक्ति का सर्वथा अभाव होता है। सहने वाला शक्तिशाली होता है। सहन करने वाला कभी भी परिस्थितियों का दास नहीं होता, अपितु वह परिस्थितियों को अपने अनुरूप ढाल लेता है। सहनशील ही संवेदनशील भी होता है। जिस व्यक्ति में संवेदना का स्रोत सूख जाता है वह कभी सहनशील नहीं हो सकता। द्वितीय अध्याय में लेखक ने परिवर्तन की सच्चाई को उजागर किया है। लेखक के अनुसार बदलाव जीवन का सत्य है। सब कुछ बदलता रहता है अतः परिवर्तन के हेतु एवं परिस्थिति को समझकर सदैव चरैवेति-चरैवेति का चिंतन रखना चाहिए। तृतीय अध्याय में समता की दृष्टि की मार्मिक व्याख्या की गयी है। सह-अस्तित्व को यहां अत्यन्त महत्व दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय व्यक्तित्व के विविध

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

रूप में अभय को व्यक्तित्व का महान गुण माना गया है। गुप्ति की साधना से अभय का विकास होता है इस सच्चाई को यहां उकेरा गया है। पंचम अध्याय में अपना आलम्बन स्वयं बने इस सत्य को प्रतिपादित करते हुए शोषण की भयावह समस्या को प्रकट कर शोषणविहीन समाज के महत्व को प्रस्तुत किया गया है। षष्ठम अध्याय प्रकृति एवं विकृति में स्वस्थ जीवन की शैली पर अधिक बल दिया गया है। अंतिम अध्याय दिशा और दशा के नाम से है। लेखक का मानना है कि दिशा के बदलने से दशा में भी परिवर्तन होता है। दिशा के बदलने से ही सारी स्थितियां बदल जाती हैं, आचरण एवं व्यवहार भी बदल जाता है।

उपर्युक्त सात अध्यायों में लेखक ने जीवन मूल्यों के दृष्टान्त के साथ समझाने की अप्रतिम कोशिश की है। प्रत्येक मूल्य की प्रस्तुति के साथ दृष्टान्तों को उकेरना और दृष्टान्तों के माध्यम से मूल्यों को व्यक्ति के अन्तर्हृदय में उतार देना ही कृति की सफलता का द्योतक है। इस कृति की प्रस्तुति बहुत ही अनूठी है। यह अनूठापन संपादन दक्षता को प्रदर्शित करता है। संपादक ने इसकी प्रस्तुति में अपने दिमाग का काफी उपयोग किया है। प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में विषय का भान सूत्र वाक्य के माध्यम से करा देना और फिर विषय वस्तु को विस्तार से प्रस्तुत करना तथा स्वर्णिम सूत्र में अध्याय को समेट देना और अध्याय के विषय को प्रयोग के धरातल पर 'करके देखें' शीर्षक से प्रस्तुत करना, अध्याय का सार-संक्षेप 'अध्याय करता है' के अंतर्गत उकेरना यह संपादक मुनि जयन्तकुमार की तीक्ष्णमेधा का ही कमाल है। एक कहावत है कि 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' का उपयोग यहां स्वस्थ रूप में हुआ है। एक विषय वस्तु को कई तरीके से प्रस्तुत करके पाठक के गले में उतार देना इस कृति की महत्वपूर्ण खूबी है। आचार्य महाप्रज्ञ का मानना था कि जब



कृति	: जो सहता है वही रहता है
लेखक	: आचार्य महाप्रज्ञ
संपादक	: मुनि जयन्तकुमार
पृष्ठ	: 182, मूल्य : 150 रु.
प्रकाशक	: जैन विश्व भारती, लाडनू (राज.)

कथ्य को प्रयोग के धरातल पर उतार दिया जाता है तो वह कथ्य हृदयग्राही हो जाता है। संभवतः संपादक मुनि जयन्तकुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ की कृति की प्रस्तुति में उनकी इसी भावना का विशेष ध्यान रखा है।

प्रत्येक अध्याय के विषय के अनुरूप आचार्य महाप्रज्ञ की भावभंगिमा की प्रस्तुति भी पाठक को विषय का स्वतः बोध करा देती है। आवरण पृष्ठ की भावभंगिमा की प्रस्तुति भी पाठक को विषय का स्वतः बोध करा देती है। आवरण पृष्ठ की भावभंगिमा मानों सम्पूर्णता की अभिव्यक्ति है। कहा जा सकता है कि सार्थक जीवन जीने की राह दिखाने वाली यह कृति पाठकों को न केवल आकृष्ट करेगी अपितु उन्हें अपने जीवन की दिशा बदलने में उपयोगी सिद्ध होगी।

**निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैविभा विश्वविद्यालय, लाडनू (राज.)**